राजभाषा आलोक 2013

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

कृषि भवन, नई दिल्ली–110001

प्रस्तावना

हिंदी भारतीय संघ की राजभाषा है। शासकीय कार्यों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए राजभाषा अधिनियम 1963 बनाया गया जिसके द्वारा कुछ निर्दिष्ट कागजातों के लिए हिंदी व अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं का प्रयोग अनिवार्य किया गया है जिनकी विस्तृत व्याख्या राजभाषा अधिनियम 1963 3(3) में की गई है। इन कागजातों में संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक व अन्य रिपोर्टें, प्रेस विज्ञप्ति, संसद के किसी सदन या दोनों सदनों के समक्ष रखी जाने वाली प्रशासनिक या अन्य रिपोर्टें, सरकारी कागजात, संविदा, करार, अनुज्ञप्तियां, अनुज्ञा–पत्र, निविदा सूचना, और निविदा–प्रारूप आते हैं जिन्हे द्विभाषिक रूप में (अंग्रेजी और हिंदी दोनों में) जारी किया जाना चाहिए। इसके अनुपालन की जिम्मेदारी इन कागजातों पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी की होती है। इसके अतिरिक्त राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रत्येक वर्ष एक वार्षिक कार्यक्रम जारी किया जाता है जिसमें केंद्र सरकार के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित कार्यालयों के लिए हिंदी क्रियान्वयन का लक्ष्य निर्धारित किया जाता है। वार्षिक कार्यक्रम को अपने–अपने विभागों में लागू करने का दायित्व विभाग के प्रमुख का होता है। अतः संस्थान/केंद्र की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में सभी विभाग प्रमुखों द्वारा वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों को प्राप्त करने के उपायों की अवश्य चर्चा की जानी चाहिए। संविधान की भावना के अनुरूप हिंदी कार्यान्वयन प्रत्येक सरकारी कार्मिक का दायित्व है तथा इस कार्य में सभी का पूर्ण सहयोग अपेक्षित है। संघ की राजभाषा नीति का आधार प्रेरणा और प्रोत्साहन है। इससे स्पष्ट है कि हिंदी में कामकाज को बढ़ाना सभी का संवैधानिक दायित्व है। केंद्र सरकार के सभी कार्मिकों को सरकारी कार्यों में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करना चाहिए ताकि राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।

राजभाषा आलोक के इस अंक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न संस्थानों में किए गए राजभाषा संबंधित क्रियाकलापों को संकलित किया गया है जिससे परिषद में राजभाषा संबंधी कार्यों की एक समेकित झलक देखने को मिलती है। आशा है कि जो संस्थान/केंद्र अपनी गतिविधियों को अब तक इसमें संकलित करने के लिए नहीं भेज रहे हैं वे भविष्य में अपने संस्थानों के राजभाषा संबंधित क्रियाकलापों को भेजेंगे ताकि उन्हें भी आगामी अंकों में शामिल किया जा सके। इस अंक में संसदीय राजभाषा समिति द्वारा तैयार नौवें खंड की सिफारिशों को भी समाहित किया गया है ताकि उन सिफारिशों पर भी उपयुक्त कार्रवाई की जा सके।

अरविंद कौशल
सचिव

राजभाषा आलोक

वार्षिकांकः 2013

संरक्षक

डा. एस. अय्यप्पन
महानिदेशक, भा.कृ.अ.प.

अध्यक्ष

अरविंद कौशल
सचिव, भा.कृ.अ.प.

परामर्श

डॉ0 रामेश्वर सिंह
परियोजना निदेशक
(डीकेएमए)

संपादन

हरीश चन्द्र जोशी
निदेशक (रा.भा.)
बी. एस. पर्सवाल
(वरि. तकनीकी अधिकारी)

सहयोग

हरिओम सैनी
निजी सचिव

क.सं0	विवरण
प्रस्तावना	
	संसदीय राजभाषा समिति के नौवें खण्ड की सिफारिशें
परिषद मुख्यालय सहित संस्थानों/केन्द्रों की राजभाषा संबंधी गतिविधियां	
1.	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद मुख्यालय, नई दिल्ली
2.	भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली सहित क्षेत्रीय केन्द्र
3.	केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुम्बई
4.	भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर
5.	गन्ना प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर
6.	केंद्रीय कंद फसल अनुसंधान संस्थान, तिरूवनंतपुरम
7.	विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोड़ा
8.	राष्ट्रीय आर्किड अनुसंधान केन्द्र, गंगटोक
9.	भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ
10.	चावल अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद
11.	भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी
12.	राष्ट्रीय मिथुन अनुसंधान केन्द्र, झरनापानी
13.	केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल
14.	केन्द्रीय तम्बाकू अनुसंधान संस्थान, राजमुन्द्री
15.	राष्ट्रीय कृषि आर्थिकी एवं नीति अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली
16.	भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर
17.	पशु रोग संविक्षण एवं निगरानी परियोजना निदेशालय, बेंगलुरू
18.	केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर
19.	खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर
20.	भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान, कालिकट
21.	ज्वार अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद
22.	तिलहन अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद
23.	केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर
24.	केंद्रीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर
25.	राष्ट्रीय पटसन एवं समवर्गी रेशा प्रौद्योगिकी संस्थान, कोलकाता
26.	गोपशु परियोजना निदेशालय, मेरठ
27.	भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली
28.	केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन
29.	औषधीय एवं सगंधीय पादप अनुसंधान निदेशालय, आनन्द
30.	राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर
31.	राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, लखनऊ
32.	राष्ट्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान केन्द्र, झांसी
33.	गेहूं अनुसंधान निदेशालय, करनाल
34.	भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान, रांची
35.	भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बंगलुरू
36.	राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र, अजमेर
37.	केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गी रेशा अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर
38.	केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर
39.	शीतजल मात्स्यिकी अनुसंधान निदेशालय, भीमताल
40.	केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला सहित क्षेत्रीय केन्द्र
41.	कुक्कुट परियोजना निदेशालय, हैदराबाद
42.	सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर
43.	काजू अनुसंधान निदेशालय, पुत्तूर
44.	केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर
45.	केन्द्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक
46.	केन्द्रीय मृदा एवं जल संरक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र
47.	राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, नागपुर के क्षेत्रीय केन्द्र
48.	उत्तर पूर्वी पर्वतीय क्षेत्रों के लिए भा.कृ.अनु.प. का मणिपुर केन्द्र, इम्फाल
49.	राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, क्षेत्रीय केन्द्र, नैनीताल
50.	कृषि अनुसंधान संस्थानों में राजभाषा कार्यान्वयन – एक चुनौतीपूर्ण कार्य
51.	बड़े काम की हिंदी – संवार दे कैरियर
52.	भारतीय प्राकृतिक रॉल एवं गोंद संस्थान, रांची
53.	वर्ष 2014–15 का वार्षिक कार्यक्रम

संसदीय राजभाषा समिति के नौवें खण्ड की मुख्य सिफारिशें

1. समिति का यह अनुभव है कि सामूहिक विवेक से तैयार की गई संस्तुतियों पर राजभाषा विभाग में गहराई से विचार–विमर्श नहीं किया जाता है। इसलिए समिति की सिफारिशों पर कारगर आदेश जारी नहीं हो पाते जिससे अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं होते हैं। अतः समिति का यह सुझाव है कि समिति द्वारा की गई संस्तुतियों पर आदेश जारी करने से पहले राजभाषा विभाग समिति के साथ विचार–विमर्श कर ले। तत्पश्चात, राजभाषा विभाग द्वारा आदेश जारी किए जाने के बाद राजभाषा विभाग केन्द्र सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों में उन आदेशों का समयबद्ध रूप से कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए कार्रवाई करे।

2. समिति के प्रतिवेदन के पिछले आठ खंडों में अस्वीकृत संस्तुतियां अथवा संशोधन के साथ स्वीकृत संस्तुतियों की समीक्षा की जाए तथा समिति की संस्तुतियों के अनुरूप उपयुक्त आदेश जारी किए जाएं।

(क्रम संख्याः 1–2 का संदर्भः भाग–1 अध्याय–2)

3. समिति के प्रतिवेदन के आठवें खंड में जिन मंत्रालयों/विभागों में 25 प्रतिशत से अधिक अधिकारी कर्मचारी हिंदी में अप्रशिक्षित पाए गए थे उनकी स्थिति में अब निश्चित रूप से सुधार हुआ है परन्तु जिन मंत्रालयों/विभागों में जहां उस समय प्रशिक्षण कार्य पूरा हो चुका था अब हिंदी में अप्रशिक्षित अधिकारियों/कर्मचारियों की संख्या में वृद्धि हो गई है। इसे समिति ने गंभीरता से लेते हुए सिफारिश की है कि ये मंत्रालय/विभाग प्रशिक्षण कार्य की ओर विशेष ध्यान दें और प्रशिक्षण कार्य को शीघ्रतिशीघ्र पूरा करवाएं ताकि प्रशिक्षण कार्य एक वर्ष में पूरा हो सके। समिति यह सिफारिश करती है कि यदि नए भर्ती होने वाले कार्मिकों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त नहीं है तो भर्ती के तुरंत बाद ही सरकार को उन्हें प्रशिक्षण के लिए भेजना चाहिए।

4. समिति यह सिफारिश करती है कि राजभाषा विभाग अपने निरीक्षण तंत्र को और मजबूत करे तथा इस ओर विशेष ध्यान दे कि हिंदी में मूल पत्राचार का प्रतिशत किसी भी मंत्रालय/विभाग में घटने न पाए बल्कि इसमें वृद्धि ही हो।

5. समिति ने पाया कि 11 मंत्रालयों/विभागों में कम्प्यूटरों पर 50 प्रतिशत से अधिक काम हिंदी में हो रहा है। विदेश मंत्रालय तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय में तो कार्य 20 प्रतिशत से भी कम है। अतः समिति यह सिफारिश करती है कि सभी मंत्रालयों/विभागों में कम्प्यूटरों पर अविलम्ब द्विभाषी सुविधा उपलब्ध कराई जाए और कम्प्यूटरों पर काम करने वालों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाए ताकि वे हिंदी में भी कार्य कर सकें।

6. समिति के देखने में यह भी आया है कि कतिपय विभाग/मंत्रालय आदि हिंदी प्रशिक्षण कार्यशालाओं के लिए बुलाए जाने वाले अतिथि वक्ताओं को अन्य विषयों के वक्ताओं की तुलना में कम मानदेय देते हैं। हिंदी अतिथि वक्ताओं को भी अन्य विषयों के वक्ताओं के समान ही मानदेय दिया जाना चाहिए।

7. सचिव (राजभाषा विभाग) राजभाषा नियम, 1976 का नियम 5 के उल्लंघन की स्थिति को संबंधित मंत्रालयों/विभागों के सचिवों के साथ उठायें।

8. सचिव (राजभाषा विभाग) धारा 3(3) के उल्लंघन की स्थिति को संबंधित मंत्रालयों/विभागों के सचिवों के साथ उठाएं।

(क्रम संख्याः 3–8 का संदर्भः भाग–2 अध्याय–5)

9. हिंदी जानने वाले कार्मिकों को सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग के लिए प्रशिक्षण देने पर बल दिया जाए। इसके लिए डेस्क प्रशिक्षण भी कारगर साबित हो सकता है। 'क' एवं 'ख' क्षेत्रों में विशेष रूप से इस प्रयास को तेज किया जाए। 'ग' क्षेत्र में समयबद्ध कार्यक्रम बना कर सर्वप्रथम कार्मिकों को हिंदी शिक्षण के लिए भेजा जाना चाहिए।

10. कम्प्यूटर पर हिंदी में काम करने के संबंध में राजभाषा विभाग एक कार्यक्रम तैयार कर हिंदी शिक्षण योजना के सहयोग से प्रशिक्षण देने की व्यवस्था करें।

11. प्रत्येक कार्यालय के वरिष्ठतम अधिकारी को यह जिम्मेदारी सौंपी जाए कि कार्यालय द्वारा पत्राचार के लक्ष्य को निश्चित रूप से प्राप्त करने के लिए वे प्रत्येक माह के अंतिम सप्ताह में किसी एक दिन सभी अधीनस्थ अधिकारियों द्वारा हिंदी में किए गए कार्य की समीक्षा करें और आगामी माह के लिए हिंदी में कार्य करने हेतु लक्ष्य निर्धारित करें अर्थात उन्हें क्या–क्या काम हिंदी में करने हैं इस संबंध में निर्देश दें।

12. समिति यह भी संस्तुति करती है कि विभिन्न कार्यालयों में राजभाषा संबंधी रिक्त पडे हुए पदों को अविलम्ब भरा जाए।

13. प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण सामग्री को द्विभाषी रूप में उपलब्ध करवाने के संबंध में व्यापक कार्रवाई करने की आवश्यकता है।

14. प्रत्येक कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समितियां अपने कार्यान्वयन में सुधार लाएं और सभी बैठकों में उपर्युक्त सभी मदों की समीक्षा करते हुए कमियों को दूर किया जाए।

15. सभी संवर्गो के अधिकारियों और कर्मचारियों की गोपनीय रिपोर्ट में दो कॉलम जोड़े जाएंः–

क) अधिकारी/कर्मचारी द्वारा हिंदी में कार्य करने हेतु क्या लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

ख) अधिकारी/कर्मचारी उस लक्ष्य को प्राप्त करने में कहां तक सफल हुआ, इस बारे में उच्चाधिकारी अपनी टिप्पणी दें।

16 समिति यह संस्तुति करती है कि निरीक्षण कार्य के लिए एक प्रोफार्मा तैयार किया जाए और जब भी कोई अधिकारी (वरिष्ठतम अधिकारी सहित) अपने किसी अधीनस्थ कार्यालय में निरीक्षण या दौरे पर जाए तो उससे उक्त प्रोफार्मा को अनिवार्य रूप से भरवाया जाए और राजभाषा का निरीक्षण अवश्य करवाया जाए। यह सुनिश्चित किया जाए कि प्रत्येक कार्यालय का वर्ष में कम से कम एक राजभाषा संबंधी निरीक्षण अवश्य

हो चाहे किसी भी स्तर पर हो। यह निरीक्षण मंत्रालय, मुख्यालय या राजभाषा विभाग द्वारा किया जा सकता है।

17. मॉनिटरिंग के इसी क्रम में प्रत्येक कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक अवश्य सुनिश्चित की जाए और बैठक के दौरान कार्यालय के विभिन्न अनुभागों में हो ही राजभाषा संबंधी प्रगति पर नजर रखी जाए।

(क्रम संख्याः 9–17 का संदर्भ भाग–2 अध्याय–7)

18. सभी मंत्रालय/मुख्यालय यह सुनिश्चित करें कि उनके नियंत्रणाधीन सभी छोटे बड़े कार्यालय, बैंक, उपक्रम, संस्थान, अधिकरण आदि अपने–अपने नगरों की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य बन गए हैं।

19. राजभाषा विभाग केन्द्रीय कार्यालयों में हिंदी की प्रगामी प्रगति के लिए बनाए गए निरीक्षण प्रोफार्मा तथा तिमाही प्रगति रिपोर्ट प्रोफार्मा में निम्नलिखित मुद्दे भी समाहित करें :–

क. क्या आपके नगर में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति गठित है ?

ख. क्या आपका कार्यालय इसका सदस्य है ?

ग. यदि हां, तो पिछली बैठक (तारीख...................) में भाग लेने वाले अधिकारी का नाम व पदनाम

घ. यदि सदस्य नहीं हैं तो अब तक सदस्यता क्यों नहीं ग्रहण की गई ?

20. परस्पर समन्वय की भावना होनी चाहिए और इसके लिए यदि अध्यक्ष कार्यालय में हिंदी अधिकारी का पद नहीं है तो ऐसी स्थिति में नगर के किसी दूसरे कार्यालय से किसी सक्षम, अनुभवी हिंदी अधिकारी को समिति का सदस्य सचिव बनाया जा सकता है। किसी अन्य अधिकारी जो हिंदी अधिकारी नहीं है उसे यह दायित्व नहीं सौंपा जाना चाहिए। नराकास की गतिविधियों को अनवरत रखने के लिए राजभाषा अधिकारी को ही नराकास के सदस्य सचिव का दायित्व सौंपा जाना चाहिए।

21. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों के आयोजन में व्यय होने वाली राशि के संबंध में समिति द्वारा आठवें खण्ड में की गई सिफारिश को अविलंब लागू किया जाए। साथ ही, आयोजन हेतु प्रदान की जाने वाली इस राशि में प्रतिवर्ष 15% की वृद्धि की जाए।

22. सभी केन्द्रीय कार्यालयों में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु कम से कम एक हिंदी पद अवश्य सृजित किया जाए। राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु न्यूनतम हिंदी पद सृजन की इस अवधारणा को तत्काल लागू किया जाए।

23. एक वर्ष से अधिक समय तक रिक्त पड़े हुए हिंदी के पदों को समाप्त नहीं किया जाए।

24. परस्पर विचारों के आदान–प्रदान हेतु राजभाषा विभाग द्वारा क्षेत्र क, ख तथा ग में प्रतिवर्ष सचिव, राजभाषा विभाग के साथ नराकास अध्यक्षों एवं सदस्य सचिवों की एक समागम बैठक आयोजित की जाए।

25. राजभाषा विभाग को नराकास की बैठकों के आयोजन, उनमें कार्यालयाध्यक्षों की सहभागिता, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों से अधिकारियों की इन बैठकों में उपस्थिति आदि की सूचना क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों से उपलब्ध कराकर नराकासों की मॉनीटरिंग व्यवस्था को सुदृढ किया जाए ताकि इन समितियों के गठन का उद्‌देश्य पूरा हो सके।

26. जैसे–जैसे पूरे देश में इन नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की संख्या बढ़ रही है उसी अनुपात में क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों की संख्या व उनके पदों की संख्या बढाई जाए।

(क्रम संख्याः 18–26 का संदर्भः भाग–3 अध्याय–8)

27. समिति का मानना है कि एक ऐसा मानक फोन्ट विकसित किया जाए जिसका प्रयोग देश–विदेश में आसानी से किया जा सके तथा इसे अनिवार्य रूप से सभी सॉफ्टवेयरों में लोड किया जाए। इसके साथ ही हिंदी के मानक की–बोर्ड का चयन कर इसे अनिवार्य रूप से सभी सॉफ्टवेयरों में लोड किया जाए।

28. समिति का मत है कि एन.आई.सी. द्वारा वेबसाइट से संबंधित उसी सामग्री/आंकड़ों को ही वेबसाइट पर डालने के लिए स्वीकृत किया जाए जिसे द्विभाषी रूप में उन्हें उपलब्ध कराया जाए।

29. सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा भारत सरकार के सभी मंत्रालयों में सीडेक द्वारा विकसित सॉफ्टवेयरों की उपलब्धता के संबंध में एक जागरूकता अभियान चलाया जाए जो इनकी जानकारी आगे अपने अधीनस्थ और संबद्ध कार्यालयों को दें। इसमें सॉफ्टवेयर पैकेजों की मुख्य विशेषताओं, उसकी उपयुक्तता और उनके मूल्यों की पूरी जानकारी होनी चाहिए।

30. सॉफ्टवेयर पैकेज की विभिन्न विशेषताओं और उसकी उपयोगिता के संबंध में उपभोक्ताओं को अच्छा प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। प्रत्येक उपभोक्ता को इस प्रकार प्रशिक्षण देना सम्भव नहीं है अतः सॉफ्टवेयर विकास करने वाले अर्थात सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय या सीडेक सभी मंत्रालयों/विभागों के प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्याक्रम चलाने पर विचार कर सकता है ताकि ये प्रशिक्षक अपने अधीनस्थ कार्यालयों/विभागों के उपभोक्ताओं तक यह कौशल पहुंचा सकें।

31. सभी सॉफ्टवेयर विकासकों (सीडेक और अन्य) के लिए सुझाव है कि उपभोक्ताओं से पुनर्निवेशन प्रतिपुष्टि की एक प्रक्रिया शुरू करें और इसके आधार पर इनकी आवश्यकतानुसार अपने उत्पाद में बदलाव लाएं तथा अभावों को यदि कोई हो दूर कर सकें।

32. सभी हिंदी अधिकारियों के लिए एक वर्ष के अन्दर विशेष कार्यशालाएं लगाई जाएं। उन्हें हिंदी संबंधित कार्य और यूनीकोड का अभ्यास करवाया जाए। उन्हें एक प्रमाण पत्र दिया जाए तथा प्रशिक्षण के बाद उनकी गोपनीय रिपोर्ट में प्रविष्टि की जाए। उपरोक्त विषयों पर विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के अलावा राजभाषा विभाग द्वारा केन्द्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा के अधिकारियों के लिए प्रयोगात्मक कक्षाएं ली जाएं, तत्पश्चात अन्य हिंदी अधिकारियों को भी यही प्रशिक्षण दिया जाए।

(क्रम संख्याः 27–32 का संदर्भः भाग–3 अध्याय–9)

33. मानव संसाधन मंत्रालय को हिंदी भाषा का पठन अनिवार्य बनाए जाने के लिए सार्थक प्रयास करने की आवश्यकता है। प्रथम प्रयास के रूप में देश में केन्द्रीय उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अंतर्गत आने वाले सभी विद्यालयों तथा केन्द्रीय विद्यालयों में दसवीं कक्षा तक हिंदी को अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाए।

34. उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उच्च शिक्षण संस्थाओं तथा विश्वविद्यालयों में स्वायतता के लिए केन्द्रीय सरकार तथा राज्य सरकारों ने संसद तथा विधान सभाओं में कुछ कानून बनाए हैं जिसके अंतर्गत कुछ विश्वविद्यालयों तथा उच्च शिक्षण संस्थाओं में केवल अंग्रेजी में ही शिक्षण प्राप्त किया जा सकता है। इस संबंध में राष्ट्रीय स्तर पर एक समान सिद्धांत होने चाहिए। सभी विश्वविद्यालयों/उच्च शिक्षण संस्थानों में हिंदी शिक्षण लागू करने के लिए मानव संसाधन मंत्रालय कार्य योजना बनाए और एक समान कानून लागू करने के लिए प्रक्रिया शुरू करे तथा कानून बनाकर संसद के पटल पर रखे।

35. जिन विश्वविद्यालयों तथा उच्च शिक्षण संस्थानों में हिंदी विभाग नहीं है, मानव संसाधन मंत्रालय को उनका पता लगाकर वहां हिंदी विभाग खोलने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि यह विभाग हिंदी माध्यम से शिक्षा देने के लिए सहायता दे सके।

36. जिन हिंदीत्तर राज्यों में स्थित विश्वविद्यालयों तथा उच्च शिक्षण संस्थानों की परीक्षाओं/साक्षात्कारों में परीक्षार्थियों को हिंदी में उत्तर देने का विकल्प नहीं है उनमें परीक्षार्थियों को हिंदी में उत्तर देने का विकल्प प्रदान किया जाए।

37. हिंदीत्तर राज्यों में स्थित स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं को दिया जाने वाला अनुदान नाम मात्र का है। मानव संसाधन मंत्रालय इसे बढ़ाने के लिए ठोस कार्रवाई करे।

38. हिंदी में पाठ्य सामग्री तथा पाठ्य पुस्तकों को संबंधित विषयों के ऐसे विशेषज्ञ प्रोफेसरों, जिन्हें हिंदी का भी ज्ञान हो, से ही तैयार करवाया जाए तथा उन्हें ही हिंदी पाठ्य सामग्री तथा पाठ्य पुस्तकों को सही रूप में उपलब्ध कराने के लिए उत्तरदायी बनाया जाए जिससे किसी प्रकार की त्रुटि रहने की संभावना न हो।

39. स्कूली स्तर, स्नातक स्तर तथा विशेषकर स्नातकोत्तर स्तर पर विद्यार्थियों के लिए हिंदी की पाठ्य सामग्री अंग्रेजी के मुकाबले काफी कम मात्रा में उपलब्ध है। यदि शिक्षण–प्रशिक्षण सामग्री सरल हिंदी में भी उपलब्ध करा दी जाए तो हिंदी माध्यम से शिक्षा प्राप्त छात्रों को निश्चय ही लाभ मिलेगा तथा वे अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा पाने वाले छात्रों के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकेंगे।

40. ज्ञान–विज्ञान के मौलिक ग्रंथों को सरल हिंदी में लिखा जाए।

41. तकनीकी विषयों मे लेखन के लिए हिंदी लेखकों तथा अनुवादकों का चयन किया जाए तथा विदेशी छात्रों को हिंदी पढाने के लिए विश्वविद्यालयों का चयन किया जाए।

42. विभिन्न निरीक्षणों मौखिक साक्ष्यों तथा विचार–विमर्श कार्यक्रमों के दौरान समिति ने महसूस किया है कि हिंदी के कठिन शब्दों के व्यवहारिक प्रयोग में कठिनाई आ रही है। अतः हिंदी की पाठ्य–सामग्रियों शब्दावलियों आदि की भाषा को आसानी से समझने एवं व्यवहारिक प्रयोग के लिए हिंदी के कठिन शब्दों के स्थान पर अंग्रेजी शब्दों का यथावत हिंदी में प्रयोग किया जाए।

43. विभिन्न वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दों के भिन्न–भिन्न हिंदी पर्याय प्रयोग में लाए जा रहे हैं जिससे राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में काफी दिक्कतें आ रही हैं। अतः इसके लिए शीघ्र मानक शब्दावलियों का निर्माण किया जाना चाहिए, जिससे अंग्रेजी के विभिन्न वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दों के हिंदी पर्यायों में एकरूपता आ सके तथा जटिल वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों को भी सरलता से हिंदी में प्रस्तुत किया जा सके।

44. शिक्षण संस्थाओं में हिंदी शिक्षण का न्यूनतम स्तर निर्धारित किया जाए।

45. केन्द्र सरकार में नौकरियों की भर्ती के लिए प्रश्न पत्रों में हिंदी का विकल्प सुनिश्चित किया जाए।

46. सरकारी नौकरियों के लिए हिंदी ज्ञान का न्यूनतम स्तर निर्धारित किया जाए।

47. स्कूलों में दसवीं कक्षा तक हिंदी शिक्षण को अनिवार्य बनाने के लिए एक प्रस्ताव संसद में प्रस्तुत किया जाए।

48. समिति पुनः संस्तुति करती है कि किसी भी स्थिति में कम से कम 50% धन हिंदी विज्ञापनों पर तथा शेष 50% क्षेत्रीय भाषाओं तथा अंग्रेजी पर खर्च किया जाए।

49. जहां तक संभव हो हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं में ही विज्ञापन जारी किए जाएं।

50. जहां विज्ञापन द्विभाषी रूप में जारी करने आवश्यक हों वहां उन्हें डिग्लॉट रूप में दिया जाए।

51. लागत को समान रखने के लिए हिंदी के विज्ञापन बड़े आकार में तथा मुख्य पृष्ठ पर दिए जाएं जबकि अंग्रेजी के विज्ञापन छोटे आकार में अंतिम पृष्ठ या बीच के पृष्ठ पर दिए जा सकते हैं।

52. समिति का मत है कि वैज्ञानिक/अनुसंधान एवं शोध संस्थानों द्वारा एक बड़ी राशि पुस्तकों की खरीद पर खर्च की जाती है। यदि यह छूट जारी रही तो पुस्तकालय के बजट के अधिकांश राशि जर्नल और संदर्भ साहित्य की खरीद पर ही व्यय होती रहेगी और हिंदी की पुस्तकों की खरीद पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा और उनके लिये लक्ष्य प्राप्ति करना मुश्किल होगा। अतः इस संबंध में स्पष्ट आदेश जारी किए जाएं कि किसी भी स्थिति में पुस्तकों पर होने वाली कुल राशि का 50% हिंदी की पुस्तकों पर खर्च किया जाए। समिति का सुझाव है कि जिन कार्यालयों में पुस्तकालय अनुदान का कोई बजट आबंटन न हो तो वहां कुल कार्यालयीन व्यय (Office Expenses) का न्यूनतम एक प्रतिशत हिंदी पुस्तकों पर खर्च किया जाए। यहां यह भी ध्यान रखना है कि पचास प्रतिशत या एक प्रतिशत के सन्दर्भ में जो भी राशि अधिक हो वह हिंदी पुस्तकों की खरीद पर खर्च की जाएगी।

53. मौलिक पुस्तक लेखन योजना को और अधिक आकर्षक बनाया जाए और पुरस्कार राशि में वृद्धि की जाए।

54. सरकारी सेवा में ऐसे कई अधिकारी एवं कर्मचारी हैं जो अपनी नौकरी के साथ–साथ रचनात्मक कार्य से भी जुड़े हैं और हिंदी साहित्य की अभिवृद्धि में अपना बहुमूल्य योगदान दे रहे हैं। समिति का सुझाव है कि ऐसे प्रतिभाशाली कार्मिकों को विशेष प्रोत्साहन या पदोन्नति दी जाए।

55. अंग्रेजी की अच्छी और उपयोगी पुस्तकों के उत्तम अनुवाद को भी प्रोत्साहित किया जाए और इस संबंध में भी योजना तैयार की जाए। इसे ''उत्कृष्ट अनुवाद योजना'' का नाम दिया जा सकता है।

56. समिति यह संस्तुति करती है कि सभी मंत्रालय/विभागों/कार्यालयों आदि में वेलफेयर क्लब्स के माध्यम से पुस्तक क्लब गठित किए जाएं।

57. समिति का मत है कि एयर इंडिया अपनी समय सारणी द्विभाषी रूप में छपवाएं ताकि नियमों की अवहेलना न हो।

58. समिति यह संस्तुति करती है कि स्वागत पत्रिका को पुनः एक ही जिल्द में द्विभाषी छपवाया जाए।

59. समिति यह सिफारिश करती है कि राजभाषा विभाग संबंधित मंत्रालय/विभाग के परामर्श से गोपनीय रिपोर्ट के फार्म में एक अलग कॉलम ''हिंदी में लेख आदि लिखने की क्षमता'' जुड़वाने पर विचार करें।

60. समिति का मत है कि क्षेत्र के आधार पर गृह पत्रिकाओं को हिंदी और संबंधित क्षेत्र विशेष की भाषा में छापा जाए ताकि क्षेत्रीय भाषा में लेखन क्षमता रखने वाले कर्मचारियों को भी अवसर और प्रोत्साहन मिले।

61. रेल मंत्रालय द्वारा भविष्य में केवल ऐसे इलेक्ट्रानिक यंत्र/उपकरण ही खरीदे जाएं और प्रयोग में लाए जाएं जिन पर देवनागरी में भी कार्य करने की सुविधा हो। जो टेलिप्रिंटर/टेलेक्स, कंप्यूटर, शब्द संसाधक आदि केवल रोमन के हैं, उन पर अविलम्ब देवनागरी में कार्य करने की सुविधा सुलभ कराई जानी चाहिए।

62. नए सृजित हिंदी पदों तथा खाली पड़े हिंदी पदों को तत्काल भरा जाए।

63. हिंदी कंप्यूटिंग फाउंडेशन नामक संस्थान केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों विशेषकर रेलवे विभाग में हिंदी को अधिकाधिक प्रयोग सुनिश्चित करने हेतु अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी भाषा का ज्ञान देने, कंप्यूटर पर हिंदी सिखाने तथा हिंदी साफ्टवेयर विकसित करने के संबंध में प्रशंसनीय कार्य कर रहा है। इस संस्थान को रेल मंत्रालय की ओर से वित्तीय सहायता उपलब्ध कराकर सशक्त बनाया जाना चाहिए ताकि स्व विकसित प्रौद्योगिकी के सदुपयोग से रेल मंत्रालय की बाहरी संसाधनों (Out Sourcing) पर निर्भरता समाप्त की जा सके।

64. रेलवे बोर्ड तथा देश भर में स्थित उसके अधीनस्थ विभिन्न कार्यालयों में कंप्यूटरों में उपयोग में लाए जा रहे हिंदी साफ्टवेयरों का मानकीकरण किया जाना चाहिए।

65. पूरे देश में विशेषकर ''ग'' क्षेत्र में स्थित रेलवे स्टेशनों पर अंग्रेजी एवं क्षेत्रीय भाषाओं सहित हिंदी में भी अनिवार्य रूप से उद्घोषणाएं की जानी चाहिए।

66. रेल मंत्रालयों के उपक्रमों/कारखानों द्वारा निर्मित उत्पाद का नाम तथा अन्य विवरण हिंदी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में लिखे जाने चाहिए।

67. रेल मंत्रालय और इसके सभी अधीनस्थ कार्यालयों में राजभाषा हिंदी में संबंधित पदों पर कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों को भारत सरकार के अन्य मंत्रालयों में इन पदों पर कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों के समान वेतनमान दिए जाने चाहिए और इन्हें समुचित पदोन्नति के अवसर दिए जाने चाहिए।

68. रेल मंत्रालय की तीन आधिकारिक वेबसाइट मौजूद होने के कारण कई बार भ्रामक स्थिति पैदा होती है। अतः स्थिति स्पष्ट करने के लिए रेले मंत्रालय द्वारा अपनी एक अधिकारिक वेबसाइट को ही प्रयोग में लाया जाना चाहिए और उसे पूर्णतः द्विभाषी रूप में उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

69. सभी रेल टिकटों में पूरी जानकारी द्विभाषी रूप में ही दी जानी चाहिए ताकि हिंदी पढ़ने समझने वाले जन साधारण को असुविधा न हो।

70. रेल मंत्रालय द्वारा दिए गए सभी विज्ञापन द्विभाषी रूप में जारी किए जाने चाहिए और विभिन्न रेल गाड़ियों के डिब्बों के अंदर और बाहर दिए जाने वाले विज्ञापनों में हिंदी को समुचित स्थान दिया जाना चाहिए। विशेषकर रेलवे स्टेशनों और रेलवे के परिसर में विज्ञापन संबंधी बैनर, होर्डिंग्स आदि अनिवार्य रूप से द्विभाषी होने चाहिए।

71. रेलवे बोर्ड द्वारा सभी निविदाओं की सूचना एवं फार्म द्विभाषी रूप में प्रकाशित किए जाने चाहिए।

संसदीय राजभाषा समिति के समक्ष विदेश मंत्रालय के सचिव एवं मंत्रालय के 08 अधीनस्थ कार्यालयों के प्रमुखों के साथ हुए मौखिक साक्ष्य के दृष्टिगत समिति निम्नलिखित सुझाव देती हैः–

72. हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने के लिए विदेश मंत्रालय को एक समयबद्ध कार्य योजना बनाकर उसे निष्पादित करना चाहिए।

73. सभी पासपोर्ट कार्यालयों द्वारा पासपोर्ट प्रपत्र द्विभाषी रूप में उपलब्ध कराएं जाएंगे तथा आवेदकों द्वारा हिंदी में भरे हुए प्रपत्र स्वीकार किए जाएंगे। जारी किए गए सभी पासपोर्टों में संपूर्ण प्रविष्टियां हिंदी में भी की जानी चाहिए।

74. मंत्रालय की वेबसाइट पर पासपोर्ट एवं वीजा संबंधी विस्तृत जानकारी एवं अन्य सूचना हिंदी में भी उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

75. विदेश मंत्रालय के विदेशों में स्थित अधीनस्थ कार्यालयों/दूतावासों इत्यादि में हिंदी के पदों का सृजन किया जाना चाहिए। जिन कार्यालयों/दूतावासों में हिंदी के पद रिक्त पड़े हुए हैं, उन्हें शीघ्रातिशीघ्र भरा जाना चाहिए।

76. विदेश सेवा के अधिकारियों को संघ सरकार की राजभाषा नीति एवं राजभाषा नियम और अधिनियम की पर्याप्त जानकारी देने के लिए उनके प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में इन्हें शामिल किया जाना चाहिए।

77. विदेश मंत्रालय द्वारा प्रकाशित 'इंडिया पर्सपेक्टिव' नामक उत्कृष्ट पुस्तक के अंक हिंदी एवं अंग्रेजी संस्करणों की समान संख्या प्रकाशित की जानी चाहिए।

78. सभी पासपोर्ट कार्यालयों में प्रयोग में लाए गए कंप्यूटरों पर हिंदी में काम करने की सुविधा सुनिश्चित की जानी चाहिए, विशेषकर कंप्यूटरों पर कार्य मुख्यतया हिंदी में ही किया जाना चाहिए।

79. राजभाषा नीति का सुचारू कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए मंत्रालय और इसके सभी अधीनस्थ कार्यालयों में उपलब्ध मानव संसाधन का इष्टतम उपयोग किया जाना चाहिए।

80. एअर इंडिया और पवन हंस हेलीकॉप्टर्स लि0 द्वारा सभी टिकटों पर हिंदी का समुचित प्रयोग सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

81. मंत्रालय के सभी अधीनस्थ कार्यालयों में राजभाषा हिंदी से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को समुचित वेतनमान एवं पदोन्नति के उचित अवसर दिए जाने चाहिए और उनके साथ किसी प्रकार का भेदभाव नहीं बरता जाना चाहिए।

82. भविष्य में समिति की राजभाषा संबंधी सभी निरीक्षण बैठकों में मंत्रालय की ओर से संयुक्त सचिव स्तर के अधिकारी की उपस्थिति सुनिश्चित की जानी चाहिए।

83. मंत्रालय के सभी अधीनस्थ कार्यालयों में अप्रशिक्षित कार्मिकों को प्रशिक्षण देने तथा रिक्त पड़े हुए हिंदी पदों को शीघ्रातिशीघ्र भरने के लिए समयबद्ध कार्रवाई की जानी चाहिए।

84. मंत्रालय द्वारा हिंदी भाषा प्रशिक्षण के लिए शेष अधिकारियों/कर्मचारियों को समयबद्ध प्रशिक्षण देकर इन्हें हिंदी कार्यशालाओं में नामित किया जाना चाहिए।

85. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय उड़ान अकादमी, रायबरेली में निर्धारित मानदंडों के अनुसार हिंदी का एक पद सृजित किया जाना चाहिए और अकादमी की संपूर्ण प्रशिक्षण सामग्री हिंदी में भी उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

86. नैसिल द्वारा प्रकाशित की जा रही पत्रिकाओं ''स्वागत और ''नमस्कार'' के हिंदी और अंग्रेजी संस्करणों की सामग्री एवं उनकी प्रतियां समान होनी चाहिए ताकि सभी यात्रियों को इन लोकप्रिय पत्रिकाओं का हिंदी संस्करण आसानी से उपलब्ध हो सके।

87. मंत्रालय और इसके सभी नियंत्रणाधीन कार्यालयों की वेबसाइट द्विभाषी रूप में होनी चाहिए और वेबसाइट को अद्यतन करते समय हिंदी के पृष्ठों को भी अनिवार्य रूप से अपलोड किया जाना चाहिए।

88. समिति द्वारा की गई सिफारिश के अनुसार सभी मंत्रालयों/कार्यालयों को विज्ञापन की कुल राशि का न्यूनतम 50 प्रतिशत व्यय हिंदी विज्ञापनों पर करना चाहिए। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा अक्तूबर, 2007 से लागू नई विज्ञापन नीति में समिति की उक्त सिफारिश के अनुसार समुचित संशोधन किया जाना चाहिए।

89. आकाशवाणी महानिदेशालय द्वारा हिंदी के सभी अनुवादक–सह–उदघोषकों को नेपाली, फ्रेंच एवं अन्य विदेशी भाषाओं के अनुवादक–सह–उदघोषकों को समान वेतनमान दिया जाना चाहिए।

90. सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अधीनस्थ कार्यालय नामतः भारतीय जनसंचार संस्थान में कार्यरत हिंदी अधिकारी को छठे वेतन आयोग की सिफारिश के अनुरूप वेतनमान दिया जाना चाहिए। इसी प्रकार मंत्रालय के एक अन्य अधीनस्थ कार्यालय भारतीय प्रेस परिषद में कार्यरत हिंदी का कार्य देख रहे कर्मचारी को नियमानुसार समुचित पदोन्नति दी जानी चाहिए।

91. देश भर में स्थित विभिन्न आकाशवाणी केन्द्रों एवं दूरदर्शन केन्द्रों की महत्वपूर्ण भूमिका के दृष्टिगत इनमें लंबे समय से रिक्त पड़े हिंदी पदों को प्राथमिकता आधार पर भरा जाना चाहिए।

92. आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के सभी केन्द्रों द्वारा हिंदी में प्रसारित कार्यक्रमों की अवधि निश्चित की जानी चाहिए।

93. प्रकाशन विभाग द्वारा केन्द्र सरकार के सभी मंत्रालयों एवं कार्यालयों के लिए मूल नियमों एवं अनुपूरक नियमों के संकलन का हिंदी प्रकाशन किया जाना चाहिए और इसे सर्वसुलभ बनाया जाना चाहिए।

94. मंत्रालय के नियंत्रणाधीन कार्यालय फिल्म समारोह निदेशालय द्वारा देश में आयोजित किए जाने वाले सभी फिल्म समारोहों में प्रदर्शित की जानी वाली फिल्मों की हिंदी में डबिंग/सब टाइटलिंग की व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि उत्कृष्ट फिल्मों के जरिए दर्शकों को हिंदी से जोड़ा जा सके।

95. मंत्रालय के नियंत्रणाधीन कार्यालय राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम द्वारा निर्मित क्षेत्रीय भाषाओं की फिल्मों की हिंदी में डबिंग/सब टाइटलिंग की व्यवस्था की जानी चाहिए। साथ ही, निगम द्वारा फिल्म निर्माण संबंधी अपने उपनियमों में संशोधन किया जाना चाहिए ताकि निगम द्वारा निर्मित फिल्मों के निर्माण के प्रथम चरण में फिल्मों की पटकथा हिंदी में भी तैयार की जा सके और सभी संबंधितों को सुलभ कराई जा सके।

96. कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग द्वारा जारी किए जाने वाले सभी कार्यालय आदेश/कार्यालय ज्ञापन/परिपत्र आदि को विभाग की वेबसाइट पर हिंदी में भी तत्काल उपलब्ध कराया जाना चाहिए और वेबसाइट पर दी गई सूचना को अद्यतन करते समय इसके हिंदी पाठ को भी उसी समय अद्यतन किया जाना चाहिए।

97. कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग द्वारा जारी सभी कार्यालय आदेश/कार्यालय ज्ञापन/परिपत्र आदि का संकलन प्रकाशन विभाग के माध्यम से प्रकाशित कराया जाना चाहिए और इसे सर्वसुलभ बनाया जाना चाहिए।

98. लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासनिक अकादमी, कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग का अधीनस्थ संगठन है जो प्रशासन एवं लोक नीति के अनुसंधान एवं प्रशिक्षण के क्षेत्र में भारत का अग्रणी संस्थान है जिसका मुख्य कार्य भारतीय प्रशासनिक सेवा के प्रशिक्षु अधिकारियों को प्रशिक्षण प्रदान करना है। अकादमी के प्रशिक्षण कार्यक्रमों की शत प्रतिशत सामग्री द्विभाषी रूप में उपलब्ध करायी जानी चाहिए।

99. समिति का सुझाव है कि अकादमी अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रशिक्षार्थियों को अन्य विषयों के साथ–साथ संघ सरकार की राजभाषा नीति और राजभाषा संबंधी संवैधानिक प्रावधानों के विषय में भी प्रशिक्षण प्रदान करने की व्यवस्था करे ताकि सभी अधिकारी अपनी नियुक्ति वाले कार्यालय में राजभाषा नीति के सुचारू कार्यान्वयन की निगरानी स्वयं कर सकें।

100. कर्मचारी चयन आयोग द्वारा देश भर में स्थित विभिन्न कार्यालयों में रिक्त पड़े हुए हिंदी पदों को तत्काल भरने के लिए ठोस एवं कारगर कार्य योजना बनाकर उसे क्रियान्वित करना चाहिए।

101. कर्मचारी चयन आयोग द्वारा संचालित अंतर्विभागीय परीक्षाओं में हिंदी भाषा का विकल्प चुनने वाले सभी परीक्षार्थियों के लिए भाषा ज्ञान संबंधी प्रश्न पत्र अंग्रेजी भाषा में देना अनिवार्य नहीं होना चाहिए।

102. एक समयबद्ध कार्यक्रम बनाकर कर्मचारी चयन आयोग के अधीन इनके सभी क्षेत्रीय कार्यालयों में प्रशिक्षण के लिए शेष अधिकारियों/कर्मचारियों को शीघ्रातिशीघ्र प्रशिक्षण दिलवाया जाए तथा इन कार्यालयों को राजभाषा नियम 1976 के नियम 10(4) के अंतर्गत अधिसूचित किया जाए।

103. संघ लोक सेवा आयोग द्वारा संचालित समस्त परीक्षाओं में हिंदी भाषा का विकल्प उपलब्ध नहीं कराया जा रहा है जिसका कारण परीक्षाओं का तकनीकी विषय होना बताया गया है। समिति इसे स्वीकार करने से इंकार करती है और यह सुझाव देती है कि प्रतिभाशाली हिंदी भाषी परीक्षार्थियों को समुचित अवसर देने के लिए आयोग द्वारा आयोजित सभी परीक्षाओं में हिंदी का विकल्प उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

104. केन्द्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के लिए प्रबंधकीय नीति का निर्धारण करने एवं इन उद्यमों के लिए वरिष्ठ प्रबंधकीय पदों पर नियुक्ति हेतु सरकार को सलाह देने के लिए गठित सार्वजनिक उद्यम चयन बोर्ड द्वारा सभी विज्ञापन द्विभाषी रूप में प्रकाशित किए जाने चाहिए।

इसके अतिरिक्त माननीय सदस्यों द्वारा की गई संस्तुतियां निम्न प्रकार हैं :–

105. सर्वोच्च राजकीय पदों पर बैठे सभी को, विशेषकर जिन्हें हिंदी बोलनी और पढनी आती है, वे अपने भाषण/वक्तव्य हिंदी में ही दें या पढ़ें इसका आग्रह करना चाहिए। इस श्रेणी में राष्ट्रपति सहित सभी मंत्री आते हैं।

106. संसद में हिंदी या मातृभाषा का उपयोग करने के संवैधानिक प्रावधान, अनुच्छेद–120(2) का पालन कराने के लिए योग्य पहल करनी चाहिए।

107. अंग्रेजी के प्रभुत्व को (उपयोग को नहीं) जड़ से समाप्त करने, हिंदी या मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा न देने वाली शालाओं को शासकीय मान्यता नहीं देनी चाहिए।

108. केन्द्रीय कार्यालयों में काम चाहने वालों को पद के अनुसार हिंदी प्रतियोगिता परीक्षा उत्तीर्ण करने का प्रावधान करना चाहिए।

109. विज्ञापनों पर खर्च संबंधी नियमों को अधिक कठोरता से पालन कराने का प्रावधान करना चाहिए।

क्रम संख्या : 105–109 का संदर्भ : (श्री श्रीगोपाल व्यास, सदस्य, राज्य सभा द्वारा दिए गए सुझाव–अनुलग्नक–)

110. राजभाषा अधिनियम का अनुपालन नहीं करने पर दंडात्मक प्रावधान होना चाहिए। ''क'' और ''ख'' क्षेत्रों के लिए दंड का प्रावधान अनिवार्य हो। ''ग'' क्षेत्र के लिए प्रोन्नति में विशेष अंक देने की व्यवस्था की जाए।

111. सभी सरकारी उपक्रमों, सरकारी अनुदान पाने वाली संस्थाओं, सार्वजनिक सेवा में लगी निजी कंपनियों तथा सरकारी कार्यालयों में हिंदी के पत्र और पत्रिका को अनिवार्य किया जाए। अंग्रेजी से उनकी संख्या अधिक हो। संख्या पर जोर दिया जाना चाहिए।

112. सरकारी प्रेसों में जो भी छपाई हो उसमें हिंदी की संख्या आधे से अधिक हो।

113. सभी भारतीय हवाई जहाजों पर हिंदी के पत्र और पत्रिका आधा जरूर रहे। विमानों में हिंदी की घोर उपेक्षा की जाती है। सभी उदघोषणा हिंदी के साथ–साथ अंग्रेजी में हो।

114. सभी कम्पनियों के उत्पादों पर हिंदी में विवरण दिये जायें और उनके नाम देवनागरी में भी लिखे जाएं।

115. सभी सार्वजनिक स्थलों पर सूचनापट्ट पर या नामपट्ट देवनागरी में लगाया जाए। सभी सरकारी अर्ध सरकारी और निजी कार्यालयों के नामपट्ट देवनागरी में रहें, नीचे अंग्रेजी में लिखा जाए।

116. जिन कम्पनियों में जनता का शेयर और सरकार का शेयर लगा है उसमें हिंदी का प्रयोग राजभाषा अधिनियम के अनुसार अवश्य हो।

क्रम संख्या : 110–116 का संदर्भ : (श्री हुक्मदेव नारायण यादव, सदस्य, लोक सभा द्वारा दिए गए सुझाव–अनुलग्नक–II)

117. अनुलग्नक–III पर राजभाषा विभाग द्वारा दिए गए सुझावों पर समिति का मत है कि राजभाषा विभाग उक्त सुझावों के कार्यान्वयन के लिए द्रुत गति से कार्य करे।

क्रम संख्या : 117 का संदर्भ : (राजभाषा विभाग द्वारा दिए गए सुझाव – अनुलग्नक–III)

******

परिषद मुख्यालय सहित संस्थानों/केन्द्रों की राजभाषा संबंधी गतिविधियां

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद मुख्यालय, नई दिल्ली

1. माननीय कृषि राज्य मंत्री जी की अध्यक्षता में संयुक्त हिंदी सलाहकार समिति की बैठक 17 सितम्बर, 2012 और 09 अप्रैल, 2013 को आयोजित की गई।

2. महानिदेशक महोदय द्वारा वरिष्ठ अधिकारियों की बैठकों में हिंदी कार्यान्वयन पर चर्चा की गई तथा अनुभाग अधिकारियों के साथ भी एक बैठक की गई।

3. परिषद में प्रवीणता प्राप्त अधिकारियों/कर्मचारियों को अपना अधिकतम कार्य हिंदी में करने के लिए महानिदेशक महोदय की ओर से आदेश जारी किए गए।

4. रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान राजभाषा नियमावली, 1976 के नियम 10(4) के अंतर्गत परिषद के 3 संस्थानों/केन्द्रों को भारत सरकार के राजपत्र में अधिसूचित किया गया है जिसे मिलाकर अधिसूचित कार्यालयों की संख्या अब 118 हो चुकी है।

5. विशेष सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग तथा सचिव, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में गठित ''डेयर'' तथा परिषद की संयुक्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति की चार तिमाही बैठकों का आयोजन किया गया। परिषद के अधिकांश संस्थानों/केन्द्रों आदि में राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन हो गया है तथा उनकी बैठकें आयोजित की जा रही हैं।

6. परिषद मुख्यालय में सभी संस्थानों से प्राप्त होने वाले राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों के कार्यवृत्तों की तथा तिमाही रिपोर्टों की नियमित समीक्षा की गई और पाई गई कमियों को सुधारने के उपाय सुझाए गए।

7. हिंदी, हिंदी टाइपिंग और हिंदी आशुलिपि में प्रशिक्षण दिलाने के लिए एक रोस्टर रखा गया है और तदनुसार कर्मचारियों को प्रशिक्षण के लिए नामित किया जा रहा है।

8. परिषद मुख्यालय तथा इसके संस्थानों आदि में पिछले वर्षों की भांति इस वर्ष भी हिंदी सप्ताह, पखवाड़ा/माह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर माननीय कृषि मंत्री जी का प्रेरणाप्रद संदेश जारी किया गया तथा महानिदेशक महोदय ने भी एक अपील जारी करके सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अधिक से अधिक सरकारी कामकाज हिंदी में करने का अनुरोध किया। परिषद मुख्यालय में ''हिंदी चेतना मास'' मनाया गया। इस अवधि में विभिन्न

प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसके पुरस्कार विजेताओं को दिनांक 19 मार्च, 2013 को आयोजित निदेशकों की बैठक में माननीय महानिदेशक महोदय द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए।

9. हिंदी कार्यशालाएं :– दिनांक 9.5.2012 तथा 26.7.2012 को परिषद के उच्च श्रेणी लिपिकों/अवर श्रेणी लिपिकों के लिए 'अनुभागों द्वारा भरी जाने वाली तिमाही प्रगति रिपोर्ट के भरे जाने पर कार्यशाला में प्रशिक्षण दिया गया जिसमें 28 कर्मचारियों ने भाग लिया तथा दिनांक 14.9.2012 को विविध श्रेणी के अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु संयुक्त रूप से राजभाषा नियम, अधिनियम एवं कार्यान्वयन विषय पर एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 65 कार्मिकों ने भाग लिया। हिंदी पत्राचार बढ़ाने तथा राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अनुभाग अधिकारियों हेतु दिनांक 3 दिसम्बर, 2012 को एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 33 अधिकारियों ने भाग लिया।

10. हिंदी में अधिकाधिक काम करने के लिए परिषद में चल रही नकद पुरस्कार योजना के अंतर्गत मुख्यालय में पूरे वर्ष के दौरान अपना अधिकतम कार्य हिंदी में करने के लिए 10 कार्मिकों को पुरस्कृत किया गया।

11. ''राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार योजना'' के अंतर्गत पूरे वर्ष के दौरान अपना सर्वाधिक कामकाज राजभाषा हिंदी में करने हेतु संस्थानों को पुरस्कृत किया गया है जिनके नाम इस प्रकार हैं :–

1.	बड़े संस्थान का नाम	पुरस्कार
	1. भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली	प्रथम
	2. राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल (हरियाणा)	द्वितीय
2.	'क' और 'ख' क्षेत्र के संस्थानों/केन्द्रों आदि का पुरस्कार	
	1. सोयाबीन अनुसंधान निदेशालय, इंदौर	प्रथम
	2. केन्द्रीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर	द्वितीय
3.	'ग' क्षेत्र में स्थित अन्य संस्थानों/केन्द्रों आदि का पुरस्कार	
	1. केन्द्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद	प्रथम
	2. केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोच्चि	द्वितीय

''राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार योजना का प्रथम पुरस्कार भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली को प्रदान किया गया।

डॉ. एस. अय्यप्पन, महानिदेशक, भा.कृ.अ.प. (बायें), माननीय पद्म–विभूषण डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन एवं डॉ. जी.एस. रंधावा, अध्यक्ष, कृ.वै.च.मण्डल (दायें) पुरस्कार प्रदान करते हुए

12. परिषद के अधीनस्थ उत्कृष्ट हिंदी पत्रिकाओं के प्रकाशन के को बढ़ावा देने के लिए ''गणेश शंकर विद्यार्थी हिंदी कृषि पत्रिका पुरस्कार योजना'' वर्ष 2004–05 से आरंभ की गई है। इसके अंतर्गत वर्ष 2011 के दौरान निम्न संस्थानों को पुरस्कृत किया गया है :–

क्र0सं0	पत्रिका का नाम	संस्थान का नाम	पुरस्कार
1.	''नीलांजलि''	केन्द्रीय अंतःस्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, कोलकाता	प्रथम
2.	''पूसा सुरभि''	भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली	द्वितीय
3.	''दुग्ध गंगा''	राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल, हरियाणा	तृतीय

13. राजभाषा विभाग और संसदीय राजभाषा समिति की सिफारिशों के अनुसार परिषद के विभिन्न संस्थानों में हिंदी की प्रगति का जायजा लेने के लिए वर्ष 2012 के दौरान 31 कार्यालयों का निरीक्षण किया गया और पाई गई कमियों को दूर करने हेतु सुझाव दिए गए। इसमे संसदीय राजभाषा समिति द्वारा किए गए निरीक्षण भी शामिल हैं।

14. हिंदी में 'कृषिका' नामक एक छमाही शोध पत्रिका का प्रकाशन परिषद मुख्यालय द्वारा वर्ष 2012 से आरंभ किया गया है। अब तक इसके दो अंकों का प्रकाशन किया जा चुका है।

15. परिषद व इसके संस्थानों में राजभाषा कार्यान्वयन में हुई प्रगति का संक्षिप्त ब्यौरा ''राजभाषा आलोक'' नामक वार्षिक ई–पत्रिका में दिया गया है। इसके वर्ष 2013 के अंक को परिषद की वेबसाइट पर अपलोड किया गया है।

16. परिषद के विभिन्न संस्थानों द्वारा जनोपयोगी व किसानों के लिए चलाए जाने वाले अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम हिंदी व अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में चलाए जा रहे हैं। हिंदी भाषी क्षेत्रों में स्थित कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा परिषद के कृषि विस्तार संबंधी सभी क्रियाकलापों में हिंदी व स्थानीय भाषाओं के प्रयोग में प्रगति लाई गई है।

17. संसद में प्रस्तुत की जाने वाली समस्त सामग्री के अतिरिक्त वार्षिक योजना रिपोर्ट, अनुदान मांगों की संवीक्षा, शासी निकाय, स्थाई वित्त समिति, कृषि मंत्रालय की संसदीय समिति, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद सोसायटी की वार्षिक आम सभा सहित अनेक बैठकों की समस्त सामग्री हिंदी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार की गई। माननीय कृषि मंत्री व परिषद के अन्य उच्च अधिकारियों ने अपने अधिकांश व्याख्यान हिंदी में दिये। परिषद मुख्यालय में उनके उक्त भाषणों का मसौदा मूल रूप से हिंदी में तैयार किया गया।

    यह के महानिदेशक और सचिव द्वारा दिए गए मार्गदर्शन का ही परिणाम है कि डेयर के साथ–साथ परिषद के अधीनस्थ केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोच्चि को महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी द्वारा 14 सितम्बर, 2012 को राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित समारोह के दौरान 'इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार योजना' के अंतर्गत अपना सर्वाधिक कार्य हिंदी में करने के लिए पुरस्कृत किया गया है।

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

1. हिंदी चेतना मास

संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति नवीन चेतना और जागृति उत्पन्न करने तथा अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से संस्थान मुख्यालय में प्रतिवर्ष की भांति रिपोर्टाधीन वर्ष में सितम्बर मास में हिंदी चेतना मास मनाया गया। हिंदी चेतना मास के दौरान अनेक विविधरंगी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जैसे काव्य–पाठ, श्रुतलेख, वाद–विवाद, टिप्पण व मसौदा लेखन, निबंध लेखन, आशुभाषण, कम्प्यूटर पर शब्द प्रसंस्करण, शब्द–ज्ञान, प्रश्न–मंच एवं कुशल

सहायी वर्ग के लिए सामान्य–ज्ञान। इस वर्ष आयोजित की गई वाद–विवाद प्रतियोगिता का विषय था –''देश में सबसे बड़ी समस्या भ्रष्टाचार है''।

संस्थान मुख्यालय के साथ–साथ अनेक संभागों एवं क्षेत्रीय केन्द्रों में भी हिंदी सप्ताह/हिंदी दिवस का आयोजन किया गया और अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन कर उन्हें पुरस्कृत किया गया।

हिंदी चेतना मास के उद्घाटन अवसर पर संस्थान की हिंदी में प्रकाशित वार्षिक रिपोर्ट 2011–12 का विमोचन किया गया।

हिंदी चेतना मास के उद्घाटन समारोह में हिंदी में प्रकाशित संस्थान की वार्षिक रिपोर्ट 2011–12 का विमोचन करते हुए संस्थान के निदेशक, संयुक्त निदेशक (अनु.) एवं अन्य अतिथिगण

2. हिंदी वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह

दिनांक 5 अक्तूबर, 2012 को आयोजित हिंदी वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर हिंदी चेतना मास के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं और वर्षभर चलने वाली विभिन्न पुरस्कार योजनाओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। इस वर्ष पुरस्कार वितरण समारोह के मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध हिंदी समालोचक प्रोफेसर नामवर सिंह थे जबकि समारोह की अध्यक्षता संस्थान की संयुक्त निदेशक(अनुसंधान) डॉ. मालविका दादलानी द्वारा की गई। इस अवसर पर संस्थान की राजभाषा प्रगति रिपोर्ट भी प्रस्तुत की गई। मुख्य अतिथि द्वारा संस्थान की वार्षिक राजभाषा पत्रिका ''पूसा सुरभि'' के पंचम अंक तथा ''जैव–उर्वरक'' व ''फसलों में सूत्रकृमि रोग'' शीर्षक वाले तकनीकी बुलेटिन का विमोचन किया गया। उक्त समारोह में कुल 82 विजेताओं को सम्मानपूर्वक पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर एक हास्य कवि–सम्मेलन का भी आयोजन किया गया जिसका रसास्वादन उपस्थित जनसमूह ने अत्यंत उल्लास के साथ किया।

हिंदी वार्षिकोत्सव समारोह में मुख्य अतिथि प्रोफेसर नामवर सिंह जी संस्थान की पत्रिका

''पूसा सुरभि'' के पंचम अंक का विमोचन करते हुए

3. संगोष्ठी एवं हिंदी कार्यशालाएं

- दिनांक 25–27 फरवरी, 2013 को भारतीय स्वदेशी विज्ञान आन्दोलन, विज्ञान भारती, दिल्ली के साथ संयुक्त रूप से ''भारतीय विज्ञान, अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी में अन्वेषणों पर तृतीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें देशभर के लगभग 250 प्रतिनिधियों ने सहभागिता की।
- दिनांक 12 जून, 2012 को संस्थान के प्रशासनिक वर्ग के कुल 60 सहायकों के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें उन्हें राजभाषा नीति व नियमों की जानकारी देने के साथ–साथ हिंदी में टिप्पण व मसौदा लेखन, तिमाही रिपोर्ट व निरीक्षण प्रपत्र भरने का प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया।
- दिनांक 29 सितम्बर 2012 को ''जैव–प्रौद्योगिकी की कृषि विकास में उपयोगिता'' विषय पर वैज्ञानिक वर्ग के लिए हिंदी में एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें हिंदी में गुणवत्तापूर्ण शोध लेखन व प्रस्तुतीकरण पर जानकारी सुलभ कराई गई। इसी दिन उक्त विषय पर पावर प्वाइंट प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया और सफल प्रतियोगियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।
- दिनांक 5–6 दिसम्बर, 2012 को संस्थान के कुल 60 तकनीकी अधिकारियों के लिए ''हिंदी में गुणवत्तापूर्ण शोध–लेखन'' पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

- दिनांक 28–29 जनवरी, 2013 को प्रशासनिक वर्ग के कर्मचारियों के लिए ''कम्प्यूटर पर हिंदी में यूनिकोड प्रणाली का अनुप्रयोग'' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रतिभागियों को कम्प्यूटर पर हिंदी के विभिन्न फॉण्टस् व यूनिकोड प्रणाली से अवगत कराकर व्यावहारिक अभ्यास कराया गया।

4. पुरस्कार व सम्मान

वर्ष 2011–12 की अवधि में संस्थान को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति के लिए अनेक पुरस्कार व सम्मान प्राप्त हुए हैं।

- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा 19 मार्च 2013 को नई दिल्ली में आयोजित परिषद के संस्थानों के निदेशकों की बैठक में बड़े संस्थानों के वर्ग में भा.कृ.अ.सं. को उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए ''राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार योजना 2011–12'' का प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा 19 मार्च 2013 को नई दिल्ली में आयोजित परिषद के संस्थानों के निदेशकों की बैठक में हिंदी कृषि पत्रिका के उत्कृष्ट प्रकाशन हेतु संस्थान की पत्रिका ''पूसा सुरभि'' को ''गणेश शंकर विद्यार्थी 2011–12'' का द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया।
- संस्थान की उप–निदेशक (राजभाषा) श्रीमती सीमा चोपड़ा को दिनांक 25–27 फरवरी, 2013 को भारतीय स्वदेशी विज्ञान आन्दोलन, विज्ञान भारती, दिल्ली द्वारा भारतीय विज्ञान, अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी में अन्वेषणों पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में हिंदी में विज्ञान को लोकप्रिय बनाने में किए गए उल्लेखनीय योगदान के लिए ''आर्यभट्ट पुरस्कार'' प्रदान किया गया।

अन्य उपलब्धियां

- दिनांक 6–8 मार्च, 2013 को ''किसानों की समृद्धि के लिए कृषि प्रौद्योगिकियां'' विषय पर कृषि विज्ञान मेले का आयोजन किया गया जिसमें समस्त प्रदर्शित सामग्री को हिंदी में सुलभ कराया गया।

हिंदी में वर्षभर सर्वाधिक सरकारी कामकाज करने के लिए नकद पुरस्कार योजना

यह पुरस्कार योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के निर्देशों के अनुसार चलाई गई जिसमें वर्षभर हिंदी में सर्वाधिक सरकारी कामकाज करने वाले संस्थान के 10 कर्मचारियों को नकद पुरस्कार प्रदान किए गए।

हिंदी व्यवहार प्रतियोगिता

यह प्रतियोगिता संभाग व अनुभाग स्तर पर आयोजित की गई जिसमें वर्षभर हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाले एक संभाग और एक अनुभाग को चल–शील्ड से सम्मानित किया गया। रिपोर्टाधीन वर्ष में संभागों में पुष्पविज्ञान एवं भ्रूदृश्य निर्माण को तथा अनुभागों में कार्मिक–2 को चल–शील्ड प्रदान की गई।

- राजभाषा पत्र–व्यवहार प्रतियोगिता

  हिंदी में अधिकाधिक पत्र–व्यवहार करने को बढ़ावा देने के उद्देश्य से उक्त प्रतियोगिता आयोजित की गई। रिपोर्टाधीन अवधि में प्रथम पुरस्कार सूत्रकृमिविज्ञान संभाग तथा द्वितीय पुरस्कार सब्जीविज्ञान संभाग को प्रदान किया गया।

- विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में हिंदी में कृषि विज्ञान तथा सम्बद्ध विषयों पर लेख लिखने के लिए पुरस्कार

  इस पुरस्कार योजना के तहत कैलेन्डर वर्ष 2011 में प्रकाशित विभिन्न वैज्ञानिकों/तकनीकी अधिकारियों के लेखों के लिए प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के रूप में क्रमशः 5000/–, 3000/– एवं 2000/– प्रदान किए गए।

- पूसा विशिष्ट प्रवक्ता पुरस्कार

  यह पुरस्कार वैज्ञानिकों को उनके द्वारा विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में दिए गए सर्वश्रेष्ठ व्याख्यान के लिए प्रदान किया गया जिसमें प्रशिक्षण समन्वयक की टिप्पणी और प्रशिक्षुओं से प्राप्त फीडबैक का भी मूल्यांकन किया गया। इसकी पुरस्कार राशि 10,000/– है।

- हिंदी में पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता

  संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष हिंदी में पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। रिपोर्टाधीन वर्ष में दिनांक 29 सितम्बर को ''जैव–प्रौद्योगिकी की कृषि विकास में उपयोगिता'' विषय पर हिंदी में पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता का आयोजन कर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्रदान किए गए।

- वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों के अनुपालन में संस्थान की राजभाषा निरीक्षण समिति द्वारा दिल्ली स्थित सभी संभागों/इकाइयों व निदेशक कार्यालय स्थित अनुभागों तथा क्षेत्रीय केन्द्रों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग का निरीक्षण कार्य किया गया।

क्षेत्रीय केंद्र, इंदौर

भा. कृ. अ. सं., क्षेत्रीय केन्द्र, इन्दौर में 15 से 28 सितंबर तक 'हिंदी पखवाड़ा' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आयोजित काव्यपाठ, वाद–विवाद, प्रश्न मंच, श्रुत लेख, तात्कालिक लघु भाषण आदि प्रतियोगिताओं में वैज्ञानिकों, तकनीकी एवं प्रशासनिक कर्मचारियों तथा वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता आदि ने सम्मिलित होकर कार्यक्रम को सफल बनाया। कार्यक्रम का उद्घाटन श्री सुरेन्द्र मिश्र, मुख्य आयुक्त आयकर ने डॉ. ए.एन. मिश्र की अध्यक्षता में किया। डॉ. मिश्र ने क्लिष्ट हिंदी की अपेक्षा, व्यवहारिक, सहज एवं सरल हिंदी में कार्य करने की प्रेरणा दी। समापन समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. एम. एन. राजपूत, अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय, इन्दौर ने प्रतियोगिताओं में विजेताओं को हिंदी की पुस्तकें पुरस्कार में देकर प्रोत्साहित किया।

उपलब्धियां

- कठिया (ड्यूरम) गेहूँ की प्रजाति एच.आई. 8713 (पूसा मंगल) मध्य क्षेत्र में सिंचित तथा समय से बुआई के लिए अगस्त, 2012 में चिन्हित की गई। इस प्रजाति की औसत उपज 52.3 क्विंटल/है. है, जोकि ड्यूरम प्रजातियों एच.आई. 8498 तथा एम.पी.ओ. 1215 की तुलना में 6 प्रतिशत अधिक तथा रोटी के गेहूँ की लोक–1 प्रजाति की तुलना में 10 प्रतिशत अधिक है।
- मल्टी लोकेशन समन्वित परीक्षणों में केन्द्र द्वारा विकसित 29 प्रविष्टियाँ (20 ड्यूरम तथा 9 चंदौसी गेहूँ) सम्मिलित की गईं। ड्यूरम प्रविष्टयाँ एच.आई. 8724, एच.आई. 8725, एच.आई. 8727, एच.आई. 8728, एच.आई. 8731 अंतिम वर्ष (ए.वी.टी. द्वितीय वर्ष) में मूल्यांकित की गईं।
- कैनोपी टैम्परेचर डिप्रेशन (सी.टी.डी.) तथा दाना उपज, जैविक भार, 1000 दाना भार एवं हारवेस्ट इन्डेक्स में सकारात्मक संबंध पाया गया, जबकि 1000 दाना वजन का दाना उपज तथा जैविक भार से सकारात्मक संबंध देखा गया।
- भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान की दस गेहूँ प्रजातियों के 1,401 क्विंटल प्रजनक बीज का उत्पादन किया गया।
- पाँच किलोग्राम जस्ता अथवा 1.0 किलोग्राम बोरॉन प्रति हैक्टेयर के आधारीय प्रयोग से गेहूँ की उपज में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
- अति शीघ्र बुआई तथा सीमित समय के लिए सिंचाई उपलब्धता की स्थिति में ड्यूरम गेहूँ की प्रजाति एच.आई. 8663 ने अधिकतम उपज दी जो कि जी.ड्ब्ल्यू. 273, एच.आई. 1500, एच.आई. 8627 के समकक्ष थी, जबकि अन्य प्रजातियों एच.आई. 1531, लोक–1, एच.डी.–2987, एच.डी.4672 तथा एच.आई. 8638 की तुलना में उल्लेखनीय रूप में अधिक थी।
- कठिया (ड्यूरम) गेहूँ की तीन जनन द्रव्यों जी.ड्ब्ल्यू. 1114, एच.डी. 4672 व आर.एस. 749 के बीच तना (काला) गेरुआ की चार प्रतिरोधी जीन्स की पहचान की गई। ये जीन्स भारतीय कठिया गेहूँ (ड्यूरम) जनन द्रव्य में सामान्यतः पाई जाने वाली तना गेरुआ प्रतिरोधक जीन्स एस.आर.2, एस.आर. 7बी, एस.आर. 9ई व एस.आर.11 से भिन्न है।
- यू.जी. 99 के सात सिद्ध प्रतिरोधी स्रोतों में केवल किंग बर्ड, चिविंक तथा सुपर 172 ने ही तना (काला) गेरुआ के भारतीय पैथोटाइप के प्रति प्रतिरोधिता प्रदर्शित की, जबकि बाज, फेंकोलिन, सुपर 152 तथा क्यूओ संवेदनशील थे।
- टिलरिंग इन्हीबिशन (टिन) जीन वाली आस्ट्रेलियन गेहूँ की प्रजातियों ने, जिनमें कम कल्ले (टिलर) थे, अधिक कल्लों वाली प्रजातियों से अधिक उपज दी। ऐसा प्रतीत होता है कि टिन जीन ने ऐसीमिलेट के अउत्पादक टिलर से उत्पादक टिलर में पहुँचाने में सहायता की। अतः गेहूँ में कम टिलरिंग लाभकारी प्रतीत होता है, विशेषतः गर्मी तथा सूखे की स्थिति में।
- वर्ष 2011–12 में 13 आई.ए.आर.आई. प्रजातियों के 53 प्रथम पंक्ति प्रदर्शन इन्दौर, हरदा तथा खंडवा जिले (मध्य प्रदेश) के सात गाँवों में 22 हैक्टेयर क्षेत्र में किए गए। स्थानीय प्रजातियों तथा प्रचलित खेती के तरीकों की तुलना में इन प्रदर्शनों के द्वारा गेहूँ की उपज में 11.34 क्विंटल/है. अथवा 39 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

क्षेत्रीय केंद्र, करनाल

क्षेत्रीय स्टेशन, करनाल में हिंदी पखवाड़ा दिनांक 01 से 14 सितम्बर, 2012 तक मनाया गया । पखवाड़े का समापन समारोह दिनांक 14 सितम्बर, 2012 को किया गया। इस दौरान "काव्य प्रस्तुति" एवं "कन्या भ्रूण हत्या - एक अभिशाप" विषय पर भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिता में संस्थान के सभी वर्गो के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। समारोह की मुख्य अतिथि डा0 इन्दु शर्मा, परियोजना निदेशक, गेहूँ अनुसंधान निदेशालय थीं। उन्होनें संस्थान के राजभाषा समिति को बधाई देते हुए कहा कि समिति ने बहुत ही

संवदेनशील मुद्दा चुना है जो सामाजिक बुराई से जुड़ा है। कन्या भ्रूण हत्या मानवता के नाम पर एक अभिशाप है। इस सत्र की अध्यक्षता स्टेशन के अध्यक्ष डा0 सलविन्द्र सिंह अटवाल ने की । उन्होनें राजभाषा के सन्दर्भ मे हुई गतिविधियों की विस्तृत जानकारी दी और कहा कि हमारे कार्यालय में काफी काम हिंदी में सम्पन्न हो रहा है। उन्होंने सभी कर्मचारियों से अपील की कि वे हिंदी को व्यवहार की भाषा बनाएं। कार्यक्रम की संयोजिका डा0 श्रीमती अनुजा गुप्ता ने राजभाषा के नियमों व अधिनियमों की जानकारी दी और क्षेत्रीय स्टेशन पर हिंदी में हो रहे कार्यों के बारे में बताया। उन्होनें कहा कि हमारे संस्थान पर राजभाषा अधिनियम और नियम पूरी तरह लागू है और राजभाषा नीति के पूर्ण रुप से सुनिष्चित किया जाता है ।

भा.कृ.अ.सं. के क्षेत्रीय केन्द्र, करनाल में हिंदी पखवाड़े का आयोजन

गेहूं अनुसंधान निदेशालय, करनाल से डा0 अनुज कमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक एंव प्रभारी राजभाषा और डी.ए.वी. कालेज, करनाल से डा0 श्रीमती शर्मिला यादव, सह प्राध्यापक ने निर्णायक मंडल की भूमिका निभाई। भाषण प्रतियोगिता में डा0 निशा कान्त चौपड़ा ने प्रथम व श्रीमती सुषमा ने द्‌वितीय स्थान प्राप्त किया। काव्य प्रस्तुति में श्रीमती सुषमा ने प्रथम स्थान व डा0 रविन्द्र कुमार, वैज्ञानिक ने द्‌वितीय स्थान प्राप्त किया । अन्य सभी प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि द्‌वारा पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुम्बई

हिंदी पखवाड़ा

संस्थान में दिनांक 14 से 28 सितम्बर तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया । समारोह के मुख्य अतिथि राजभाषा विभाग, पश्चिमी क्षेत्र कार्यान्वयन कार्यालय के प्रभारी श्री विनोद कुमार शर्मा थे । संस्थान के विभागाध्यक्ष डा. गोपालकृष्ण ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया । उन्होंने सभा में उपस्थित सभी से अनुरोध किया कि वे हिंदी के प्रसार एवं प्रयोग को बढाने में अपना योगदान दें एवं संकल्प लें कि वे अपना समस्त प्रशासानिक कार्य हिंदी में ही करेंगे । उप निदेशक (राजभाषा) डा. राजेश्वर उनियाल ने हिंदी प्रगति की उपलब्धियां एवं हिंदी पखवाड़ा की रुपरेखा प्रस्तुत की । समारोह की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ

कुलसचिव श्री जी. आर. देशबन्धु ने संस्थान में हिंदी के प्रयोग एवं उपलब्धियों पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि हिंदी का जितना कार्य हमारे से संस्थान में हो रहा है वह सराहनीय है परंतु हमें अभी राजभाषा विभाग द्‌वारा जारी लक्ष्यों को प्राप्त करना होगा । हमारे साहित्य एवं प्रसार पुस्तिकाओं का लाभ मत्स्य किसानों को मिले इसके लिए हमारे वैज्ञानिक हिंदी साहित्य उपलब्ध कराएं ।

संस्थान में हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर मुख्य अतिथि श्री विनोद कुमार शर्मा, प्रभारी, पश्चिमी क्षेत्र कार्यान्वयन कार्यालय, मुम्बई

संस्थान के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी श्री महेश खुबड़ीकर ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया तथा श्री प्रताप कुमार दास, तकनीकी अधिकारी ने मंच संचालन किया । उद्‌घाटन सत्र में ही भाषण, गीत एवं कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कर्मचारियो एवं छात्र-छात्राओं ने भाग लिया । इस प्रतियोगिताओं का संचालन डा. अर्पिता शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने किया ।

दिनांक 15 सितम्बर को, सायंस क्लब की ओर से वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. एस. पी. शुक्ला ने अपनी एंटार्टिका यात्रा पर आधारित "एंटार्टिका एवं जीव-जन्तुओं के जीवन" पर हिंदी में एक रोचक व्याख्यान प्रस्तुत किया । इस कार्यक्रम की संचालिका डा. अपर्णा चौधरी, वरिष्ठ वैज्ञानिक थी ।

दिनांक 17 सितम्बर को डा. कमल कांत जैन, प्रधान वैज्ञानिक की अध्यक्षता में हिंदी पुस्तकालय समिति की बैठक हुई । जिसमें यह प्रस्ताव रखा गया कि हिंदी पुस्तकालय को माह में एक दिन आम जनता हेतु खोला जाए । जिसमें शहर के शिक्षाविद, शोधार्थी, कवि, पत्रकारों एवं साहित्यकारों को इसका लाभ मिल सकेगा । 18 सितम्बर को प्रधान वैज्ञानिक डा. पी. पी. श्रीवास्तव की अध्यक्षता में लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । इसके अंतर्गत सुलेख, शब्दावली एवं निबंध लेखन संचालित किया गया, जिसमें लगभग 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया ।

दिनांक 22 सितम्बर को कर्मचारियों, बच्चों एवं छात्र-छात्राओं हेतु चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । इस प्रतियोगिता का आयोजन डा. एस. एन. ओझा, प्रधान वैज्ञानिक की अध्यक्षता में किया

गया जिसमें सभी आयु वर्ग के बच्चों, कर्मचारियों एवं छात्रों ने भाग लिया । यह प्रतियोगिता चित्रकार श्री दीपक खोगरे के मार्गदर्शन में किया गया ।

दिनांक 25 सितम्बर को महिला दिवस का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान की महिला कर्मचारियों एवं संस्थान परिवार की महिलाओं ने भाग लिया । इसके अंतर्गत कई प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें महिलाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया । इन प्रतियोगिताओं का संचालन डा. नीलम सहारन, प्रधान वैज्ञानिक ने किया ।

दिनांक 26 सितम्बर को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उत्तर मुंबई (कार्यालय) हेतु नराकास प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । जिसके अंतर्गत निबंध लेखन, भाषण एवं गीत/कविता का आयोजन किया गया । इसमें कई कार्यालयों के प्रतिभागियों ने भाग लिया । इस प्रतियोगिता एवं समारोह के मुख्य अतिथि अतिरिक्त श्री राम आयुक्त श्री आर. जी. मीणा थे तथा प्रतियोगिताएं डा. गोपालकृष्ण, प्रधान वैज्ञानिक की अध्यक्षता में संचालित की गई ।

दिनांक 28 सितम्बर को पखवाड़े का समापन समारोह आयोजित किया गया । यह समारोह संस्थान के निदेशक एवं कुलपति डा. वजीर एस. लाकड़ा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ । डा. राजेश्वर उनियाल, उप निदेशक (राजभाषा) ने हिंदी पखवाड़ा का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया । इस अवसर पर श्री आर. जी. देशबन्धु, वरिष्ठ कुलसचिव एवं डा. ए. के. पाल, संयुक्त निदेशक महोदय ने पखवाड़े की सफल आयोजन पर अपनी टिप्पणी प्रस्तुत की । पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को निदेशक महोदय के कर-कमलों से प्रमाण पत्र, पुरस्कार एवं नकद पुरस्कार प्रदान किया गया । इस अवसर पर निदेशक महोदय ने परिषद के महानिदेशक, डा. एस. अय्यप्पन द्वारा भेजे गए हिंदी दिवस संदेश को पढ़कर सुनाया तथा संस्थान में सम्पन्न हुए हिंदी पखवाड़ा पर प्रसन्न्ता व्यक्त करते हुए कहा कि निश्चय ही इस संस्थान ने वाकई में हिंदी में बहुत ही उत्कृष्ट कार्य किया है । इस हेतु सभी को बधाई देते हुए अपील की कि इसे और आगे बढ़ाते हुए हमें राष्ट्रीय पुरस्कारों को प्राप्त करना है । उन्होंने सभी को हिंदी में काम करने हेतु शब्दावली नए रुप में उपलब्ध कराने हेतु कहा । उन्होंने संस्थान में कम्प्यूटर पर हिंदी कार्य करने को बढ़ावा देते हुए कहा कि समस्त कम्प्यूटरों के में यूनिकोड कर दिया जाए, जिससे हिंदी में काम करना सरल हो सके । अंत में तकनीकी अधिकारी श्री प्रताप कुमार दास ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया । राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ ।

हिंदी कार्यशाला

संस्थान के समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों को कम्प्यूटर पर यूनिकोड में प्रशिक्षित करने हेतु वर्ष 2012-13 में कुल 12 कार्यशालाएं संचालित की जाएंगी । इसके अंतर्गत प्रथम कार्यशाला संस्थान के हिंदी अनुभाग, पुस्तकालय तथा सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु दिनांक 30 नवम्बर

2012 को आयोजित की गई । एम.टी.एन.एल. के श्री कलीम उल्लाह खान, सहायक निदेशक राजभाषा ने सभी उपस्थित प्रतिभागियों को व्यक्तिगत रुप से उक्त विषय में प्रशिक्षित किया । इस कार्यशाला में काकिनाड़ा केन्द्र से श्री रविशंकर पटनायक ने भी भाग लिया ।

राष्ट्रीय संगोष्ठी

संस्थान के कोलकाता केन्द्र में दिनांक **5-6** जनवरी **2013** को भारत के पूर्वी एवं पूर्वोत्तर राज्यों में प्रौद्योगिकी के माध्यम से नीली क्रान्ति विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया । इस संगोष्ठी में संस्थान के लगभग **20** वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों ने भाग लिया ।

हिंदी जलवाणी

एम.एफ.एस.सी. छात्रों हेतु हिंदी जलवाणी पाठ्यक्रम संचालित किया गया जिसमें हिंदी जानने वाले एवं हिंदी का ज्ञान न रखने वाले छात्रों तथा विदेशी छात्रों हेतु अलग-अलग वर्ग बनाए गए हैं ।

रेडियो वार्ता/आकाशवाणी वार्ता

लोकगीतों में बरखा, लोकगीतों में भारतीय संस्कृति, परिचर्चा

अन्य विशेष व्याख्यान

1. **धाद एवं बुराँश संस्था** - उत्तराखण्ड की भाषा नीति**, नेरुल** 21 **अप्रैल** 2012
2. **कर्मचारी बीमा निगम** - राजभाषा कार्यान्वयन**, अंधेरी पूर्व** - **जून** 2012
3. **केन्द्रीय विद्यालय संगठन**, - कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य**, विक्रोली**, **प्रशिक्षण संस्थान**, 28 **अगस्त** 2012
4. **केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो-** राजभाषा पत्रकारिता**,** 07 **सितम्बर** 2012
5. **भारत संचार निगम** - राजभाषा कार्यान्वयन**, सांताक्रुज** -14 **सितम्बर** 2012
6. **विकास आयुक्त का कार्यालय - राजभाषा कार्यान्वयन** 27 **सितम्बर** 2012
7. **विविध भारती**, **बोरीवली** - वर्तमान सूचना प्रौद्योगिकी के युग में हिंदी का महत्व**,** 22 **फरवरी** 2013
8. **कर्मचारी बीमा निगम** - राजभाषा नीति व नियम**, अंधेरी पूर्व** - 18 **मार्च** 2013
9. **केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो-** राजभाषा और सूचना प्रौद्योगिकी**, सी.बी.डी. बेलापुर** 19 **मार्च** 2013
10. **भारतीय मानक संस्था** - राजभाषा और सूचना प्रौद्योगिकी**, अंधेरी पूर्व** - 21 **मार्च** 2013

उपकेन्द्रों में हिंदी प्रगति

काकिनाड़ा केन्द्र

संस्थान के काकिनाड़ा केन्द्र में दिनांक 14 से 28 सितम्बर तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । समारोह का उद्घाटन केन्द्र प्रभारी डा. एस. एस. एच. रिजवी के कर-कमलों से सम्पन्न हुआ । हिंदी पखवाड़ा के अन्तर्गत हिंदी श्रुतलेख, कथा, कविता, कहानी, हिंदी भाषण इत्यादि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया । विजयी प्रतिभागियों को समापन समारोह में पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया ।

कोलकाता केन्द्र

संस्थान के कोलकाता केन्द्र में दिनांक **14** से **20** सितम्बर तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया । इसके अन्तर्गत लेखन**,** भाषण**,** चुटकुले**,** कविता**,** गायन**,** अंताक्षरी इत्यादि प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें मेघालय**,** मणिपुर**,** बिहार**,** जम्मू कश्मीर**,** मध्य प्रदेश के प्रशिक्षार्थियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया । समापन समारोह में मुख्य अतिथि हिंदी समिति के अध्यक्ष डा. जी. एच. पैलान थे ।

होशंगाबाद केन्द्र

होशंगाबाद केन्द्र में भी हिंदी सप्ताह का आयोजन **14** से **20** सितम्बर तक किया गया। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि श्रीमती वासू जोशी**,** स्नातकोत्तर हिंदी प्राध्यापिका थी। हिंदी सप्ताह के दौरान भाषण**,** अंताक्षरी**,** पत्र लेखन**,** भजन-गीत आदि प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । समापन समारोह में विजयी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार प्रदान किया गया ।

भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर

हिंदी पखवाड़ा

संस्थान में 14 से 28 सितंबर तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। 14 सितंबर को उद्घाटन समारोह में डा0 रामजी मिश्र, केन्द्राध्यक्ष, आकाशवाणी, बरेली को मुख्य अतिथि एवं साहित्यकार डा0 मुरारी लाल सारस्वत, सेवानिवृत्त प्रधान वैज्ञानिक को विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया।

उद्घाटन समारोह के अवसर पर सभी के लिए एक हिंदी प्रश्न मंच का आयोजन किया गया। आमंत्रित अतिथियों ने कहा कि अब हिंदी राष्ट्र की सीमाओं से बाहर निकलकर अनेक देशों में बोली एवं समझी जाती है। विश्व में लगभग सभी प्रमुख विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। जिसमें विदेशी काफी रूचि ले रहे हैं। हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर वैज्ञानिकों, छात्रों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए अनेक प्रतियोगिताएं जैसे– टिप्पण आलेखन, निबन्ध, सुलेख, वाद–विवाद प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं । इनके अतिरिक्त हिंदी कम्प्यूटर टाइपिंग प्रतियोगिता एवं आशुलेखन प्रतियोगिता भी लिपिक वर्गीय कर्मचारियों के लिए आयोजित की गईं।

18 सितंबर को एक अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया जिसमें श्री संजय शुक्ला (कोटा,राज0), श्री राकेश बाजपेयी (लखनऊ), श्री सौरभ कान्त शर्मा (बहजोई, उ0प्र0), श्री धर्मेन्द्र जैन 'लवली' (दिल्ली), श्री बलराम श्रीवास्तव (किशनी मैनपुरी, उ0प्र0) एवं सुश्री प्रियंका शुक्ला (उन्नाव, उ0प्र0), डा0 राहुल अवस्थी (बरेली), ने कविता पाठ किया । इन कवियों के अलावा डा0 मुरारीलाल सारस्वत, श्री आनन्द गौतम जैसे स्थानीय कवियों ने भी कविता पाठ किया। हिंदी पखवाड़ा के समापन/पुरस्कार वितरण समारोह में दिनांक 28–09–2012 को शब्दावली परिचय प्रतियोगिता आयोजित की गई।

समापन के दिन रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली के माननीय कुलपति डा0 मुज्जमिल हक को मुख्य अतिथि एवं डा0 एन0एल0 शर्मा, उपमाहप्रबन्धक, के0सी0एम0टी0 को विशिष्ट अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया गया। विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना स्थान प्राप्त प्रतिभागियों को निदेशक एवं मुख्य अतिथि के कर–कमलों से पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र प्रदान किये गये। हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले चार निदेशालय, विभाग, सहयोगी अनुभाग एवं प्रशासनिक अनुभागों को शील्ड प्रदान की गई। समापन समारोह के अवसर पर प्रकाशित राजभाषा स्मारिका का विमोचन भी किया गया।

हिंदी कार्यशाला

संस्थान में दिनांक 12 मार्च, 2013 को एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्यशाला का विषय ''वैज्ञानिक तथा प्रशासनिक कार्यों में राजभाषा का क्रियान्वयन'' था। इस कार्यशाला के दौरान निम्नलिखित 5 महत्वपूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किए गए।

1. विज्ञान के 5 प्रमुख अनुसंधान– डा0 गया प्रसाद, निदेशक, भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर।
2. इज्जतनगर परिसर के 100 वर्ष– डा0 रमेश सोमवंशी, कार्यवाहक संयुक्त निदेशक (कैडराड)।
3. पशुचिकित्सा के शोध में वैज्ञानिक शब्दावलियों का महत्वः– डा0 मुरारी लाल सारस्वत, सेवानिवृत्त प्रधान वैज्ञानिक।
4. टिप्पण एंव आलेखन सम्बन्धी सावधानियांः– डा0 एन0 एल0 शर्मा, महाप्रबन्धक, खण्डेलवाल कालेज मैनेजमेंट एण्ड टैक्नोलोजी, बरेली।
5. भारतीय अंको का अन्तर्राष्ट्रीय रूपः– श्री राजेन्द्र कुमार, राजभाषा अधिकारी, पूर्वोत्तर रेलवे कार्यालय, इज्जतनगर।
6. हिंदी की तिमाही प्रगति रिपोर्ट में अंकित आंकड़ों का महत्वः– श्री बाबू लाल मीना, तकनीकी अधिकारी(हिंदी)

इस कार्यशाला में संस्थान के लगभग 125 प्रतिभागियों ने सहभागिता की जिनमें वैज्ञानिक, तकनीकी वर्ग, प्रशासनिक वर्ग के अधिकारी एवं कर्मचारी शामिल थे। सहभागिता के उपरान्त सभी प्रतिभागियों को निदेशक महोदय द्वारा प्रमाण पत्र प्रदान किये। इस कार्यशाला के आयोजन से संस्थान के वैज्ञानिकों/अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिंदी में कार्य करने की झिझक को दूर करने में सफलता प्राप्त हुई तथा राजभाषा में कार्य संपादित करने हेतु उनके अन्दर रूचि पैदा हुई।

उपलब्धियां

- आई.वी.आर.आई. की स्थापना महाराष्ट्र में इम्पीरियल बैक्ट्रोलोजिकल लेबोरेटरी के रूप में सन् 1889 हुई।
- प्रतिरक्षी जैविकों पर शोध, तकनीकी विकास व हस्तान्तरण, पेटेन्ट सम्बन्धी प्रक्रियाओं एवं पशु चिकित्सा विज्ञान में उच्च शिक्षा प्रदान।
- महत्वपूर्ण पशुधन एवं कुक्कुट रोगों के लिये बृहत युक्तियाँ या रणनीतियाँ बनाने का राष्ट्रीय केन्द्र बिन्दु।
- संस्थान ने पशुधन एवं कुक्कुट के लिए 50 से भी अधिक जीवन रक्षक वैक्सीन (रानीखेत रोग, रिन्डरपेस्ट एच.एस.ए एफ.एम.डी., पी.पी.आर., शूकर ज्वर, आई.बी.डी., बी.टी., बकरी/भेड़/ऊँट चेचक आदि के लिए) एवं रोग नैदानिक विकसित किये हैं।
- संस्थान में 111 वित्तपोषित शोध परियोजना, 33 सर्विस परियोजना, 04 अन्तर्राष्ट्रीय एवं 76 बाह्यीय वित्तपोषित परियोजना एवं 05 संविदा शोध/सलाहकारी परियोजनाओं को मिलाकर संस्थान वर्तमान में 229 परियोजनाएँ कार्य कर रही हैं।
- विश्व स्तर पर अपनी पहचान कायम रखते हुए संस्थान का मानद विश्वविद्यालय 22 विषयों में एम.वी.एस.सी., 19 विषयों में पी.एच.डी. एवं पशुचिकित्सा विज्ञान के 9 विषयों में राष्ट्रीय डिप्लोमा की डिग्रीयाँ प्रदान कर रहा है।
- संस्थान को ''पशुचिकित्सा विज्ञान शिक्षा में सर्वोत्तम संस्थान'' का दर्जा दिया प्राप्त है।
- स्कोपस इन्टरनेशनल डाटाबेस 2008–09 (इल्सवियर ग्रुप) द्वारा देश में सर्वोत्तम पशु चिकित्सा विज्ञान शिक्षा संस्थान की मान्यता एवं 31वां देश अत्यधिक उत्पादन संस्थान का दर्जा प्राप्त है।
- 'रिन्डरपेस्ट वैश्विक उन्मूलन' के लिए मुक्तेश्वर परिसर में स्मारक स्तम्भ की स्थापना करके का स्मरणीय उत्सव।
- आई.वी.आर.आई., इज्जतनगर परिसर का शताब्दी समारोह एवं संस्थान अपने 125वां वर्ष समारोह इज्जतनगर परिसर का शताब्दी समारोह माना रहा है।

गन्ना प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर

हिंदी पखवाड़ा

संस्थान में हिंदी पखवाड़े का आयोजन दिनांक 5.9.2012 से 17.9.2012 तक किया गया। पखवाड़े के दौरान निदेशक डॉ0 एन. विजयन नायर ने अपने अध्यक्षीय भाषण में हिंदी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए सभी कर्मचारियों से बेझिझक होकर अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने का आहवान किया। उन्होंने संस्थान में हो रहे हिंदी कार्यों का उल्लेख करते हुए और अधिक प्रयास करने पर बल दिया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अनन्त नारायण नन्दा, पोस्टमास्टर जनरल ने अपने भाषण में हिंदी भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला। कर्मचारियों के लिए आसानी से हिंदी में काम करने के लिए हिंदी अनुभाग द्वारा ''राजभाषा संदर्शिका'' पुस्तक को तैयार किया गया। इस पुस्तक का विमोचन मुख्य अतिथि और निदेशक महोदय के करकमलों द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।

हिंदी दिवस के दौरान हस्तलेखन प्रतियोगिता, हिंदी श्रुति लेख, हिंदी में अनुवाद और गीत गायन की प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थी। इन प्रतियोगिताओं में 35 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। इसके अलावा अस्थाई वर्ग के श्रमिकों एवं कर्मचारियों के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी आयोजित की गई थी। इसमें 54 अस्थाई वर्ग श्रमिकों ने भाग लिया । इन सभी विजेताओं को मुख्य अतिथि ने पुरस्कार बांटे। हिंदी में अधिकतम कार्य करने वाले अनुभागों और प्रशासनिक कर्मचारियों जो कार्यालय कार्य में अधिकतम हिंदी शब्दों को प्रयोग किया है, उन्हें इस अवसर पर पुरस्कृत किया गया ।

हिंदी कार्यशाला

गन्ना प्रजनन संस्थान में 22 जून को हिंदी कार्यशाला का आयोजन डॉ0 एन. विजयन नायर, निदेशक की अध्यक्षता में किया गया। श्री के.के. हमजा, वित्त एवं लेखा अधिकारी एवं नोडल अधिकारी (हिंदी) ने उपस्थित सभी कार्यालय सदस्यों एवं आमंत्रित अतिथि का स्वागत किया। डॉ0 एन. विजयन नायर ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा की संस्थान में हिंदी के प्रयोग में प्रगति हुई है किंतु इस ओर और ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। उन्होंने यह भी बताया की कर्मचारियों में हिंदी के प्रति अभिरूचि बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन राशि योजना भी लागू की गयी है। इस योजना के बाद अनेक कर्मचारियों ने हिंदी प्रयोग को बढ़ावा दिया है जो एक सराहनीय प्रयास है।

कार्यशाला में आमंत्रित श्री कावेट्टी रंगन, सहायक निदेशक (हिंदी), भारतीय संचार निगम लिमिटेड, कोयम्बटूर ने फाइल में हिंदी नोटिंग पर व्याख्यान दिया। 45 अधिकारी एवं कर्मचारियों ने कार्यशाला में भाग लिया। इसके अतिरिक्त संस्थान में 29 सितम्बर, 27 दिसंबर तथा 23 मार्च, 2013 को भी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

केंद्रीय कंद फसल अनुसंधान संस्थान, तिरूवनंतपुरम

हिंदी पखवाड़ा

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की सिफारिश के अनुसार 14 से 28 सितम्बर तक इस संस्थान में हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों और बच्चों ने निबंध लेखन, अनुवाद, भाषण, कविता–पाठ, खुला मंच, सुलेख तथा अंताक्षरी कार्यक्रमों में भाग लिया।

विविध हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार/प्रमाण सत्र, मुख्य अतिथि श्री ए सोमदत्तन, सेवानिवृत्त सहायक निदेशक (राजभाषा), आयकर कार्यालय, तिरूवनंतपुरम द्वारा वितरित किये गये। डॉ0 एस.के. चक्रवर्ती, निदेशक ने बैठक की अध्यक्षता की।

संस्थान में 27 मार्च, 2013 को ''हिंदी जागरूकता कार्यक्रम/टिप्पण और आलेखन'' पर एक दिन की हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई। डॉ0 एस.के. चक्रवर्ती, निदेशक और अध्यक्ष (रा.भा.) ने हिंदी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कार्यशाला का शुभारंभ किया। डॉ0 वी.एस. संतोष मित्र, वरिष्ठ वैज्ञानिक और संपर्क अधिकारी (रा0भा0) ने सभा का स्वागत किया। श्री ए. सोमदत्तन, सेवानिवृत्त सहायक निदेशक (रा0भा0), तिरूवनंतपुरम ने ''हिंदी जागरूकता कार्यक्रम/टिप्पण और आलेखन'' पर प्रशिक्षण दिया। कुल 49 प्रतिभागियों ने कार्यशाला में भाग लिया। प्रतिभागियों ने इस प्रकार की कार्यशालाओं को और अधिक संख्या में करने पर जोर दिया। श्रीमती टी. के सुधालता, तकनीकी अधिकारी (हिंदी) ने कार्यशाला का संचालन किया और सभी प्रतिभागियों को कार्यशाला से प्राप्त ज्ञान का उपयोग करने के लिए अनुरोध किया।

विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोड़ा

चेतना मास

संस्थान में 14 सितम्बर से 13 अक्टूबर तक 'हिंदी चेतना मास' का आयोजन किया गया। चेतना मास प्रारम्भ करते हुए संस्थान के निदेशक द्वारा सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने की अपील की गयी। माननीय कृषि मंत्री भारत सरकार द्वारा इस अवसर पर प्रेषित सन्देश को भी परिचालित किया गया। 'हिंदी चेतना मास' का मुख्य समारोह प्रक्षेत्र के सभागार में एक संगोष्ठी/कार्यशाला के रूप में सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ0 जगदीश चन्द्र भट्ट द्वारा की गयी। इस समारोह में आकाशवाणी अल्मोड़ा के कार्यकारी निदेशक श्री मनोहर सिंह बृजवाल मुख्य अतिथि तथा जिला शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान, अल्मोड़ा के प्रवक्ता एवं कवि व लेखक डॉ0 रमेश चन्द्र पाण्डे 'राजन' विशिष्ट अतिथि थे।

डॉ0 रमेश चन्द्र पाण्डे, 'राजन' द्वारा हिंदी की व्युत्पत्ति, मुसलमान कवियों द्वारा हिंदी को दिए गए योगदान सहित अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलनों की जानकारी दी तथा वैज्ञानिकों द्वारा हिंदी में किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की। मुख्य अतिथि ने इस बात पर सुखद आश्चर्य व्यक्त किया कि किस प्रकार हिंदी न जानने वाले वैज्ञानिक भी अपने शोध कार्यों को हिंदी भाषा के माध्यम से किसानों तक पहुंचा रहे हैं। उन्होंने कछुआ व खरगोश की दौड़ को प्रेरक प्रसंग बताते हुए हिंदी के प्रयोग में निरन्तरता बनाए रखने पर बल दिया। अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में निदेशक महोदय ने संगोष्ठी में व्यक्त किए गए विचारों को अत्यन्त लाभदायक व प्रेरणास्पद बताया तथा हिंदी की प्रगति के लिए इस प्रकार संगोष्ठियों के आयोजन पर बल दिया। इसके उपरान्त विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय रहे प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरित किए गए तथा हिंदीत्तर भाषी वैज्ञानिकों द्वारा हिंदी के प्रति उनके सकारात्मक दृष्टिकोण को देखते हुए सभी को स्मृति–चिन्ह भेंट किए गए।

राष्ट्रीय आर्किड अनुसंधान केन्द्र, गंगटोक

हिंदी सप्ताह

केन्द्र में 14 से 20 सितंबर तक हिंदी सप्ताह आयोजित किया गया तथा इस दौरान कविता पाठ, वाद–विवाद, अंताक्षरी, टिप्पणी, मसौदा लेखन, श्रृतलेखन, प्रशासनिक शब्दावली, निबन्ध, पत्र लेखन तथा अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया । विभिन्न कार्यक्रमों का संयोजन डॉ श्यामली चक्रवर्ती, डॉ आर पी पंत, श्री अजेन लामा तथा श्री नोनी गोपाल द्वारा किया गया। 20 सितम्बर को सप्ताह के समापन समारोह का आयोजन किया गया ।

इस केन्द्र में हिंदी कार्यशाला 21 अप्रैल को आयोजित की गई जिसके अंतर्गत राजभाषा से संबंधित विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई और कर्मचारियों की हिंदी में कार्य क्षमता बढ़ाने के लिए विचार विमर्श किया गया। कार्यशाला में श्री बीरेंदर छेत्री, निदेशक, नेशनल इन्फार्मेटिक सेंटर, गंगटोक, श्री ओ.पी. सिंह, श्री घनश्याम, अध्यापक, जवाहर नवोदय विद्यालय, पाक्योंग, ने भाग लिया।

संस्थान को वर्ष 2012–13 के लिए, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा 29 जनवरी को राजभाषा कार्यान्वयन के लिए सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया।

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ

हिंदी पखवाड़ा

संस्थान में हिंदी पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं, कवि सम्मेलन, कार्यशाला तथा व्याख्यान आदि कार्यक्रमों को आयोजित किया गया। हिंदी पखवाड़ा के दौरान हिंदी अनुवाद, संस्थान के छाया चित्र पर स्लोगन प्रतियोगिता, टिप्पणी, निबंध, अंत्याक्षरी प्रतियोगिता, आशुभाषण, श्रुतलेख, हिंदी टंकण, संस्थान की गतिविधियों एवं उपलब्धियों पर पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण, हिंदी में शोध पत्र का प्रस्तुतीकरण, काव्य पाठ, एवं अखिल भारतीय कवि सम्मेलन जैसे कार्यक्रमों को आयोजित किया गया। इसी दौरान हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें राजभाषा नियम अधिनियम, यूनीकोड का प्रयोग एवं वर्तनी का मानकीकरण पर चर्चा तथा कम्प्यूटर पर हिंदी टंकण को यूनीकोड के माध्यम से प्रदर्शित किया गया। संस्थान में विभिन्न कम्प्यूटरों पर यूनीकोड सॉफ्टवेयर भी ए.के.एम.यू. के सहयोग से डाला गया। 17 सितम्बर को डॉ0 एस.के. तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, लखनऊ द्वारा हिंदी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन पर व्याख्यान किया गया। हिंदी कविता, गीत, साहित्य की दृष्टि से चौपाई एवं पदो ंके प्रयोग से तीन चक्र में अंत्याक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन सम्पन्न हुआ। अंत्याक्षरी प्रतियोगिता में विभिन्न शब्दों के पर्यायवाची, विलोम एवं प्रारम्भ तथा मध्य में शब्दों को समाविष्ट कर हिंदी भाषा के प्रति खेल–खेल में ही रोचकता एवं ज्ञान वृद्धि प्रदान करने का प्रयास किया गया, जिससे भाषा के ज्ञान में भी वृद्धि हों। दिनांक 28 सितम्बर को अखिल भारतीय हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिससे श्री लटूरी लटठ फिरोजाबाद से, श्री पदम अलबेला हाथरस से, श्रीमती सुनैना त्रिपाठी, तथा श्री अखिलेश द्विवेदी इलाहाबाद से, श्री राकेश बाजपेई, डॉ0 आर.पी. सिंह एवं श्री देवल आशीष लखनऊ ने काव्य पाठ किया । विभिन्न प्रतियोगिताओं में संस्थान के कुल 207 प्रतिभागियों ने भाग लिया इसके अतिरिक्त 28 अधिकारियों एवं कर्मचारियों के कार्यशाला में प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा 136 पुरस्कार वितरित किए गये।

हिंदी कार्यशाला

- संस्थान के द्वारा दिनांक 19 सितंबर को एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के 28 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया जिसमें राजभाषा नियम अधिनियम, कम्प्यूटर में यूनिकोड का प्रयोग एवं हिंदी वर्तनी का मानकीकरण विषय पर प्रशिक्षण दिया गया।
- संस्थान के द्वारा दिनांक 12 दिसंबर को आयोजित कार्यशाला में कम्प्यूटर में यूनिकोड के प्रयोग एवं 'आयुर्वेद': स्वस्थ जीवन का आधार विषय पर प्रशिक्षण दिया गया जिसमें संस्थान के 23 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया ।
- संस्थान के द्वारा दिनांक 28 मार्च 2013 को एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के 134 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया जिसमें हिंदी साहित्य में हास्य कविता का महत्व पर भाषण दिया गया। कार्यशाला में यूनिकोड के प्रयोग पर भी चर्चा की गई।

उपलब्धियां

- संस्थान के प्रयास से उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा जो कि केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुशंसित 26 गन्ने की प्रजातियों को उत्तर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों के लिए अनुशंसित करवाने की अधिसूचना जारी की गई। संस्थान से इस वर्ष CoLK 9709 प्रजाति उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संस्तुत की गई तथा इसकी अधिसूचना जारी हुई।
- शामली एवं उन्न चीनी मिल क्षेत्रों में गन्ने में सफेद गिडार की रोकथाम के लिए सामूहिक रूप से फेरोमोन ट्रैप लगवाए गये।
- संस्थान द्वारा गन्ना कटाई संयत्र का विकास तथा 27 अप्रैल, 2012 को लगभग 80 विभिन्न चीनी मिलों एवं विकास करने वाले प्रतिनिधियों उद्योगपतियों के साथ बैठक कर आने वाले समय में गन्ना हार्वेस्टर के विकास एवं उपयोगिता पर प्रारूप विकसित किया गया। गन्ना उत्पादन तकनीक के मशीनीकरण पर गोष्ठी।
- कृषि मेला – 2012 (मई 14–18, 2012) क्षेत्र सूचना द्वारा आयोजित संस्थान के स्टॉल को तृतीय पुरस्कार तथा भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा आयोजित कृषि मेला में (दिनांक मार्च 06–08, 2013) में उत्तम स्टॉल का पुरस्कार दिया गया।
- श्रीलंका सरकार के उच्च स्तरीय प्रतिनिधि मंडल जिसके अध्यक्ष श्री रेजीनाल्ड मूरे, मंत्री (निर्यात वृद्धि फसल), श्रीलंका सरकार, द्वारा संस्थान का भ्रमण किया गया एवं श्रीलंका में गन्ना की उच्च तकनीक के प्रदर्शन/प्रशिक्षण पर चर्चा हुई।
- गन्ना उत्पादन तकनीक एवं प्रबंधन पर मिल/गन्ना विकास अधिकारियों के लिए तीन सप्ताह का प्रशिक्षण सत्र (जुलाई 1–12, 2012) आयोजित किया गया। गोण्डा के कृषकों के लिए संस्थान में मार्च 13–16, 2013 में 4 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- संस्थान की राजभाषा पत्रिका इक्षु को द्वितीय पुरस्कार, किसान ज्योति को तृतीय पुरस्कार, संस्थान को हिंदी में कार्य करने के लिए चतुर्थ पुरस्कार एवं संस्थान से नामित दो प्रतिभागियों श्री ब्रहम प्रकाश एवं श्री सुभाष चंद्र जायसवाल जी को निबंध प्रतियोगिता में क्रमशः तृतीय एवं चतुर्थ पुरस्कार नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा प्राप्त हुआ है।

चावल अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद

हिंदी सप्ताह

चावल अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद द्वारा 14 सितम्बर से 21 सितम्बर, तक हिंदी सप्ताह समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रश्नोत्तरी (क्विज) प्रतियोगिता, तत्काल भाषण प्रतियोगिता और चावल अनुसंधान निदेशालय में अपने कार्यक्षेत्र से संबंधित गतिविधियों की हिंदी में अभिव्यक्ति प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में निदेशालय के वैज्ञानिकों और कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

14 सितम्बर को परियोजना निदेशक की अध्यक्षता में हिंदी सप्ताह समारोह का उद्घाटन किया गया। निदेशालय के हिंदी अधिकारी डॉ0 वेंकटेश्वर्लु ने अध्यक्ष और उपस्थित वैज्ञानिकों और कर्मचारियों का स्वागत किया। उन्होंने अपने

स्वागत भाषण में बताया कि 14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा के द्वारा हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया गया, अतः हर वर्ष सभी केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों में उस दिन को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। उस दिन से आरंभ करके हिंदी सप्ताह, पखवाड़ा या चेतना मास मानते हैं। इस प्रकार हिंदी में काम करने के माहौल बनाने का प्रयास किया जाता है। उन्होंने उपलब्ध प्रोत्साहन योजनाओं की जानकारी भी दी और सभी को उनका फायदा उठाने का सुझाव दिया।

संस्थान में आयोजित हिन्दी सप्ताह समारोह के आयोजन का दृश्य

21 सितम्बर को हिंदी सप्ताह समापन समारोह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर हिंदी अधिकारी डॉ0 डी. वेंकटेश्वर्लु ने हिंदी में काम करने की आवश्यकता तथा उपलब्ध प्रोत्साहन योजनाओं की जानकारी दी और हिंदी में काम करने की अपील की तथा विगत वर्ष के दौरान सम्पन्न हिंदी की गतिविधियों की रिपोर्ट दी। अध्यक्ष महोदय डॉ0 बी.सी. विरक्तमठ ने कर्मचारियों की अधिक संख्या में उपस्थिति पर अपनी खुशी व्यक्त की। उन्होंने बताया कि हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। उन्होंने अपने अनुभव के बारे में बताते हुए कहा कि लोग जब तक बहुत जरूरत नहीं होती है तब तक कोई नई भाषा नहीं सीखते हैं । उन्होंने कहा कि सामान्य स्थिति में सीखेंगे तो आगे चलकर उन भाषाओं का हम फायदा उठा सकते हैं। अंत में हिंदी सप्ताह समारोह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि के करकमलों द्वारा पुरस्कार वितरित किये गये।

भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी

हिंदी सप्ताह

भारत सरकार, गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के आदेशों के अनुरूप संस्थान में दिनांक 14–20, सितम्बर तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया। जिसमें अधिकारियों/कर्मचारियों के उत्साहवर्धन एवं हिंदी के प्रति जागरूकता लाने हेतु विभिन्न प्रतियोगिताएं/कार्यक्रम आयोजित किए गए। जिनकी रूपरेखा निम्नवत रही। हिंदी सप्ताह कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान के सम्मेलन कक्ष में भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली के सहायक महानिदेशक डॉ0 आर.पी. दुआ के मुख्य आतिथ्य में एवं संस्थान के निदेशक

डॉ0 पी.के. घोष की अध्यक्षता में दीप प्रज्जवलन के साथ सम्पन्न हुआ। डॉ0 आर.बी. भास्कर, वरि0 वैज्ञानिक एवं प्रभारी राजभाषा ने हिंदी में वैज्ञानिक कार्यों की महत्वता पर प्रकाश डालते हुए उपस्थित सभी जनों का स्वागत अपने स्वागत भाषण से किया। इसके पश्चात् संस्थान के निदेशक डॉ0 पी.के. घोष ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को अपना अधिक से अधिक शासकीय कार्य हिंदी में करने की शपथ ग्रहण करवाई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ0 आर.पी. दुआ ने अपने संबोधन में कहा कि इस बात पर सुखद अनुभूति होती है कि भारतीय कृषि अनुसंधान में व इसके संस्थानों में निरंतर राजभाषा हिंदी के कार्यों में बढ़ोतरी देखने को मिल रही है। उन्होंने संस्थान में हिंदी में किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा करते हुए इसमें और अधिक गति लाने पर बल दिया। अध्यक्षीय उद्बोधन में संस्थान के निदेशक डॉ0 पी.के. घोष ने सभी अधिकारियों व कर्मचारियों से कहा कि हमारा संस्थान हिंदी भाषी 'क' क्षेत्र में है, हमें अपना अधिक शासकीय कार्य हिंदी में करते हुए राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित किए गए लक्ष्यों को प्राप्त करना है। संस्थान के सहायक निदेशक राजभाषा श्री केशव देव सभी उपस्थित जनों का आभार व्यक्त किया।

समापन समारोह में हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतियोगियों को, प्रतियोगिताओं के निर्णायकों को एवं वर्षभर हिंदी में सराहनीय कार्य करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को नकद पुरस्कार, स्मृति चिन्ह प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया। अध्यक्षीय संबोधन में संस्थान के निदेशक डॉ0 पी.के. घोष ने पुरस्कृत अधिकारियों और कर्मचारियों के कार्यों की सराहना करते हुए कार्यालयीन कामकाज और अधिक से अधिक हिंदी में करने हेतु सभी को प्रेरित करते हुए कहा कि हिंदी हमारे संघ की राजभाषा है, हमें इसमें कार्य करके इसका सम्मान बढ़ाना चाहिए। सभी विभाग/अनुभाग इकाई अपना अधिक से अधिक मूल कामकाज हिंदी में ही करें। हिंदी सप्ताह के कार्यक्रमों का संचालन सहायक निदेशक (रा0भा0) श्री केशव देव ने किया। प्रभारी, राजभाषा डॉ0 आर.बी. भास्कर ने संस्थान के राजभाषा अनुभाग के कार्यों की सराहना करते हुए सभी का आभार व्यक्त किया।

संस्थान में 13 जून को हिंदी के प्रगामी प्रयोग हेतु तकनीकी अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन संस्थान के कार्यवाहक निदेशक डॉ0 एस.ए. फारूकी ने किया। उन्होंने संघ की राजभाषा नीति व सरकारी कामकाज में उसके महत्व और आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमें बिना किसी संकोच के सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग करना है। साथ ही कार्यशाला की सफलता की कामना करते हुए उन्होंने कहा कि निश्चित ही ऐसी कार्यशालाओं के माध्यम से अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने हेतु प्रेरणा मिलेगी। इसी क्रम में डॉ0 आर.बी. भास्कर, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभारी, राजभाषा अनुभाग ने कार्यशाला में भाग लेने वाले प्रतिभागियों व उपस्थित जनों का स्वागत करते हुए संविधान में राजभाषा हिंदी के प्रावधानों पर प्रकाश डाला। कार्यशाला चार सत्रों में विभाजित की गई थी। इसमें व्याख्यान हेतु चार वक्ताओं को आमंत्रित किया गया था। पूर्वान्ह में प्रथम सत्र में श्री लक्ष्मण शिवहरे, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी एवं सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, उत्तर मध्य रेल, झांसी को आमंत्रित किया गया था जिन्होंने राजभाषा नीति व सरल हिंदी में पत्राचार के बारे में प्रकाश डाला। साथ ही उन्होंने प्रतिभागियों की राजभाषा नीति से संबंधित जिज्ञासाओं का भी समाधान किया। द्वितीय सत्र में संस्थान के वरि0 तक0 अधि0 श्री प्रमोद कुमार द्विवेद्धी ने तकनीकी कार्यों में हिंदी के प्रयोग पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। अपरान्ह में कार्यशाला के तृतीय सत्र में संस्थान से डॉ0 सुनील कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने हिंदी भाषा के महत्व पर अपना वक्तव्य दिया। तदोपरांत चतुर्थ सत्र में सुश्री नीति शास्त्री, प्रवक्ता हिंदी, केन्द्रीय विद्यालय, झांसी ने शासकीय कामकाज में हिंदी

के प्रयोग पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंनेय कम्प्यूटरों पर यूनिकोड पर काम करना कितना आसान और उसके महत्व पर भी प्रकाश डाला। कार्यशाला का संचालन सहायक निदेशक (रा0भा0) श्री केशव देव ने किया।

- उन्नत नीम किस्मों का कृषि वन चरागाह पद्धति के अन्तर्गत मूल्यांकन।
- ग्वार का स्टेशन ट्रायल।
- नीम आधारित वन चरागाह पद्धति।
- खेजड़ी आधारित वन चरागाह पद्धति।
- अर्द्ध शुष्क परिस्थिति में मृदा नमी संरक्षण उपायों का विभिन्न चारा पद्धतियों पर प्रभाव।
- सेन्क्रस घासों में गुणवत्ता बीज का उत्पादन।
- तितली मटर में बीज परीक्षण तरीकों (प्रोटोकोल) का मानकीकरण।

राष्ट्रीय मिथुन अनुसंधान केन्द्र, झरनापानी

हिंदी सप्ताह

राष्ट्रीय मिथुन अनुसंधान केन्द्र, झरनापानी, नागालैंड में दिनांक 11 से 17 सितम्बर तक हिंदी सप्ताह का आयोजन संयुक्त रूप से किया गया। हिंदी सप्ताह का उद्‌घाटन डॉ0 चंदन राजखोवा एवं पूर्वोत्तर पर्वतीय क्षेत्र अनुसंधान परिसर, झरनापानी केंद्र की अनामिका शर्मा की उपस्थिति में किया गया। इस समारोह में रा. मि. अनु. केन्द्र एवं पूर्वोत्तर पर्वतीय क्षेत्र अनुसंधान दोनों संस्थानों के सभी अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे। इस सप्ताह के दौरान संस्थान में हिंदी भाषा के प्रचार एवं प्रसार के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें परिसर के बालक एवं बालिकाओं के लिए भी कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन सभी प्रतियोगिताओं में न सिर्फ कर्मचारी अपितु अधिकारियों ने भी उत्साह पूर्वक हिस्सा लिया। सप्ताह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में स्मरण शक्ति, हिंदी अनुवाद, हस्त लेखन, टिप्पणी एवं प्रारूपलेखन, निबंध लेखन, तात्कालिक भाषण, समाचार पत्र वाचन, वाद विवाद, अंताक्षरी आदि सम्मिलित किए गए।

समापन समारोह 17 सितम्बर को रा.मि.अनु. केन्द्र संस्थान के सम्मेलन कक्ष में निदेशक डॉ0 चंदन राजखोवा एवं आई.सी.ए.आर संस्थान के संयुक्त निदेशक डॉ0 विद्युत डेका की उपस्थित में किया गया। इस अवसर पर संयुक्त निदेशक ने उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा प्रयोग की ओर विशेष रूप से प्रोत्साहित करते हुए कहा कि, हिंदी सप्ताह के सभी कार्यक्रम हिंदी को बढ़ावा देने के लिए आयोजित किये जाते हैं। इनसे हमें हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। इस अवसर पर डॉ0 चंदन राजखोवा ने कहा कि हिंदी हमारी राजभाषा है, अतः हम सभी को कार्यालय के दैनिक कार्यों में इसका प्रयोग करना चाहिए। समापन समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को निदेशक डॉ0 चंदन राजखोवा एवं संयुक्त निदेशक डॉ0 विद्युत डेका द्वारा पुरस्कार प्रदान किया गया। अंत में संस्थान के निदेशक ने हिंदी सप्ताह के सफल आयोजन पर सभी को बधाई दी एवं आशा व्यक्त की कि संस्थान में राजभाषा के उपयोग में प्रगति आयेगी।

वैज्ञानिक उपलब्धियां

1. मिथुन भ्रूण के हिमशीतलन की विधि को मानकीकृत करके एक मिथुन बछड़े (मोहन) का संस्थान के मिथुन फार्म में 12 मई, 2012 को जन्म हुआ।
2. प्राकृतिक रूप से मिथुन बछड़ों में पाये जाने वाले पेट एवं आंख के परजीवी रासायनिक एवं आयुर्वेदिक परजीवी रोधी दवा की क्षमता का अध्ययन किया गया।
3. नागालैंड, अरूणाचल एवं मिजोरम के करीब 16 गांवों में 750 मिथुन पशुओं में विभिन्न सामान्य बीमारियों को हिस्टोपेथोलोजिकल अध्ययन द्वारा पहचाना गया।
4. संस्थान के विस्तार कार्यक्रम गतिविधि के अंतर्गत राज्य पशु चिकित्सा एवं पशु स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से खांगलांग गांव, चंपाई राज्य मिजोरम, के मिथुन मालिकों में मिथुन पालने के लिए जागरूकता पैदा करने, संस्थान द्वारा विकसित तकनीक संबंधित जानकारी एवं मिथुन के टीकाकरण का आयोजन किया गया।
5. मिथुन के विशेष संदर्भ में किसानों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन खोनुमागांव में किया गया।
6. मिथुन दूध की गुणवत्ता, संघटन का अध्ययन किया गया तथा दूध के मुख्य प्रोटीन एवं घटकों की आनुवांशिक विविधता के अनुरूप मिथुन दूध से 'चीज' बनाने की प्रायोगिक प्रक्रिया को सफलतापूर्वक किया गया।
7. गुणसूत्र बिंदू की स्थिति के आधार पर मिथुन एवं गाउर में पर्याप्त साइटोजेनेटिक होमोलोजी (आकारिकी संख्या एवं गुणसूत्र बैंडिंग नमूना) पायी गयी। एफआईएसएच तकनीक द्वारा मिथुन का पैतृक संबंधित प्रजातियों के साथ केरियोटाईप का इवोल्यूशन स्थापित करने के लिए प्रारंभिक अध्ययन शुरू किया गया।
8. मिथुन के कप्पा केसीन घटकीय जीन अनुक्रमण एवं जीन बैंकों में उपस्थित अन्य संबंध प्रजातियों के अनुक्रमण का इस्तेमाल करते एक फाइलोंजेनेटिक पेड़ का निर्माण किया गया। इसके अनुसार कि मिथुन अन्य गोपशु प्रजातियों की अपेक्षा *बायसन बोनासस* तथा *बोस टोरस* के अधिक निकट है।
9. तीस गोपशु माइक्रोसेटेलाइट मार्कर जो कि (MoDAD) एफएओ की सूची के आधार पर मिथुन एवं गाउर में कुल 135 नमूने (120 मिथुन 7 गाउर तथा 8 थो–थो गाय) में माइक्रोसेटेलाइट जीनो टाइपिंग की गई।
10. मिथुन के आहार में व्यय अनाज का उपयोग कर बनाये गये फीड ब्लॉक बेहतर राशन साबित हुआ है।

केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल

केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल में 3 से 14 सितम्बर तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। पखवाड़े का उद्घाटन 3 सितम्बर को संस्थान के निदेशक डॉ0 दिनेश कुमार शर्मा द्वारा दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ किया गया। केन्द्रीय कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक द्वारा प्रेषित संदेश पढ़कर सुनाये गये। कृषि अनुसंधान में राजभाषा हिंदी को प्रोत्साहित करने के लिए हिंदी पखवाड़े के दौरान 11 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें कविता पाठ, निबंध लेखन, हिंदी टंकण, आवेदन पत्र लेखन, पोस्टर प्रदर्शनी, तत्काल भाषण शामिल हैं। सभी प्रतियोगिताओं में बड़ी संख्या में अधिकारियों

एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह 14 सितम्बर को सम्पन्न हुआ जिसमें श्री शंशाक आनंद, पुलिस अधीक्षक, करनाल मुख्य अतिथि थे। उन्होंने कहा कि भारत की प्राचीन भाषा संस्कृत है और इसी से हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का जन्म हुआ है। हिंदी एक सशक्त भाषा है जिसमें अभिव्यक्ति की महत्वपूर्ण क्षमता है। उन्होंने संस्थान के वैज्ञानिकों की पोस्टर प्रदर्शनी देखी और कृषि अनुसंधान में हिंदी को बढ़ावा देने के संस्थान के प्रयास की सराहना की। अपने अध्यक्षीय भाषण में संस्थान के निदेशक डॉ0 दिनेश कुमार शर्मा ने पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई दी तथा सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपील की कि संस्थान किसानों के लिए काम करता है अतः किसानों की लोकप्रिय भाषा में अधिक से अधिक लेखों को प्रकाशित किया जाये। मुख्य अतिथि ने सभी विजेताओं को पारितोषिक प्रदान किए और फार्म अनुभाग को वर्ष में सर्वाधिक काम हिंदी में करने के लिए चल बैजयन्ती से सम्मानित किया।

हिंदी कार्यशालाएं

- लवणीय तथा क्षारीय भूमि सुधार एवं प्रबंधन विषय पर कार्यशाला का आयोजन
- कृषि वानिकी विकास में स्थानीय लोगों की सहभागिता विषय पर कार्यशाला का आयोजन
- जलनिकास प्रणाली पर कृषक जागरूकता दिवस का आयोजन
- राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन

भारतीय मृदा लवणता एवं जल गुणवत्ता सोसायटी तथा केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान करनाल द्वारा संयुक्त रूप से दिनांक 13–14 मार्च, 2013 को ''कृषि एवं पर्यावरणः अवसर व चुनौतियां'' विषय पर राजभाषा हिंदी में राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गयी। इस दो दिवसीय संगोष्ठी में कृषि एवं पर्यावरण से जुड़े विभिन्न विषयों जैसे – मृदा एवं जल संसाधन प्रबंधन, फसल, उद्यान एवं कृषि वानिकी प्रबंधन, पशु पालन, दुग्ध उद्योग एवं मछली पालन, कृषि अभियांत्रिकी, खाद्य प्रसंस्करण एवं कृषि आधारित लधु उद्योग तथा पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन एवं ऊर्जा स्रोत पर वैज्ञानिकों, योजनाकारों व प्रगतिशील किसानों द्वारा विचार–विमर्श किया गया। संगोष्ठी में कुल 170 प्रतिभागियों ने भाग लिया। संगोष्ठी का उद्घाटन कृषि वैज्ञानिक चयन मण्डल नई दिल्ली के अध्यक्ष डॉ0 गुरबचन सिंह द्वारा किया गया।

पुरस्कार/नगर राजभाषा समिति/निरीक्षण

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 55वीं छमाही बैठक का आयोजन 27.06.2012 को राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल में हुआ, इसमें संस्थान को राजभाषा हिंदी में उल्लेखनीय कार्य करने हेतु तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 27.06.2012 को राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल में सम्पन्न हुई छमाही बैठक में संस्थान के निदेशक, प्रशासनिक अधिकारी, प्रशासनिक अधिकारी (कार्यकारी) एवं राजभाषा प्रभारी/अधिकारी ने भाग लिया।
- राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 26.12.2012 को सम्पन्न छमाही बैठक में संस्थान के निदेशक ने भाग लिया।

राजभाषा हिंदी संबंधी कार्यों का निरीक्षण

- भारत सरकार गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय –I (दिल्ली) के अनुसंधान अधिकारी (कार्यान्वयन) एवं कार्यालयाध्यक्ष श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा द्वारा 26.06.2012 को संस्थान द्वारा किए जा रहे राजभाषा हिंदी संबंधी कार्यों का निरीक्षण किया गया।

केन्द्रीय तम्बाकू अनुसंधान संस्थान, राजमुन्द्री

संस्थान में दिनांक 14 सितंबर से 29 सितंबर तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस दौरान अंग्रेजी या तेलुगु से हिंदी में अनुवाद, हिंदी से अंग्रेजी या तेलुगु में अनुवाद, वाद–विवाद, हिंदी में श्रुतलेखन, अंग्रेजी या तेलुगु शब्दावली से हिंदी में अनुवाद, हिंदी में टिप्पण तथा प्रारूप लेखन, प्रश्न मंच प्रतियोगिता (सिर्फ समूह घ कर्मचारियों के लिए), हिंदी काव्य प्रतियोगिता, हिंदी में आशु–भाषण, हिंदी गीतों व गजल आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं। इन प्रतियोगिताओं में संस्थान के वैज्ञानिक, तकनीकी एवं प्रशासनिक अधिकारियों और कर्मचारियों ने काफी संख्या में भाग लिया। संस्थान के निदेशक डा0 टी.जी.के. मूर्ति ने समापन समारोह की अध्यक्षता की। मुख्य अतिथि के रूप में चेबोलु शेषागिरि राव उपस्थित थे । श्री एस.सी.शीट प्रशासनिक अधिकारी, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने स्वागत भाषण दिया। श्री के. कृष्ण मूर्ति, प्रभारी हिंदी कक्षा ने माननीय कृषि मंत्री श्री शरद पवार तथा सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग और महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली से प्राप्त संदेशों को पढकर सुनाया और अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की ।

निदेशक ने अपने संबोधन में सभी अधिकारियों व कर्मचारियों से हिंदी में अधिक कार्य करने की अपील की। मुख्य अतिथि चेबोलु शेषगिरि राव ने अपने संबोधन में कहा कि संपर्क भाषा और देश की एकता, विकास व प्रगति के लिए हिंदी बहुत उपयोगी है। उन्होंने पखवाडे के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को क्रमशः प्रथम, द्वितीय पुरस्कार और चार से अधिक प्रतियोगिताओं में भाग लेने वालों को संत्वना पुरस्कार से सम्मानित किया।

राष्ट्रीय कृषि आर्थिकी एवं नीति अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली

केन्द्र में 14 से 21 सितम्बर तक राजभाषा सप्ताह का आयोजन किया गया इस दौरान कार्यशालाओं एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन केन्द्र के निदेशक डा0 रमेश चन्द ने 14 सितम्बर को किया। उपस्थित लोगों ने ''समाजिक परिवर्तन में सोशल नेटवर्किंग साइट्स की भूमिका'' विषय पर पक्ष/विपक्ष में विचार रखे। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य हिंदी में सरकारी काम–काज करने हेतु अधिकारियों एवं कर्मचारियों की झिझक को दूर करना एवं हिंदी में अपने विचार प्रस्तुत करना था। हिंदी भाषियों को प्रोत्साहन देने के लिए उन्हें स्वेच्छानुसार विषय पर विचार प्रस्तुत करने को कहा गया जिससे उनमें हिंदी के प्रति रूचि बढ़े। हिंदी में कार्य कुशलता एवं दक्षता परीक्षण के लिये ''भारतीय कृषि में आनुवंशिक रूप से संशोधित फसलों की भूमिका'' विषय पर निबन्ध एवं हिंदी अनुवाद एवं श्रुत लेखन प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिनमें वैज्ञानिको, अधिकारियों, कर्मचारियों ने अधिक से अधिक संख्या में भाग लिया। सभी कार्यशालाओं एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन एवं संचालन श्री प्रेम नारायण तकनीकी अधिकारी एवं सचिव राजभाषा ने किया। कार्यशालाओं एवं प्रतियोगिताओं को रोचक बनाने के लिये उन्होंने उस समय की ज्वंलत समस्याओं पर विशेष ध्यान दिया एवं हिंदी कार्यशाला की महत्ता एवं इससे होने वाले लाभ के बारे में लोगों को बताया।

समापन समारोह में 21 सितम्बर को कविता पाठ एवं पुरस्कार वितरण का आयोजन केन्द्र के निदेशक डा0 रमेश चन्द की अध्यक्षता में किया गया । कार्यक्रम में डा0 एच.एस. गौड संयुक्त निदेशक अनुसंधान, भारतीय

कृषि अनुसंधान संस्थान मुख्य अतिथि थे। केन्द्र के राजभाषा सचिव श्री प्रेम नारायण ने हिंदी सप्ताह के दौरान हुए कार्यक्रमों पर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की एवं अपना व्याख्यान राजभाषा प्रबंध कार्यान्वयन एवं भारत सरकार की राजभाषा नीति एवं नियमों की विशेष जानकारी दी। विभिन्न प्रतिभागियों ने अपनी स्वरचित एवं अन्य रचित कविताओं को प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि ने कविताओं का स्तर बहुत अच्छा बताया एवं उन्होंने हिंदी को बढ़ावा देने के लिए कहा कि ऐसे कार्यक्रम एवं कार्यशाला प्रत्येक महीने किए जाने की सलाह दी । मुख्य अतिथि एवं केन्द्र के निदेशक महोदय ने विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये। केंद्र के निदेशक ने समस्त वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने का अनुरोध किया एवं प्रोजेक्ट प्रतिवेदन की कार्यकारी सारांश हिंदी में प्रकाशित किए जाने का सुझाव दिया ताकि केन्द्र के अनुसंधानों को लोकप्रिय बनाने एवं सरल भाषा में किसानों को अनुसंधान का लाभ मिल सके।

भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर

भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान में दिनांक 29 सितम्बर को हिंदी दिवस मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डा0 ना. नटराजन ने की तथा ब्रह्मानन्द डिग्री कालेज, कानपुर के प्राचार्य डा0 विवेक द्विवेदी इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। अपने उद्बोधन में डा0 द्विवेदी ने कहा कि हिंदी इस समय पूरे देश में समझी और बोली जाती है और राष्ट्रीय सम्पर्क सूत्र की महती भूमिका निभा रही है। उन्होंने कहा कि हिंदी अपनी सरलता और सहज बोधगम्यता के कारण ही जीवन के हर क्षेत्र में व्यापक स्तर पर उपयोग की जा रही है। सभी क्षेत्रों में हिंदी की सफलता का परचम लहरा रहा है। संस्थान के निदेशक डा0 नटराजन ने कहा कि हिंदी दिवस के आयोजन से हम हिंदी के प्रति अपना सम्मान और निष्ठा व्यक्त करते हैं और हिंदी के उत्थान के लिए संकल्प लेते हैं। उन्होंने वैज्ञानिकों का अवाहन किया कि नई तकनीकी जानकारी किसानों तक उन्हीं की भाषा में पहुंचाने का सतत प्रयास करें और हिंदी के नये प्रकाशनों पर बल दिया। अतिथियों का स्वागत संस्थान की राजभाषा समिति के सचिव श्री दिवाकर उपाध्याय ने किया और संस्थान में राजभाषा की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने संस्थान की राजभाषा पत्रिका दलहन आलोक तथा हिंदी के चार अन्य नये प्रकाशनों ''वार्षिक प्रतिवेदन'', ''काबुली चना की उन्नत खेती'', ''दलहन फसलों के प्रमुख कीट एवं व्याधियों का समेकित प्रंबन्धन'' और ''कृषक भागीदारी द्वारा मसूर का बीज उत्पादन'' का विमोचन किया।

पशु–रोग संवीक्षण एवं निगरानी परियोजना निदेशालय, बेगंलुरु

परियोजना निदेशालय, पशु–रोग संविक्षण एवं निगरानी में 14 से 21 सितम्बर के दौरान हिंदी सप्ताह में आशुभाषण, निबंध लेखन, आवेदन पत्र लेखन तथा भाषान्तरण, प्रश्नोत्तरी, वाद–विवाद तथा गायन आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर

केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर में 14 से 21 सितम्बर तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया। हिंदी सप्ताह के उद्‌घाटन अवसर पर संबोधित करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. सैयद मोहम्मद खुर्शीद नकवी ने संस्थान में कार्यरत सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों का आह्वान करते हुए कहा कि राजभाषा के विकास से ही हमारा विकास जुड़ा हुआ है। उन्होंने सभी से एवं विशेष रूप से वैज्ञानिकों से अनुरोध किया कि संस्थान द्वारा किए जा रहे अनुसंधानों के आधार पर जो नवीनतम तकनीकें विकसित की गई हैं, उन्हें भेड़ एवं खरगोश पालकों तक पहुँचाने का सबसे आसान तरीका यह है कि उन तकनीकों से संबंधित सभी जानकारियाँ हिंदी में पम्फलेट, फोल्ड़र अथवा तकनीकी बुलेटिन के रूप में प्रकाशित की जाएँ ताकि भेड़ पालक एवं

किसान भाई उन तकनीकों का अधिक से अधिक लाभ उठा सकें। इस अवसर पर संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा हिंदी में प्रकाशित वैज्ञानिक आलेखों की पोस्टर प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया।

हिंदी सप्ताह समारोह के अन्तर्गत संस्थान मुख्यालय के अतिरिक्त संस्थान के उप–केन्द्रों जिनमें मरू क्षेत्रीय परिसर, बीकानेर (राजस्थान) एवं उत्तरी शीतोषण क्षेत्रीय केन्द्र, गड़सा (हिमाचल प्रदेश) में भी वाद–विवाद, कम्प्यूटर पर हिंदी टंकण, चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के लिए सुलेख, सामान्य ज्ञान, वैज्ञानिक निबंध, हिंदी टिप्पण लेखन, हिंदी अनुवाद, हिंदीत्तर भाषी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए श्रुतिलेख एवं हिंदी पठन एवं स्व–रचित कविता पाठ आदि प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। 21 सितम्बर को हिंदी सप्ताह के समापन पर इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को संस्थान के निदेशक डॉ. नकवी द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए।

हिंदी कार्यशाला

प्रशासनिक कर्मचारियों के लिए 19 जून को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें कर्मचारियों के एक समूह को सरकारी कार्य में राजभाषा के प्रयोग में आ रही झिझक को दूर कर राजभाषा का सरकारी कार्य में अधिक से अधिक प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इस अवसर पर सभी को तिमाही प्रगति प्रतिवेदन को भरे जाने का व्यवहारिक ज्ञान दिया गया। इस कार्यशाला में 39 कार्मिकों ने भाग लिया। 19 सितम्बर को आयोजित द्वितीय कार्यशाला में संस्थान में कार्यरत वैज्ञानिकों, तकनीकी एवं प्रशासनिक कार्मिकों को यूनिकोड़ के माध्यम से कम्प्यूटर पर हिंदी टंकण कार्य करने का अभ्यास कराया गया। इस कार्यशाला में लगभग 24 कार्मिकों ने भाग लिया। 08 नवम्बर को आयोजित कार्यशाला में संस्थान के प्रशासनिक कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में 24 कार्मिकों ने भाग लिया। 08 मार्च, 2013 को आयोजित कार्यशाला में संस्थान में कार्यरत तकनीकी एवं प्रशासनिक कार्मिकों को यूनिकोड़ के माध्यम से कम्प्यूटर पर हिंदी टंकण कार्य करने का अभ्यास कराया गया। इस कार्यशाला में लगभग 18 कार्मिकों ने भाग लिया।

संस्थान के उपकेन्द्रों पर कार्यशाला

संस्थान के मरू क्षेत्रीय परिसर, बीकानेर एवं उत्तरी शीतोष्ण क्षेत्रीय केन्द्र, गड़सा (हिमाचल प्रदेश) में भी तिमाही हिंदी कार्यशालाएँ आयोजित की गईं जिनमें उपकेन्द्रों पर कार्यरत वैज्ञानिकों, तकनीकी एवं प्रशासनिक कार्मिकों को सरकारी कार्य में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

मरू क्षेत्रीय परिसर, बीकानेर में हिन्दी सप्ताह समारोह का आयोजन

- वर्ष 2012–2013 के दौरान संस्थान को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति जयपुर द्वारा प्रथम सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया।

खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर

हिंदी पखवाड़ा

निदेशालय में 7 से 22 सितम्बर तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। 14 सितम्बर को हिंदी दिवस के कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. अजीत राम शर्मा, निदेशक ने दीप प्रज्जवलित कर किया तथा सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को अपना संपूर्ण कार्य हिंदी में करने का संकल्प दिलाया। निदेशक महोदय ने इस अवसर पर कहा कि हिंदी भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में अपना स्थान बना रही है। हमें सिर्फ हिंदी मास के दौरान ही नहीं बल्कि वर्ष भर हिंदी में कार्य करना चाहिए । उन्होने कहा कि हमारा देश कृषि प्रधान देश है अगर हमारे द्वारा की गई खोज एवं अन्य साहित्य को हिंदी में प्रकाशित किया जायेगा तो इससे अधिक से अधिक किसान भाई व सामान्य लोगों को फायदा पहुंचेगा।

पखवाड़े के दौरान पत्र लेखन, आलेखन एवं टिप्पण लेखन, शुद्ध लेखन, कविता पाठ, क्विज एवं वाद विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। समापन समारोह 22 सितम्बर को आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता डॉ. अजीत राम शर्मा, निदेशक महोदय ने की । कार्यक्रम के अंत में प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरित किये गये ।

इस अवसर पर प्रोत्साहन योजना के तहत वर्षभर 20,000 से अधिक हिंदी शब्द लिखने वाले 6 अधिकारियों व कर्मचारियों को भी नकद पुरस्कार प्रदान किये गए। राजभाषा कार्यान्वयन समिति को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग देने वाले अधिकारियों व कर्मचारियों तथा वर्ष भर हिंदी में सर्वाधिक काम करने वाले अनुभागों को भी चल बैजयंती से सम्मानित किया गया। संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा दिनाकं 7 फरवरी, 2013 को इस संस्थान का राजभाषा निरीक्षण भी किया गया जिसमें संस्थान को लक्ष्य के अनुसार हिंदी में काम करने का निर्देश दिया गया तथा निरीक्षण के दौरान दिये गये आश्वासनों को पूरा करने के लिए निर्देशित किया गया है।

निदेशालय में हिंदी पखवाड़ा

- विभिन्न फसलों एवं फसल प्रणालियों में खरपतवार प्रबधंन तकनीकों का विकास किया गया।
- शून्यकर्षण (जीरो टिलेज) विधि द्वारा उन्नत खेती एवं खरपतवार प्रबधंन किया गया।
- धान–गहूं फसल चक्र में धान में खरपतवार से लगभग 44 प्रतिशत तक का उपज में नुकसान दर्ज किया गया। इन्हें नियंत्रित करने हेतु बिसपायरिबके सोडियम को 25 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग करने से खपरतवारों का प्रभावी नियंत्रण दर्ज किया गया तथा उपज में 44 प्रतिशत वृद्धि दर्ज की गई।
- चने की फसल में पेंडीमिथालिन के 38.7 प्रतिशत सी एस को 700 ग्राम/हेक्टेयर की दर से इमेजितपोयर के साथ देने से उपज में वृद्धि दर्ज की गई।
- जैवविविधता एवं फसलों को हानि पहुंचाने वाले विदेशी खरपतवारों की पहचान व रोकथाम की गई ।
- जलवायु परिवतर्न के परिप्रेक्ष्य में खरपतवार–फसल प्रतिस्पर्धा पर शोध कार्य किया गया।
- वातावरण में CO_2 के बढ़ने से मूंग की ग्रंथियों में बढ़वार के साथ इसकी सक्रियता ज्यादा समय तक बनी रहती है। इसके अधिक स्तर पर, मूंग एवं *कामैलिना डिफ्यूसा* से उत्सजर्न में जहां कमी आती है, वहीं *यफ्रोरविया जेनिकुलाटा* नामक खरपतवार में उत्सर्जन बढ़ जाता है। कार्बोनिक एनहाइड्रेज की गतिविधि तथा फोटोसिंथेटिक रेट में वृद्धि होती है। बढ़ती CO_2 के कारण मूंग की गुणवत्ता के साथ–साथ प्राटीन में कमी आती है तथा बढ़ता हुआ कार्बोहाइड्रेट दर्ज किया गया।
- शाकनाशी रसायनों के अवशेषों का आकंलन एवं उसकी रोकथाम के उपाय किये गये ।
- सरसों की किस्मों जैसे रोहिणी एवं NRCDR-2 भुईफाडे के प्रति अतिसंवदेशील पाई गई।
- गाजरघास जैसे खतरनाक विदेशी खरपतवार का जैव–नियंत्रण तकनीक से रोकथाम की गई ।
- गैर–फसलीय एवं जलीय क्षेत्रों में खरपतवारों की रोकथाम के उपायों पर शोध किया गया।
- विभिन्न फसलों में खरपतवारों की समस्या एवं उनके प्रबंधन पर 4 प्रशिक्षण एवं 2 परामर्श सेवा प्रदान की गई।
- विभिन्न कृषि–पारिस्थितिकीय क्षेत्रों में खरपतवारों की पहचान के लिए किट का विकास तथा खरपतवारों का वर्मीकंपोस्ट बनाने की विधि विकसित की गई।

हिंदी कार्यशाला

निदेशालय में 13 जून को खरपतवार विज्ञान अनुसधांन निदेशालय में तकनीकी वर्ग के लिए एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें ''खरपतवारों का परिचय एवं उनके नियंत्रण में शाकनाशी का उपयोग'' विषय पर डॉ. वी. पी. सिहं द्वारा वक्तव्य दिया गया, कार्यशाला का उद्घाटन निदेशक डॉ. ए. आर. शर्मा जी ने किया। 12 सितम्बर को वैज्ञानिक, तकनीकी एवं प्रशासनिक वर्ग के लिए एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। 22 दिसम्बर 2012 को तकनीकी वर्ग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसका विषय ''प्रायोगिक अभिकल्पनाओं का परिचय'' था। 19 मार्च को प्रशासनिक वर्ग के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें ''संस्थान में वित्त प्रबंधन'' पर डॉ. अनिल दीक्षित, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी वित्त एवं लेखा द्वारा व्याख्यान दिया गया। सभी कार्यशालाओं में वैज्ञानिक एवं प्रशासनिक वर्ग के कार्मिकों ने भाग लिया।

हिंदी सप्ताह

संस्थान में हिंदी सप्ताह 17 से 22 सितम्बर तक आयोजित किया गया। हिंदी सप्ताह के उद्घाटन समारोह में डा. एम. आनन्दराज निदेशक ने हिंदी में अधिक कार्य करने के लिये शपथ दिलायी तथा अधिकारियों तथा कर्मचारियों से राजभाषा का सम्मान तथा उसका अधिकाधिक उपयोग करने का आह्वान किया। हिंदी सप्ताह के दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगितायें जैसे अनुशीर्षक लेखन, हिंदी अक्षर से शब्दों का लेखन, स्मृति परीक्षण, अनुच्छेद पठन एवं लेखन, आशु भाषण, गीत, अन्ताक्षरी, टिप्पणी एवं मसौदा लेखन आदि आयोजित की गयी।

हिंदी सप्ताह का समापन समारोह 22 सितम्बर को संपन्न हुआ जिसमें डा. हरीश चन्द्र जोशी, निदेशक (राजभाषा), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद मुख्य अतिथि थे। इस समारोह में मुख्य अतिथि ने संस्थान की राजभाषा पत्रिका मसालों की महक के प्रथम अंक का विमोचन किया तथा उन्होंने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण किये। इस अवसर पर उनके द्वारा वर्ष 2011–12 में राजभाषा कार्यान्वयन के लिये कर्मचारियों को राजभाषा पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उन्होंने हिंदी के महत्व पर प्रकाश डाला। समारोह की अध्यक्षता डा. एम. आनन्दराज, निदेशक ने की तथा समारोह का संचालन डा. राशिद परवेज़, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं हिंदी अधिकारी ने किया। अन्त में सुश्री एन. प्रसन्नकुमारी, हिंदी अनुवादक ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

मसालों की महक नामक पत्रिका का विमोचन

हिंदी कार्यशाला

संस्थान के कर्मचारियों एवं अधिकारियों में हिंदी के प्रति रूचि बढाने के लिये 2012–13 में चार हिंदी कार्यशालाओं को आयोजित किया। पहली कार्यशाला 23 मई को आयोजित की गयी जिसमें सुश्री. श्रीकला श्रीकुमार, वरिष्ठ प्रबन्धक (राजभाषा), कैनरा बैंक, आंचलिक कार्यालय, कोषिक्कोड ने राजभाषा कार्यान्वयन पर व्याख्यान दिया। संस्थान के पन्द्रह अधिकारियों व कर्मचारियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। द्वितीय कार्यशाला 19 सितम्बर को संपन्न हुई। इसमें श्री. एम. अरविन्दाक्षन, हिंदी अनुवादक, कर्मचारी भविष्य निधि कार्यालय, कोषिक्कोड ने राजभाषा कार्यान्वयन एवं हिंदी टिप्पणी एवं मसौदा लेखन के बारे में व्याख्यान दिया। इसमें 18 अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया। तीसरी कार्यशाला 12 दिसम्बर 2012 को सम्पन्न हुई जिसमें श्रीमती सेरीना पी.,

सहायक निदेशक (राजभाषा), इंडियन ओवरसीज बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, कोषिक्कोड ने हिंदी टिप्पणी एवं मसौदा लेखन के बारे में व्याख्यान दिया। इस कार्यशाला में 21 अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया। चौथी कार्यशाला का आयोजन 18 मार्च 2013 को किया गया। इसमें सूश्री. माया, प्रबन्धक, (राजभाषा), विजया बैंक क्षेत्रीय कार्यालय, कोषिक्कोड ने हिंदी अनुवाद एवं व्याकरण के बारे में व्याख्यान दिया। कुल मिलाकर 29 अधिकारियों व कर्मचारियों ने कार्यशाला में भाग लिया।

- **वर्ष 2012 में राजभाषा कार्यान्वयन, कार्यशालाऑ का आयॊजन, राजभाषा कार्यान्वयन कॊ बैठक तथा प्रकाशनों के लिये नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कॊषिक्कॊड (केरल) द्वारा 25 अप्रैल 2013 कॊ राजभाषा शील्ड पुरस्कार (प्रथम पुरस्कार) से सम्मानित किया गया ।**

- **संस्थान की राजभाषा पत्रिका मसाला फसलॊं की महक कॊ उसके उत्तम लेखॊं, सज्जा एवं उतकृष्ट प्रकाशन के लिए राजभाषा पत्रिका पुरस्कार 2012 से सम्मानित किया गया । इस पत्रिका के प्रधान समादक, डॉ राशिद परवेज, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं हिंदी अधिकारी थे।**

उपलब्धियां

- अधिदेश फसलों के जननद्रव्यों को आई आई एस आर तथा अन्य वैकल्पिक स्थानों, जैसे करनाटक के अप्पंगला में उपज, गुणवत्ता, अजैविक एवं जैविक स्ट्रस वाली उन्नत प्रजातियों को विकसित करने के लिये पोषित किया जा रहा है।
- काली मिर्च की प्रजातियों जैसे आई आई एस आर श्रीकरा, आई आइ ॅएस आर शुभकरा, आई आई एस आर पंचमी, आई आई एस आर पौर्णमी, आई आई एस आर पी एल डी- 2, आई आई एस आर थेवम, आई आई एस आर गिरिमुंडा, आई आई एस आर मलबार एक्सल तथा आई आई एस आर शक्ति को विकसित किया।
- काली मिर्चए अदरक तथा हल्दी की जैविक उत्पादन तकनीकी मानकीकृत किया गया।
- काली मिर्च के 126 फाइटोफथोरा वियुक्तियों से जीनोमिक तथा एस एस आर प्रोफाइलिंग किया गया।
- इलायची की नवीन प्रजातियां जैसे आई आई एस आर विजेता, आई आई एस आर अविनाश तथा आई आई एस आर सुवासिनी को विकसित किया गया।
- अदरक की तीन प्रजातियों जैसे ए आई आई एस आर वरदा, आई आई एस आर रजता तथा आई आई एस आर महिमा को उच्च उपज एवं गुणवत्ता के लिये किया गया।
- अदरक के बीज राइज़ोम का उपचार (जीवाणु म्लानी रोगकारक के प्रबंधन) के लिये तकनीकियां तथा मृदु गलन, जीवाणु म्लानी रोग एवं प्ररोह बेधक के लिये एकीकृत रोग प्रबन्धन रीति विकसित की गयी।
- अधिक कुरकुमिन तथा जड़ गांढ सूत्रकृमि प्रतिरोधक अक्सेशनों की पहचान की गयी। लगभग चालीस बीजपौधे संततियों को अधिक कुरकुमिन (> 3%) तथा शुष्क प्राप्ति (> 20%) की पहचान की गयी।
- जायफल की विश्वश्री तथा नित्य श्री प्रजातियों को विकसित किया गया है।

ज्वार अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद

हिंदी पखवाड़ा

ज्वार अनुसंधान निदेशालय में 14 से 28 सितंबर के दौरान हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया । इस दौरान हिंदी में विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे - छोटे शब्दों एवं पदों का हिंदी में अनुवाद, प्रश्न-मंच, त्वरित निबंध, टिप्पण एवं आलेखन, श्रुत-लेखन (शुद्ध लेखन), हिंदी पाठ का वाचन, निबंध लेखन तथा काव्य पाठ वाचन का आयोजन किया गया जिसमें वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक तथा अनुसंधान सहायक, शोध छात्रों आदि ने बड़े-ही उत्साह के साथ भाग लिया। इसके अलावा इस दौरान हिंदी में हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया । पखवाड़े के दौरान 20 सितंबर को *"टिप्पण एवं आलेखन"* विषय पर एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला भी आयोजित की गई । इस कार्यशाला का संचालन श्री सरोज कुमार सिंह एवं डॉ. महेश कुमार ने किया तथा कुल 10 सहभागियों ने इसमें भाग लिया ।

निदेशालय के सम्मेलन भवन में 28 सितंबर को पखवाड़े के समापन समारोह का आयोजन किया गया । समारोह का शुभारंभ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् गान से हुआ । संस्थान के निदेशक डॉ. जे वी पाटील निदेशक ने मुख्य अतिथि प्रो. रवि रंजन, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, केंद्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद का स्वागत किया । तत्पश्चात डॉ. महेश कुमार ने संस्थान में संचालित हिंदी कार्यान्वयन संबंधी प्रगति प्रतिवेदन तथा हिंदी पखवाड़ा समारोह के दौरान आयोजित कार्यक्रमों पर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया । मुख्य अतिथि ने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र प्रदान किए तथा डॉ. पाटील ने प्रतियोगिता के अन्य सहभागियों को प्रोत्साहन पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र प्रदान किए । इसके अलावा डॉ. पाटील ने निदेशालय में राजभाषा कार्यान्वयन को प्रोत्साहन प्रदान करने हेतु कार्यालय के नेमी कार्यों में हिंदी शब्दों के अधिकाधिक प्रयोग करने के कारण श्री जी चिमनलाल को नकद पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र प्रदान किया । प्रो. रवि रंजन ने अपने संबोधन में कहा कि कोई भी भारतीय लेखक चाहे व अंग्रेजी में भी क्यों न लिखता हो, परंतु उस कृति में भारतीय संस्कृति अवश्य झलकती है । उन्होंने कहा कि कोई भी भाषा सरल अथवा कठिन नहीं होती, केवल बारंबार प्रयोग से ही वह सरल लगती है ।

डॉ. पाटील ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि यह तो सर्वविदित है कि भारत को 'विविधता में एकता' का देश कहा जाता है और इसकी एक प्रमुख कड़ी जनभाषा व राजभाषा हिंदी है जो इस समूचे देश को एकता के सूत्र में बांधे हुए है । उन्होंने बताया कि एक राष्ट्र की उन्नति में भाषा का अत्यधिक योगदान रहता है और हमें इस तथ्य का ध्यान रखकर ही हिंदी में कार्य करना आवश्यक है, चूंकि देश का एक बड़ा जन-समुदाय हिंदी भाषा का पर्याप्त ज्ञाता है । अंत में श्री सरोज कुमार सिंह, प्रशासनिक अधिकारी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन तथा सामूहिक रूप से राष्ट्रगान के पश्चात समारोह का समापन हुआ । इस पूरे कार्यक्रम का संचालन डॉ. जे एस मिश्र तथा डॉ. महेश कुमार ने किया ।

निदेशालय में हिन्दी पखवाड़ा समारोह

- ज्वार अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद को राजभाषा हिंदी में सराहनीय कार्य के लिए राजभाषा संस्थान, नई दिल्ली ने "कार्यालय दीप स्मृति चिह्न" पुरस्कार प्रदान किया ।

तिलहन अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद

हिंदी सप्ताह

निदेशालय में 14 से 20 सितंबर तक हिंदी सप्ताह तथा समापन समारोह 21 सितंबर को आयोजित किया गया। समापन समारोह की अध्यक्षता डॉ. हरवीर सिंह, प्रभारी परियोजना निदेशक ने की। श्री. प्रदीप सिंह, सहा. निदेशक (रा.भा) ने मुख्य अतिथि के परिचय के बाद राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की ।

हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित स्मरण, शब्द बनाइए, सामान्य ज्ञान तथा एक मिनट प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि डॉ. टी. मोहन सिंह, भूतपूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष एवं प्रधानाचार्य आर्टस कॉलेज, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद द्वारा पुरस्कार वितरित किए गए। वर्ष के दौरान हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाले कर्मचारियों को भी प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत नगद पुरस्कार दिए गए।

समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. टी. मोहन सिंह, भूतपूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष एवं प्रधानाचार्य आर्टस कॉलेज, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद ने अपने संबोधन में कहा कि सभी को अपनी मातृ भाषा की इज्जत करनी चाहिए जब आप अपनी मातृ भाषा का सम्मान करेंगे तभी आप अपनी राजभाषा का सम्मान करेंगे। अतः कम से कम सभी अधिकारी व कर्मचारी अपने हस्ताक्षर अपनी मातृभाषा या हिंदी में अवश्य करें। भारतीय संस्कृति हमारी बहुमूल्य धरोहर है और यह केवल भारतीय भाषाओं पर ही जीवित रह सकती है। विदेशी भाषा, आचार-व्यवहार का अंधा अनुकरण हमारी संस्कृति की जड़ों को खोखला कर रहा है यदि हम समय रहते नहीं जागे तो बहुत देर हो जाएगी।

डॉ. हरवीर सिंह, प्रभारी परियोजना निदेशक एवं अध्यक्ष राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि वह अपनी बेटी सायना नेहवाल के साथ अभी चीन गए थे और उन्होंने वहाँ पाया कि सभी स्थानीय भाषा में वार्तालाप कर रहे थे, अंग्रेजी जानने वालों की संख्या नगण्य थी। इसके बावजूद चीन आज विश्व के प्रत्येक क्षेत्र में तेजी से प्रगति कर रहा है। उन्होंने आगे कहा कि हमारे निदेशक महोदय डॉ. के. एस. वरप्रसाद सभी फाइलों पर टिप्पणी तथा हस्ताक्षर केवल हिंदी में ही करते है। जिससे अन्य अधिकारी व कर्मचारी भी प्रेरित हो अपना काम हिंदी में कर रहे है।

श्री. अनिल बिहारी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने राजभाषा की संसदीय समितियों के अनुभवों से सभा को अवगत कराया तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया ।

हिन्दी सप्ताह समारोह का आयोजन

हिंदी कार्यशाला

हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त वैज्ञानिक, अधिकारी व कर्मचारियों के लिए वर्ष के दौरान चार कार्यशालाओं का आयोजन 21 जून, 2012 15 सितंबर, 2012, 27 दिसंबर, 2012 तथा 25 मार्च, 2013 को किया गया।

केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर

संस्थान में दिनांक 14 सितम्बर से 29 सितम्बर तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। उद्घाटन समारोह के अवसर पर बीकानेर के वयोवृद्ध हिंदी साहित्यकार डॉ. राम नरेश सोनी मुख्य अथिति थे। समारोह की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ. एस. के. शर्मा ने की। इस दौरान संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिंदी में कार्य करने की रूचि जागृत करने हेतु दो प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया था। इनमें हिंदी श्रुति लेखन एवं हिंदी शब्द लेखन प्रतियोगिता मुख्य थीं । हिंदी श्रुति लेखन प्रतियोगिता में प्रथम –सुश्री पूजा जोशी, कनिष्ठ आशुलिपिक, द्वितीय– श्री स्वरूप चंद राठौड़, अवर श्रेणी लिपिक एवं तृतीय– डॉ. बालूराम चौधरी, वैज्ञानिक रहे । इसी प्रकार हिंदी शब्द लेखन प्रतियोगिता में प्रथम –श्री कुलदीप, पांडे. सहायक, द्वितीय– श्री भोजराज खत्री, टी–4 एवं तृतीय– श्री संजय पाटिल, टी–6 रहे जिन्हें समापन समारोह में हिंदी साहित्यकार डॉ. शंकर लाल स्वामी ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

समापन समारोह मे मुख्य अतिथि डॉ शंकर लाल स्वामी

संस्थान में हिंदी पखवाड़े के दौरान 28 सितंबर को एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें बीकानेर के वयोवृद्ध हिंदी प्राध्यापक एवं साहित्यकार श्री मालीराम शर्मा जी ने व्याख्यान दिया और अपने अनुभवों कों इस कार्यशाला के माध्यम से प्रस्तुत किया।

राष्ट्रीय पटसन एवं समवर्गी रेशा प्रौद्योगिकी संस्थान, कोलकाता

हिंदी पखवाड़ा

संस्थान में हिंदी पखवाड़ा 14 से 29 सितम्बर के दौरान मनाया गया। इस दौरान आशुभाषण, वाद–विवाद, निबंध, टिप्पिणी एवं मसौदा लेखन एवं प्रश्न मंच प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। डॉ. के.के. शतपथी, निदेशक, निरजैफ्ट की अध्यक्षता मे 29 सितंबर, को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन किया गया। मुख्यालय पूर्वी कमान, फोर्ट विलियम से कर्नल ए.के. मोहंती, कर्नल शिक्षा और श्री डी.के. राय, सहायक निदेशक (राजभाषा) क्रमशः मुख्य अतिथि और सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित थे। स्वागत भाषण श्री आर.डी. शर्मा सहायक निदेशक (राजभाषा) द्वारा दिया गया । कर्नल ए.के. मोहंती ने अपने भाषण में सम्पर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग करने का सुझाव दिए और बताया कि हिंदी हमारी राजभाषा ही नहीं बल्कि हमारी पहचान है। श्री डी.के. राय ने अपने भाषण में कहा कि हिंदी हमारे देश में सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली और समझी जाती है इसलिए केवल हिंदी ही राजभाषा की अधिकारिणी है। श्री के.एल. अहिरवार, तकनीकी अधिकारी (टी –5) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ ।

हिंदी पखवाड़े का आयोजन

केंद्रीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर

हिंदी पखवाड़ा

हिंदी पखवाड़े के दौरान केन्द्रीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों के अंतर्गत हिंदी शब्दावली, किसानों की दयनीय स्थिति पर निबंध, पत्र लेखन, टिप्पण, ग्रामीण महिलाओं के लिए भाषण प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी तथा भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित सभी प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाली प्रतिभागी को सर्वोत्तम प्रतिभागिता का पुरस्कार प्रदान किया गया। इसके अंतर्गत चार अधिकारियों/कर्मचारियों को सम्मानित किया गया । 9 अक्टूबर को समापन समारोह के अवसर पर तत्काल भाषण का आयोजन किया गया जिसमें सभी वैज्ञानिकों सहित अधिकारियों/प्रशासनिक/तकनीकी कर्मचारियों ने भाग लिया। डॉ. एस. दाम रॉय ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की और संस्थान के निदेशक ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया।

पोर्टब्लेयर संस्थान में हिंदी पखवाड़े का आयोजन

हिंदी कार्यशाला

संस्थान के हिंदीतर वैज्ञानिकों/तकनीकी अधिकारियों के लिए 15 दिवसीय हिंदी कार्यशाला का शुभारंभ 11 सितंबर 2012 से निदेशक डॉ .एस .दाम रॉय की अध्यक्षता में आयोजित की गई। हिंदी में सरकारी कामकाज करने के अलावा दिन प्रतिदिन के कार्यों में हिदी भाषा के प्रयोग में आने वाली कठिनाईयों का समाधान इस कार्यशाला का उद्देश्य था। संस्थान के कई अधिकारियों ने भी इस कार्यशाला में अपना सहयोग दिया। हिंदी पखवाडा के समापन समारोह में प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया।

राजभाषा संगोष्ठी

25 सितंबर, 2012 को केन्द्रीय कृषि अनुसंधान संस्थान के सभागार में **'जलवायु परिवर्तन का कृषि पर प्रभाव** विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में कृषि निदेशालय , अं. नि .प्रशासन के निदेशक श्री एम.ए.सलाम मुख्य अतिथि थे जबकि के.कृ.अनु.सं .के निदेशक डॉ .एस .दाम रॉय ने बैठक की अध्यक्षता की। कुल 08 वक्ताओं ने इस विषय पर अपने विचार प्रकट किए| अंत में निदेशक और मुख्य अतिथि द्वारा वक्ताओं को स्मृति चिन्ह प्रदान किए गए।

हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

संस्थान द्वारा राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने में जिन प्रभाग/अनुभाग/ईकाई ने अपने सरकारी कार्यों में अधिकतम हिंदी का प्रयोग किया है ,उन्हें पुरस्कृत करने के उद्देश्य से प्रभाग, अनुभाग तथा ईकाई/कक्ष स्तर पर पुरस्कार प्रदान किए गए। गठित की गई समिति के निर्णय पर पुरस्कारों की घोषणा हिंदी पखवाडा के समापन समारोह पर की गई। पुरस्कार के रूप में विजेता प्रभाग, अनुभाग, ईकाई/कक्ष को स्मृति चिन्ह प्रदान किए गए। यह प्रयास बहुत ही कारगर साबित हुआ तथा संपूर्ण कार्यक्रमों के आकर्षण का केंद्र बना।

पुरस्कार (2012-2013)

- केन्द्रीय कृषि अनुसंधान संस्थान ,पोर्ट ब्लेयर को राजभाषा संस्थान, वसंत विहार, नई दिल्ली द्वारा "कार्यालय दीप स्मृति चिन्ह पुरस्कार" से सम्मानित किया गया।
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा 18 मार्च, 2013 को संस्थान को" राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार " से सम्मानित किया गया | यह पुरस्कार केन्द्रीय कृषि अनुसंधान संस्थान ,पोर्ट ब्लेयर के निदेशक डॉ . एस .दाम रॉय ने प्राप्त किया |
- गृह मंत्रालय, भारत सरकार, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली द्वारा कोलकाता में क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय के अन्तर्गत 18 अप्रैल, 2013 को आयोजित "क" क्षेत्र में हिंदी में उत्कृष्ट कार्य के लिए नगर राजभाषा

कार्यान्वयन समिति, पोर्ट ब्लेयर को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया | यह पुरस्कार केन्द्रीय कृषि अनुसंधान संस्थान ,पोर्ट ब्लेयर के निदेशक एवं अध्यक्ष, नराकास डॉ .एस .दाम रॉय ने प्राप्त किया।

गोपशु परियोजना निदेशालय, मेरठ

संस्थान में 14 से 29 सितम्बर के दौरान हिंदी पखवाड़ा आयोजित किया गया। इसके अन्तर्गत प्रशासनिक वर्ग के लिए कम्प्यूटर पर हिंदी टंकण प्रतियोगिता, सभी वर्गों के लिए हिंदी भाषण प्रतियोगिता, कुशल सहायक कर्मचारी वर्ग के लिए हिंदी पत्रलेखन प्रतियोगिता, सभी वर्गों के लिए हिंदी श्रुतलेखन प्रतियोगिता तथा हिंदी सुलेख प्रतियोगिता, प्रशासनिक एवं तकनीकी वर्ग के लिए हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी शोधपत्र/लेख/जानकारी/उपलब्धि प्रस्तुतिकरण प्रतियोगिता, प्रशासनिक एवं तकनीकी वर्ग के लिए हिंदी टिप्पण लेखन प्रतियोगिता, हिंदीतर भाषी वर्ग के लिए हिंदी श्रुतलेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों व कर्मचारियों ने सहभागिता की। इन प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतियोगियों को 29 सितम्बर को आयोजित हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह के अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. आर्जव शर्मा द्वारा पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती रितु शर्मा उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का संचालन करते हुए प्रभारी, हिंदी अधिकारी, डॉ. अरूण कुमार, प्रधान वैज्ञानिक ने सभी से हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने का आग्रह किया तथा राजभाषा के महत्व पर प्रकाश डाला।

गोपशु परियोजना निदेशालय में हिंदी कार्यशाला

हिंदी कार्यशाला

निदेशालय में हिंदी के उचित प्रयोग एवं कार्य में आने वाली झिझक को दूर करने के लिए तीन कार्यशालाओं का आयोजन क्रमशः 1 अगस्त, 18 सितम्बर तथा 12 दिसम्बर, 2012 को किया गया जिनमें संस्थान के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

- निदेशालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "सुरभि" को राजभाषा संस्थान, नई दिल्ली ने "कार्यालय दर्पण स्मृति चिन्ह" नामक पुरस्कार प्रदान किया गया।

भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

हिंदी पखवाड़ा

संस्थान में 01 से 14 सितम्बर, 2012 के दौरान हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। 01 सितम्बर को हिंदी पखवाड़े का उद्‌घाटन संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप–समिति के अवर सचिव, डॉ. श्री प्रकाश शुक्ल जी द्वारा किया गया । हिंदी पखवाड़े के उद्‌घाटन के अवसर पर काव्य पाठ का आयोजन किया गया । हिंदी पखवाड़े के दौरान शिक्षक दिवस, डॉ. दरोगा सिंह स्मृति व्याख्यान के साथ–साथ वैज्ञानिक प्रभागों में हिंदी में सर्वाधिक वैज्ञानिक कार्य करने के लिए प्रभागीय चलशील्ड, प्रश्न–मंच, अंताक्षरी, हिंदी वर्तनी प्रतियोगिता, हिंदीतर कर्मियों के लिए हिंदी श्रुतलेख एवं शब्दार्थ लेखन प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं। प्रश्न–मंच एवं अंताक्षरी प्रतियोगिता के संचालकों द्वारा इन प्रतियोगिताओं को ऑडियो– विजुअल रूप में प्रस्तुत किया गया जिससे ये प्रतियोगिताएं अत्यन्त ही रोचक रहीं। सभी प्रतियोगिताओं में छात्रों सहित संस्थान के विभिन्न वर्गों के कर्मियों ने हिस्सा लिया।

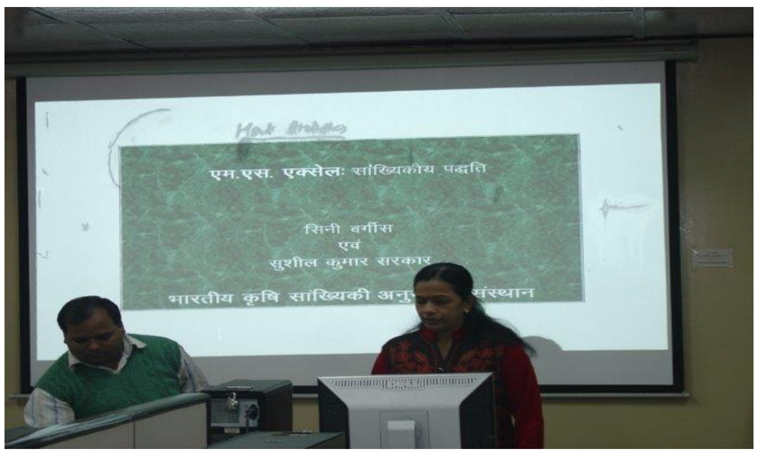

एम.एस.एक्सेलः सांख्यिकीय पद्धतियां' पर कार्यशाला

कार्यशाला

संस्थान के विभिन्न वर्ग के कर्मियों को नई कम्पयूटर तकनीकों और संचार सुविधाओं के प्रसार को ध्यान में रखते हुए इस वर्ष पांच हिंदी कार्यशालाएं आयोजित की गयी। इस वर्ष की पहली कार्यशाला 30 जनवरी, 2012 को ''एलिमेंट्री एक्सैल भाग–।।'' विषय पर संस्थान के तकनीकी अधिकारी, श्री एस. के. सबलानिया व सहायक अभियन्ता, श्री एस. के. सिंह द्वारा कराई गई। जिसमें उपरोक्त विषय पर व्यवहारिक जानकारी उपलब्ध कराते हुए व्याख्यान दिया। द्वितीय कार्यशाला 28 मार्च, 2012 को ''हिंदी यूनिकोड का संगणक में प्रयोग'' विषय पर संस्थान के संगणक अनुप्रयोग प्रभाग द्वारा आयोजित की गई। इसी प्रभाग के तकनीकी अधिकारी, श्री सुभाष चन्द ने प्रतिभागियों को हिंदी यूनिकोड का कम्पयूटर पर प्रयोग करना सिखाया व सम्बन्धित व्याख्यान दिए। तृतीय कार्यशाला 04 जून 2012 को ''संस्थान में स्थापित नए ई–मेल सिस्टम का प्रयोग'' विषय पर आयोजित की गयी व इस कार्यशाला में संस्थान के तकनीकी अधिकारी, श्री सुभाष चन्द ने व्यवहारिक जानकारी उपलब्ध कराते हुए व्याख्यान दिया। चतुर्थ कार्यशाला का आयोजन 17 अगस्त 2012 को ''एम. एस. ऐक्सिल : सांख्यिकी पद्धतियां '' विषय पर किया गया। इस कार्यशाला में सरंस्थान की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ सिनि वर्गीस एवं वैज्ञानिक डॉ सुशील सरकार ने प्रतिभागियों को सम्बन्धित विषय पर व्यावहारिक जानकारी उपलब्ध करायी तथा व्याख्यान की सामग्री

हिंदी भाषा में उपलब्ध करायी। पाचंवी कार्यशाला तकनीकी कर्मियों के लिए 27 नवम्बर 2012 को ''एम. एस. ऐक्सिल : सांख्यिकी पद्धतियां भाग–II'' विषय पर आयोजित की गयी। इस कार्यशाला में प्रतिभागियों को सम्बन्धित विषय पर और अधिक व्यावहारिक जानकारी उपलब्ध करायी गई तथा व्याख्यान की सामग्री हिंदी भाषा में उपलब्ध कराई गई।

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन

हिंदी चेतना मास

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन में दिनांक 01 से 28 सितम्बर, 2012 तक विभिन्न कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं के साथ हिंदी चेतना मास आयोजित किया गया। 01 सितंबर को 'बोलचाल की हिंदी विषय' पर कार्यशाला के आयोजन से हिंदी चेतना मास का प्रारंभ हुआ। हिंदी चेतना मास के दौरान कर्मचारियों को हिंदी में काम करने की प्रेरणा और प्रोत्साहन हेतु शब्द–शक्ति विकास, टिप्पाण एवं आलेखन, अनुवाद, ई–गर्वनेंस, ललित गान, वार्तालाप आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं। संस्थान के कई अधिकारियों और कर्मचारियों ने इन प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

संस्थान मुख्यालय में 1 सितंबर से प्रारंभ चेतना मास का समापन 28 सितम्बर को हुआ। डॉ. जी. सैदा रावु, निदेशक, सी एम एफ आर आई ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की तथा श्री आर.सी. सिन्हा, निदेशक, केंद्रीय मस्त्य नौचालन इंजिनीयरी प्रशिक्षण संस्थान मुख्य अतिथि थे । संस्थान में पूरे वर्ष और मास के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं और प्रोत्साहन योजना के भागीदारों को मुख्य अतिथि ने पुरस्कार प्रदान किए। इस दौरान देश की सांस्कृतिक विरासत और वैश्विक सद्भाव का संदेश देते हुए सी एम एफ आर आई के कर्मचारी सदस्यों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया ।

इस अवसर पर 'रीफ' में रहने वाली भारत की पर्च मछलियॉं', 'भारत के मृदु प्रवाल और समुद्री फैन' और 'भारत की समुद्री पेनिआइड झींगा संपदाएं' विषयों पर तैयार किए गए द्विभाषी पोस्टरों का विमोचन भी किया गया।

सी एम एफ आर आई के दस अधीनस्थ केंद्रों में भी विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं के साथ हिंदी दिवस, हिंदी सप्ताह व पखवाड़े का आयोजन किया गया।

हिंदी कार्यशाला

संस्थान तथा इसके केंद्रों पर वर्ष के दौरान 6 कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिसमें मुख्यालय कोचीन में 5 व 7 जून तथा 1 सितंबर, 2012 को क्रमश: कार्यशालाएं आयोजित की गईं जिसमें 52 कार्मिकों ने भाग लिया। टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र पर 25 जुलाई, मद्रास अनुसंधान केंद्र पर 24 अ गस्त, कारवार अनुसंधान केंद्र पर 28 सितंबर तथा मांगलूर अनुसंधान केंद्र पर 12 दिसंबर को कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिनमें क्रमश: 18, 20, 23 तथा 21 कर्मचारियों ने सहभागिता निभाई ।

कोचीन संस्थान में हिन्दी कार्यशाला

- सी एम एफ आर आइ को 'ग' क्षेत्र के स्वायत्त निकाय वर्ग में वर्ष 2010-2011 की अवधि में उत्कृष्ट हिंदी कार्यान्वयन हेतु 14 सितंबर, 2012 को हिंदी दिवस के अवसर पर विज्ञान भवन, नई दिल्ली में भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी ने इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार प्रदान किया। संस्थान को लगातार दूसरी बार यह पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

- केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन ने वर्ष 2011 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रथम स्थान पर रहकर राजभाषा रोलिंग ट्रोफी हासिल की। आयकर कार्यालय, कोचीन में 29.03.2012 को आयोजित कार्यक्रम में श्री राकेश कुमार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी ने आयकर आयुक्त से ट्रोफी और प्रमाण पत्र स्वीकार किए।

औषधीय एवं सगंधीय पादप अनुसंधान निदेशालय, आनन्द

हिंदी सप्ताह

निदेशालय में दिनांक 14 से 21 सितंबर, 2012 तक हिंदी सप्ताह मनाया गया, जिसके अन्तर्गत हिंदी के प्रयोग को बढावा देने हेतु अनेक कायक्रमों का आयोजन किया गया। इस दौरान हिंदी निबंध, पत्र लेखन, सामान्य हिंदी; हिंदी संबंधित ज्ञान हेतु सामान्य ज्ञान, व्याख्यान व काव्यपाठ इत्यादि प्रतियोगितायें आयोजित की गईं।

हिंदी सप्ताह का समापन समारोह 21 सितबंर को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री अशोक कुमार श्रीवास्तव, उपमंण्डल अभियंता मार्केटिग, भारत संचार लिमिटेड, आणंद को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। श्री आनन्द प्रकाश राय, वरिष्ठ अध्यापक; हिंदी, केन्द्रीय विद्यालय, वल्लभ विद्यानगर, आणंद समारोह के विशिष्ट अतिथि थे तथा निदेशालय के निदेशक एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष डॉ सत्यब्रत माईति ने समापन समारोह की अध्यक्षता की। समापन समारोह के दौरान व्याख्यान व काव्यपाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में निदेशक डा. सत्यब्रत माईति ने अतिथियों का स्वागत किया, तत्पश्चात राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य सचिव डॉ विपिन चौधरी ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंनें डॉ0 एस0 अय्यप्पन, सचिव कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग तथा महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली की अपील भी सभा के समक्ष प्रस्तुत की, जिसमें सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने का संकल्प लेने को कहा गया है । स्वागत भाषण के पश्चात व्याख्यान व काव्यपाठ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका संचालन व मूल्यांकन मुख्य अतिथि महोदय व विशिष्ट अतिथि महोदय ने संयुक्त रूप से किया। सभी प्रतियोगिताओं में प्रथम व द्वितीय रहे प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र एवं प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये गये।

पुरस्कार वितरण समारोह के उपरान्त विशिष्ट अतिथि तथा मुख्य अतिथि ने हिंदी के बारे में अपने विचार प्रकट किए। श्री आनन्द प्रकाश राय ने संस्थान में हिंदी के प्रयोग में हो रही प्रगति पर संतोष व्यक्त किया तथा हिंदीतर भाषियों के प्रयासों को सराहा। आपने बताया की हिंदी संपर्क भाषा के रुप में विकसित हो गई है। उन्होंने भाषा की सरलता पर ज़ोर दिया। मुख्य अतिथि श्री अशोक कुमार श्रीवास्तव ने हिंदी के प्रति अपने रुझान के बारे में बताया व हिंदी के सरल शब्दों के प्रयोग पर बल दिया। निदेशालय के निदेशक डा. सत्यब्रत माईति ने कहा कि भाषाओं के समावेश से भाषा की गरिमा बढ़ जाती है व भाषा प्रगति करती है। हिंदी जिस रुप में भी बोली जाए उसे सहज ही स्वीकार करना चाहिए।

समारोह का समापन डॉ0 जी0 आर0 स्मिथा ने सभी अतिथियों, निदेशक, हिंदी समिति के सदस्यों, विभिन्न प्रतियोगिताओं के प्रतिभागियों, कार्यक्रम के सहयोगीजनों, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद व सभी कर्मचारीगण जिन्होंने परोक्ष व अपरोक्ष रूप से अपना सहयोग दे कर इस कार्यक्रम को सफल बनाया उन सबका आभार व्यक्त किया।

हिन्दी सप्ताह समापन समारोह

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर

हिंदी पखवाड़ा

हिंदी दिवस के अवसर पर केन्द्र में 11 से 25 सितम्बर तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। केंद्र के निदेशक डॉ. पाटिल ने कहा कि हिंदी पखवाड़ा उत्साह से आयोजित किया जाए व इसमें सभी की भागीदारिता सुनिश्चित की जाए। कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री, भारत सरकार द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर जारी प्रेरणाप्रद 'संदेश' को केन्द्र के मुख्य भवनों पर लगाया गया। डॉ. एस. अय्यप्पन, सचिव एवं महानिदेशक, डेयर एवं भाकृअनुप द्वारा जारी अपील का वाचन किया गया। इस दौरान हिंदी में आशुभाषण प्रतियोगिता तथा निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गईं।

राजभाषा कार्यशाला

राजभाषा कार्यशाला में अतिथि वक्ता श्रीमान सुनील कुमार बोड़ा, वरिष्ठ व्याख्याता, चौपड़ा उच्च माध्यमिक विद्यालय, बीकानेर ने "**हिंदी भाषा की वैज्ञानिकता**" विषयक व्याख्यान में कहा कि हिंदी भाषा अनगिनत विशेषताओं से युक्त आम आदमी के समझ वाली तथा उच्च व्याकरण एवं शब्दावली से युक्त है। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. समर कुमार घोरूई तथा वैज्ञानिक गणों में डॉ. राघवेन्द्र सिंह, डॉ. सज्जन सिंह एवं डॉ. शरत चन्द्र मेहता एवं प्रभारी राजभाषा डॉ. निर्मला सैनी ने अपने विचार रखे गए।

कवि सम्मेलन

कवि सम्मेलन में बीकानेर के वरिष्ठ साहित्यकारों में श्री भवानी शंकर व्यास 'विनोद' द्वारा गंजापन एवं तोंद को नमस्कार, श्री गौरीशंकर जी मधुकर द्वारा निरक्षरता एवं मोबाइल, श्री विजय कुमार धमीजा, श्री संजय आचार्य 'वरूण' एवं श्री बुनियाद हुसैन 'जहीन' द्वारा कविताएं प्रस्तुत की। कार्यक्रम की अध्यक्षता केन्द्र निदेशक डॉ. नितीन वसन्तराव पाटिल ने की। इसमें भाकृअनुप अधीनस्थ बीकानेर स्थित संस्थान/केन्द्रों ने भी भाग लिया।

समापन समारोह

समारोह के मुख्य अतिथि प्रो.के.एम.एल.पाठक, उप-महानिदेशक (पशु विज्ञान), भाकृअनुप, नई दिल्ली एवं अतिथियों द्वारा दीप प्रज्जवलित किया गया। प्रो. पाठक ने कहा कि हिंदी में आपसी संवाद सुखद अनुभूति दिलाता है। सभी भाषाओं को साथ लेकर चलने वाली इस भाषा की किसी से प्रतिस्पर्द्धा नहीं। उन्होंने वैज्ञानिकों से कहा कि अनुसंधानों के यथोचित लाभ हेतु ऊँट पालकों एवं किसानों आदि से आपसी संवाद, वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रचार-प्रसार सामग्री का प्रकाशन, हिंदी भाषा के माध्यम से ही किया जाए। इस अवसर पर केन्द्र के निदेशक एवं कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. नितीन वसन्तराव पाटिल ने कहा कि पखवाड़े की सफलता हेतु सामूहिक एवं सकारात्मक प्रयास ऐसे कार्यक्रमों को वृहद् स्तर पर आयोजित करने की ओर हमें प्रोत्साहित कर रहे हैं। विशिष्ट अतिथि डॉ.एस.सी.गुप्ता, सहायक महानिदेशक, भाकृअनुप, डॉ.एस.एम.के.नकवी, निदेशक, केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर एवं डॉ. बी.के.बेनीवाल, अधिष्ठाता, राजुवास,

बीकानेर द्वारा भी राजभाषा के उत्तरोत्तर विकास हेतु हिंदी को अपनाए जाने संबंधी विचार प्रकट किए गए। मुख्य अतिथि प्रो. पाठक के कर कमलों द्वारा केन्द्र की राजभाषा पत्रिका 'करभ' के नवम् अंक का विमोचन एवं विजेताओं को पुरूस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. निर्मला सैनी एवं श्री हरपाल सिंह द्वारा तथा धन्यवाद प्रस्ताव डॉ. राघवेन्द्र सिंह द्वारा दिया गया।

करभ पत्रिका का विमोचन

राजभाषा नीति कार्यान्वयन के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा 'अनुसंधान कार्यों हेतु फोटोग्राफी की तकनीकी जानकारियां' विषय पर 10 जुलाई, 2012 को आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में फोटो पत्रकार श्री दिनेश गुप्ता, केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान के आर्टिस्ट सह फोटोग्राफर श्री संजय पाटिल एवं नीकॉन कम्पनी के प्रतिनिधि श्री गजेन्द्र को आमन्त्रित किया गया। सर्वप्रथम प्रभारी राजभाषा डॉ.निर्मला सैनी ने कार्यशाला के उद्देश्य एवं महत्व पर प्रकाश डाला। फोटो जर्नलिस्ट श्री दिनेश गुप्ता ने छोटे व बड़े कैमरे से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी देते हुए कहा कि कम्प्यूटर जगत में कैमरे के उपयोग सम्बन्धित तकनीकी बिन्दुओं को समझा जाए। केन्द्र निदेशक डॉ.एन.वी.पाटिल ने कहा कि केन्द्र के प्रकाशनों में अनुसंधान संबंधी गतिविधियों को प्रदर्शित करने हेतु गुणवतापूर्ण छायाचित्रों की हमेशा आवश्यकता रहती है, अत: विविध विषयों में ज्ञानार्जन करने से आपके व्यक्तित्व में भी निखार लाएगा। 30 मार्च, 2013 को आयोजित राजभाषा कार्यशाला में अतिथि वक्ता श्री ब्रजरतन जोशी, व्याख्याता (हिंदी साहित्य), राजकीय डूँगर महाविद्यालय, बीकानेर द्वारा 'राजभाषा प्रबन्धन' एवं श्री बी.एल. भादानी, प्रोफेसर, अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी द्वारा 'उष्ट्र : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में' विषयक व्याख्यान प्रस्तुत किए गए। श्री ब्रजरतन जोशी ने कहा कि प्रबन्धन हेतु भाषा के प्रति समर्पण पहला सूत्र है। श्री बी.एल. भादानी ने कहा कि 300-350 वर्षों में उष्ट्र पालन व्यवसाय में आए बदलाव तथा इसकी पालन पद्धति, ऐतिहासिक महत्व आदि को सामने लाया जाना चाहिए।

इस अवसर पर केन्द्र निदेशक डॉ.एन.वी. पाटिल ने कहा कि जब कोई भी विद्वान व्यक्ति अपनी जीवन अनुभूत यात्रा/अनुभवों को व्याख्यान आदि के माध्यम से प्रस्तुत करता है तो यह उनके संपूर्ण जीवन का सार होता है। ये व्याख्यान हमें पुन: चेतनता प्रदान करते हैं। उन्होंने कहा कि

ऐतिहासिक व समकालीन परिस्थितियों, प्रमाणिकताओं से जुड़ाव स्थापित किया जाए ताकि ये उष्ट्र प्रजाति के संरक्षण एवं विकास में सहायक सिद्ध हो सके। उन्होंने भाषा रूपी अग्नि हमेशा प्रज्जवलित रखते हुए प्रचलित भाषा के प्रयोग की सलाह दी। सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कार्यशाला का समापन किया गया।

श्री ब्रजरतन जोशी , अतिथि वक्ता, राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर

वैज्ञानिक उपलब्धियाँ

- केन्द्र द्वारा इस वर्ष फील्ड स्तर (ग्रामीण) पर लगाई गई कुल 5 प्रदर्शनियों में 2 प्रदर्शनियों में प्रथम पुरस्कार एवं 1 में द्वितीय पुरस्कार अर्जित किया।
- ऊँट का पर्यटन उद्योग में नवीन उपयोग किया गया जिसके आधार पर वर्ल्ड ट्रीप एडवाइजर ऑर्गेनाईजेशन द्वारा केन्द्र को उत्कृष्ट कार्य हेतु प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।
- केन्द्र द्वारा युवा पीढ़ी को कृषि विज्ञान विषय के प्रति रूझान बढ़ाने हेतु प्रथम बार कृषि शिक्षा दिवस के रूप में मनाया गया।
- किसानो के लिए कृषि प्रौद्योगिकी और प्रबंधन अकादमी)आत्मा (के तहत पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम)14-18 जनवरी, 2013) का आयोजन केंद्र द्वारा किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में, झुंझनुं जिले के 30 किसानों को राज्य पशुपालन विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा नामित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उष्ट्र प्रबंधन, उष्ट्र प्रजनन, उष्ट्र पोषण और उष्ट्र स्वास्थ्य के अलावा उष्ट्र का उपयोग जैसे कि भारवाहक क्षमता एवम उष्ट्र दूध उत्पादन एवम दूध मूल्य सवर्धन के बारे में भी जानकारी दी गई। पशुपालन के अन्य विभिन्न पहलुओं जैसे कि अश्व और भेड़ पालन के बारे में भी विषय विशेषज्ञों द्वारा जानकारी दी गई। किसानो को प्रशिक्षण पुस्तिका और अन्य प्रसार सामग्री भी वितरित की गई ।
- चल क्लीनिक के अन्तर्गत वर्ष के दौरान बीकानेर के आसपास के गांवों में 36 यात्राएं की गई। इन गांवों में मोरखानाकेसर ,सुरधना ,गीगासर ,–देसर बोरान ,देशनोक ,शोभासर ,हुसनसर ,नोरंगदेसर ,जैमलसर , बम्ब ,पुगल ,खाजुवालालूं और हमेरा-राजेरा शामिल हैं। इन महत्वपूर्ण यात्राओं में उष्ट्र प्रसार कार्य जैसे की उष्ट्र प्रबंधन, उष्ट्र प्रजनन, उष्ट्र पोषण और उष्ट्र स्वास्थ्य की जानकारी उष्ट्रपालको को विषय विशेषज्ञों द्वारा प्रदान की गई ।
- टोरडियों में ठीकरिया (स्किन कैंडीडियेसिस(के उपचार में 2.0 प्रतिशत पोटाशियम आयोडाइड के पानी के घोल, सरसों के तेल में 6.0 प्रतिशत गंधक का पाउडर व 10.0 प्रतिशत सोडियम थायोसल्फेट के घोल से

धोकर तत्पश्चात दूसरे दिन से सरसों के तेल में 6.0 प्रतिशत गंधक का पाउडर व 3.0 प्रतिशत सेलिसिलिक एसिड उपचारों से टोरडियों में ठीकरिया से रूग्णता नुकसान को बचाया जा सकता है।

- सर्रा रोग के प्रकोप से ऊँट प्रजाति को बचाने हेतु ब्रेन स्टोर्मिंग का आयोजन किया गया जिससे अनुसंधान हेतु व बचाव हेतु मुख्य मुद्दे तलाशे गए।
- क्षय रोग से मृत ऊँटो के फेफडो मे से संवर्धन विधि व पी. सी. आर. तकनीक द्वारा माइकोबेक्टेरिम बोविस बैक्टीरिया की पहचान की गई।
- ऊँट से पृथक ट्रीपैनोसोमा इवान्सी के ओलीगोपेपटीडेज बी, आई.टी.एस., वी.एस.जी.और पाराफ्लाजेलर रॉड (1 और 2) जीनों का आण्विक अभिलक्षण किया गया।
- अन्तिम ग्याभिन अवस्था में ऊँटनियों को पूरक आहार अधिक फायदेमंद पाया गया। चराई वाले टोरडियों में ग्वार कोरमा, बाजरा दाना क्षेत्र विशिष्ट खनिज मिश्रण के साथ देने पर वृद्धि दर अधिक पाई गई।
- वंशावली वितरण में आरडीपी डाटा बेस के आधार पर वयस्क ऊँटों एवं टोरडियों दोनों के मल नमूनें में प्रमुख रूप से फरमीक्यूटस बैक्टीरियोडेट्स व प्रोटियोबैक्टीरिया मिलें।
- ऊँट की ई-कोलाई में इंटरफेरॉन गामा के प्रकटन में सफलता प्राप्त की गई।

राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, लखनऊ

हिंदी पखवाड़ा

दिनांक 14 सितम्बर, 2012 को निदेशक महोदय की अध्यक्षता में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रसिद्ध कवि श्री सुनील कुमार बाजपेयी जी थे जिन्होंने अपने सम्बोधन में हिंदी की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए अपनी काव्य रचनाओं से उपस्थित जन समुदाय को मंत्र मुग्ध कर दिया। इस अवसर पर संस्थान के सदस्यों द्वारा भी हिंदी के महत्व की चर्चा की गयी तथा विशेष अतिथियों के रूप में उपस्थित कवियों श्री घनानन्द पाण्डेय 'मेघ', श्री हरिमोहन बाजपेई 'माधव', श्री अखिलेश त्रिवेदी 'शाश्वत' एवं कवियत्री डा. रश्मिशील के द्वारा काव्य रचनायें प्रस्तुत की गयीं।

हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन

ब्यूरो में 15 से 29 सितम्बर, 2012 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस दौरान संस्थान के कर्मियों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के प्रति उत्साह उत्पन्न करने के उद्देश्य से अनेक हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। दिनांक 29 सितम्बर को हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह सम्पन्न हुआ जिसकी अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डा. जे. के. जेना ने की। इस अवसर पर रामपाल त्रिवेदी कालेज, गोसाईगंज के प्रचार्य एवं प्रसिद्ध ओज कवि डा. रामेश्वर प्रसाद द्विवेदी 'प्रलयंकर' जी मुख्य अतिथि तथा युवा ओज कवि श्री अभय सिंह 'निर्भीक' विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अतिथियों ने अपने सम्बोधन में हिंदी के प्रयोग की विशेषताओं की चर्चा की तथा अपनी काव्य रचनायें प्रस्तुत कीं । मुख्य अतिथि द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किये गये। प्रतियोगिताओं में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए श्री राम सकल चौरसिया, वैयक्तिक सहायक को 'सर्वश्रेष्ठ हिंदी प्रतियोगी–2012' के पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

'भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में सामान्य प्रशासनिक एवं वित्तीय नियम' विषय पर एक जागरूकता कार्यशाला का आयोजन दिसम्बर 28 दिसम्बर को संस्थान में किया गया। संस्थान के निदेशक डा. जे.के. जेना की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यशाला में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के लखनऊ स्थित संस्थानों केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान तथा भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के वित्त एवं लेखधिकारियों श्री जी.डी अमोला तथा श्री ए.के. श्रीवास्तव विशेषज्ञ अतिथि के रूप में उपस्थित थे। श्री अमोला ने सामान्य वित्तीय नियमों पर मुख्य व्याख्यान प्रस्तुत किया तत्पश्चात एक पारस्परिक प्रश्नोत्तर सत्र आयोजित किया गया जिसमें अनेक विषयों पर परिचर्चा हुई। प्रमुख विषय इस प्रकार थे:

1. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के नियम एवं उपनियम
2. सामान्य वित्तीय नियम
3. वित्तीय शक्तियों का प्रत्यायोजन
4. इस कार्यशाला में राजभाषा हिंदी को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से समस्त चर्चाएं हिंदी में ही की गयी।

राष्ट्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान केन्द्र, झांसी

हिंदी पखवाड़ा

केन्द्र में दिनांक 14 से 29 सितम्बर तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। 14 सितंबर को राष्ट्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान केंद्र, झॅासी में डॉ. आर. के. तिवारी, कार्यवाहक निदेशक की अध्यक्षता में हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ आई.सी.ए.आर. कुलगीत से किया गया। संस्थान के निदेशक ने अपने उद्बोधन में सभी से अपील की कि हिंदी को बढावा देना हम सभी का कर्तव्य है इसलिए सरकारी कामकाज में ज्यादा से ज्यादा हिंदी का प्रयोग किया जाए। डॉ. आर. के. तिवारी ने कहा कि हिंदी के प्रयोग में हिचकिचाहट नही होनी चाहिए तथा खुलकर हिंदी भाषा का प्रयोग करना चाहिए। डा. आर. पी. द्विवेदी, प्रभारी अधिकारी, राजभाषा कार्यक्रम में उपस्थित केंद्र के वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत करते हुए हिंदी पखवाड़ा की संक्षिप्त रूप–रेखा एवं कार्यक्रमों की जानकारी प्रस्तुत की। पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में निर्णायक मंडल द्वारा प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार हेतु प्रतिभागियों का चयन किया गया।

इस दौरान हिंदी आशुभाषण प्रतियोगिता तथा लघु कथा, वाद–विवाद प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता, सुलेख प्रतियोगिता, प्रश्न मंच प्रतियोगिता, इमला प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता तथा शोध पत्र प्रतियोगिता का अयोजन किया गया जिसमें केन्द्र के सभी श्रेणी के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। वर्ष के दौरान प्रशासनिक वर्ग से 20,000 या उससे अधिक शब्द हिंदी में लिखने के लिए निर्णायक मण्डल द्वारा श्रीमती

कौशल्या देवी, कनिष्ठ लिपिक को प्रथम, श्री महेन्द्र कुमार, सहायक को द्वितीय एवं श्री बीरेन्द्र सिंह, सहायक को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। 29 सितम्बर को हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह केन्द्र निदेशक डा. एस. के. ध्यानी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्रीमती नीलम कलसी, पूर्व प्राचार्या, गुरू हरकिसन महाविद्यालय, झाँसी थीं। इस अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरित किये गये। इस अवसर पर ''कृषिवानिकी आलोक–2012'' के षष्टम् अंक का विमोचन भी मुख्य अतिथि द्वारा किया गया।

केन्द्र में हिंदी पखवाड़े का आयोजन

हिंदी कार्यशाला

राष्ट्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान केन्द्र, झाँसी में 28.03.2012 को केन्द्र निदेशक डा. एस. के. ध्यानी की अध्यक्षता में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डा. ध्यानी ने कहा कि भारत सरकार के गजट में इस केन्द्र का नाम ''क'' क्षेत्र में है, इसलिए हम लोगों को अपना प्रशासनिक कार्य शतप्रतिशत हिंदी में करना है। उन्होने समस्त वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों का आह्वान किया कि धारा 3(3) के उपर विशेष ध्यान दिया जाए। कार्यशाला के प्रारम्भ में डा. आर. पी. द्विवेदी, प्रभारी अधिकारी राजभाषा ने सभी का स्वागत करते हुए कार्यशाला की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। कार्यशाला के मुख्य वक्ता डा. सी. के. बाजपेयी, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने ''राजभाषा कार्यान्वयन, संवैधानिक प्रावधान : हमारा उत्तरदायित्व एवं अपेक्षायें'' विषय पर अपना विस्तृत व्याख्यान दिया।

''जलवायु परिवर्तन एवं प्रतिस्कंदी कृषि'' विषय पर 8 जून को आयोजित कार्यशाला में डा. राम नेवाज, प्रधान वैज्ञानिक एवं कार्यक्रम प्रमुख (कृषिवन) ने लोगो को बताया कि केन्द्र में 2005 से ही सफेद सिरिस पर कार्य हो रहा है, जिसके बहुत सुखद परिणाम प्राप्त हुए हैं। उन्होने कृषिवानिकी क्षेत्र का मानचित्रण, जी.आई.एस. रिमोट सेंसिंग, कार्बन सिक्वेस्ट्रेषन, सी.ओ–2, रेनफेड ऑवला आधारित कृषिवानिकी, पेड़ों की सघनता तथा पेड़ों की प्राथमिकता पर विस्तार से लोगों को बताया गया।

''यूनीकोड'' पर 14 सितम्बर को आयोजित कार्यशाला में डा. आर. एच. रिजवी, वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा प्रभारी अधिकारी संगणक प्रकोष्ठ ने अपना विस्तृत व्याख्यान दिया। उन्होंने यूनिकोड के माध्यम से कम्प्यूटर पर हिंदी टाईपिंग की जानकारी दी । वर्ड प्रोसेसर जैसे एम.एस. वर्ड, नोटपैड आदि में यूनीकोड के माध्यम से हिंदी के अक्षर टाइप करना, उसमें मात्रायें लगाना भी बताया । उन्होने बताया कि कम्प्यूटर के विभिन्न आपरेटिंग सिस्टम हैं उनमें से प्रमुख रूप से विंडोज एक्स पी, विंडोज विस्टा, विन्डोज–7 इत्यादि पर यूनीकोड को कैसे इन्स्टाल किया जाय। यूनीकोड के प्रयोग से सर्च इंजिन जैसे गूगल में लिखित सामग्री ढ़ूँढना, हिंदी में पावर पाइंट प्रस्तुतिकरण

तैयार करना आदि भी सिखाया गया। यूनीकोड को http://bhashaindia.com वेबसाइट से आसानी से डाउनलोड करके किसी भी कम्प्यूटर में उपयोग किया जा सकता है।

''जलवायु परिवर्तन एवं कृषि वानिकी '' विषय पर 14 दिसंबर को डा. राम नेवाज, प्रधान वैज्ञानिक तथा कार्यक्रम प्रमुख (कृषि वन) ने एक व्याख्यान दिया। उन्होने जलवायु परिवर्तन के कारकों, प्रभावों एवं उनसे निपटने के लिए उपलब्ध अनुभवों, वैज्ञानिक तकनीकों को समझना तथा अग्रिम रणनीति तैयार करना बताया गया। कार्यशाला के दौरान जलवायु परिवर्तन की विभीषिका, कृषकों की समझ, कृषिवानिकी द्वारा जलवायु परिवर्तन की दर कम करने, वातावरण से कार्बन अवशोषण तथा जलागम विकास का जलवायु चक्र ठीक करने में योगदान आदि विषयों पर कार्यशाला के दौरान जानकारी दी गई।

जलवायु परिवर्तन एवं कृषि वानिकी पर हिन्दी कार्यशाला

.

- केन्द्र द्वारा ''विभिन्न मिट्टी की पारिस्थितिकी में कृषिवानिकी मानदण्डों'' पर प्रशिक्षण दिया गया।
- पर्यावरण सेवा जीविकोपार्जन सुरक्षा एवं जलवायु प्रतिस्कंदी कृषि के लिए कृषि वानिकी चुनौतियां एवं अवसर'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
- केन्द्र द्वारा ''जलागम के आधार पर प्राकृतिक संसाधनों का प्रबन्धन एवं कृषिवानिकी'' विषय पर प्रशिक्षण का अयोजन किया गया।
- जलागम समिति के अध्यक्षों, सचिवों, सदस्यों एवं स्वयं सहायता समूहों के सचिवों एवं सदस्यों के लिए केन्द्र द्वारा '' लेखा एवं रोकड़ बही'' पर प्रशिक्षण दिया गया ।
- केन्द्र द्वारा ग्राम गणेशगढ़, जिला झांसी में किसान मेला एवं प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन कृषक सहभागिता अनुसंधान केन्द्र, झाँसी द्वारा किया गया।
- केन्द्र एवं विकास विकल्प, गैर सरकारी संस्था के संयुक्त तत्वाधान में ''जलवायु परिवर्तन '' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न स्वयंसेवी संस्थाओं से जुड़े कार्यकर्ताओं और अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिकों ने भाग लिया।
- वन महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- ग्राम गणेशगढ़, ब्लाक–बड़ागॉव, जिला–झॉसी में तीन दिवसीय बेर में कलम बॉधने का प्रशिक्षण दिया गया जिसमें किसान भाई, महिलाओं तथा ग्रामीण युवकों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया।

गेहूँ अनुसंधान निदेशालय, करनाल

हिंदी कार्यक्रम

गेहूँ अनुसंधान निदेशालय, करनाल के हिंदी अनुभाग द्वारा विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये तथा राजभाषा प्रचार–प्रसार के लिए निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हर सम्भव प्रयास किये गये। हिंदी पखवाड़ा 14–28 सितंबर के दौरान आयोजित किया गया । इस दौरान सभी वर्ग के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया तथा विजेताओं को हिंदी पखवाड़ा के समापन समारोह के अवसर पर 28 सितम्बर को परियोजना निदेशक, डॉ. इन्दु शर्मा द्वारा सम्मानित किया गया। राजभाषा के प्रचार–प्रसार के लिए चार वृत चित्र (सेतु, कलमकारी, गोपुरम, गांधी और गुलामी) खरीदे गए हैं।

निदेशालय में हिंदी पखवाड़े का आयोजन

नराकास बैठकों का आयोजन

1. नराकास, करनाल की समीक्षा बैठक 27.06.2011 तथा 26.12.2012 को राष्ट्रीय डेरी अुनसंधान संस्थान, करनाल में आयोजित हुई जिसमें डॉ० अनुज कुमार (प्रभारी हिंदी अनुभाग) ने भाग लिया।
2. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल द्वारा वर्ष 2011–12 के दौरान गेहूँ अनुसंधान निदेशालय, को राजभाषा (हिंदी) में उल्लेखनीय कार्य हेतु तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल द्वारा गेहूँ अनुसंधान निदेशालय को राजभाषा (हिन्दी) के उल्लेखनीय प्रयोग हेतु तृतीय स्थान दिया गया।

नराकास से तृतीय पुरस्कार ग्रहण करते हुए निदेशालय के अधिकारीगण

3 विशेष हिंदी सम्मेलन एवं कार्यशाला 11–13 जुलाई, 2012 को नैनीताल, उत्तराखंड में निदेशालय के 02 कर्मचारियों ने भाग लिया।

कार्यशाला का आयोजन

- दिनांक 16 जून 2012 "आँखों एवं दांतों की देखभाल" विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।

- दिनांक 21 सितंबर 2012 को ''सिमटते परिवार घटते नैतिक मूल्य'' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।

महत्वपूर्ण अनुसंधान उपलब्धियाँ

- गेहूँ एवं जौ की उत्पादकता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान के लिए 16 जुलाई, 2012 को गेहूँ अनुसंधान निदेशालय, करनाल को चौधरी देवी लाल सर्वश्रेष्ठ अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना अवार्ड से नवाजा गया।

- वर्ष 2013 के दौरान एनएचआरडीएफ, सलारू, राष्ट्रीय डेरी संस्थान, करनाल तथा केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा लगाए गए प्रदर्शनियों में डी डब्ल्यू आर के स्टॉल को सर्वश्रेष्ठ स्टॉल के पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

- केन्द्रीय प्रजाति विमोचन समिति (सी वी आर सी) द्वारा देश के विभिन्न उत्पादन स्थितियों के लिए गेहूँ की चार नई किस्मों एम पी 3228, यू ए एस 428, पी बी डब्ल्यू 644, तथा टी एल 2969 का अनुमोदन किया गया।

- दुर्गापुरा, जयपुर में 24–27 अगस्त 2012 के दौरान आयोजित 51 वीं अखिल भारतीय गेहूँ एवं जौ शोधकर्ताओं की बैठक में गेहूँ की नौ नई किस्मों एच पी डब्ल्यू 349, डब्ल्यू एच 1105, डी बी डब्ल्यू 71, एच डी 3059, राज 4229, राज 4238, एच आई 8713 (कठिया) एम पी 3336 एवं डब्ल्यू एच डी 948 की पहचान विमोचन के लिए गई।

- विशिष्ट गुणों के लिए गेहूँ के सात जेनेटिक स्टॉक डब्ल्यू सी एफ 12–7, डब्ल्यू सी एफ 12–9, डब्ल्यू सी एफ 12–16, डब्ल्यू सी एफ 12–208, डी डब्ल्यू आर एफ –1, डी डी के 1037 (खपली) एवं यू ए एस 320 को एन बी पी जी आर, नई दिल्ली में पंजीकृत किया गया।

- विलुप्तप्राय श्रेणी में गेहूँ की 85 किस्मों का पंजीकरण किया गया।

- डी ए सी 28619.55 कुंतल प्रजनक बीज मांग पत्र के एवज में 157 किस्मों का 30 बीज उत्पादन केन्द्रों के माध्यम से 35893.09 कुंतल बीज का उत्पादन किया गया। साथ ही 154 किस्मों के 1958.35 कुंतल नाभीकीय बीज का भी उत्पादन किया गया।

- जैविक और अजैविक तनाव की आनुवंशिक अध्ययन के लिए खर्चिया 65 (बहुतनाव रोधिता) के एक पैरेंट के रूप में प्रयोग कर क्रॉस बनाए गए।

- निदेशालय में विशिष्ट क्रॉस के अतिरिक्त विभिन्न परियोजनाओं के अन्तर्गत कुल मिलाकर 1200 क्रॉस बनाए गए।

- भारतीय गेहूँ की 189 एडवांस लाईनों का यू जी 99 के प्रति रोधकता के लिए केन्या तथा इथोपिया में मूल्यांकित किया गया।

- करनाल बंट के संक्रमण को परखने के लिए 9280 नमूनों का परीक्षण किया गया जिनमें पिछले वर्ष की तुलना में संक्रमण कम था। मध्य व प्रायद्वीपीय क्षेत्र से प्राप्त नमूने करनाल बंट मुक्त थे।

- ब्लैक पाईंट के लिए मूल्यांकित 4133 नमूनों में से 72.33 प्रतिशत नमूने संक्रमित पाए गए।

- गेहूँ या धान में जुताई का उत्पादकता पर कोई खास प्रभाव नहीं देखने को मिला। जबकि रोटरी टिलेज तकनीक से जीरो टिलेज व पारंपरिक विधि की तुलना में अधिक उपज मिला।

- धान की सीधी बीजाई में रोपाई की तुलना में कम उपज मिला।

- छः पंक्ति गेहूँ के साथ एक पंक्ति सरसों की अन्तःफसल से अधिकतम समतुल्य उपज प्राप्त हुआ।

- सिंचाई से ठीक पहले नत्रजन डालना सिंचाई के बाद नत्रजन डालने से अधिक लाभकारी पाया गया।

- चपाती की गुणवत्ता के लिए राज 4238, एम पी 3336, पी बी डब्ल्यू 175, सी 306, एच आई 1567, के 8027, एच डी 2888, एच आई 1500 एवं एन आइ ए डब्ल्यू 1415 काफी अच्छे (>8.0/10) पाए गए।

- वर्ष 2011–12 के दौरान 204 गेहूँ तथा 40 जौ के अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन किया गया।

- निदेशालय द्वारा विकसित द्वि पंक्ति जौ की नई किस्म डी डब्ल्यू आर बी 91 का उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र में देरी से बीजाई के लिए केन्द्रीय प्रजाति विमोचन समिति द्वारा व्यवसायिक खेती के लिए द्वारा अनुमोदित किया गया है। इस प्रजाति से कपास, बाजरा एवं गन्ना वाले क्षेत्रों में लाभ मिलेगा।

- डी ए सी से जौ की 28 किस्मों के लिए 1841.6 कुंतल प्रजनक बीज के लिए प्राप्त मांग पत्र के एवज में 1905.8 कुंतल बीज का उत्पादन किया गया।

- न्यूनतम जुताई तकनीक पारंपरिक विधि की तुलना में जौ के उत्पादन के लिए सर्वाधिक लाभप्रद पायी गया। इससे जुताई पर खर्च, उर्जा, श्रम की बचत होती है तथा मृदा स्वास्थ्य में सुधार भी होता है।

भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान, रांची

हिंदी चेतना मास

भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान में 01 सितम्बर से 30 सितम्बर, 2012 तक हिंदी चेतना मास तथा 13 सितम्बर को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. रतन प्रकाश, पूर्व विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, रॉची विश्वविद्यालय, रॉची ने हिंदी के प्रसार में हिंदी फिल्मों के योगदान पर व्याख्यान दिया। डॉ. प्रकाश ने कहा कि यदि भारत में हिंदी फिल्में नहीं बनती तो हिंदी भाषा का हाल भी संस्कृत व पाली भाषाओं की तरह हो जाता। उन्होने देश के कई प्रतिष्ठित हिंदी पत्रिकाओं के विलुप्त होने पर दुखः व्यक्त किया।

संस्थान के निदेशक, डॉ. रंगनातन रमणि ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि संस्थान में प्रशासनिक कार्य के साथ–साथ वैज्ञानिक साहित्य में भी हिंदी का अच्छा प्रयोग हो रहा है। संस्थान द्वारा नियमित अंतराल पर हिंदी/द्विभाषी पुस्तिकाएं, पत्रक इत्यादि प्रकाशित होते रहते हैं। संस्थान द्वारा नियमित रुप से कृषकों एवं विद्यार्थियों हेतु हिंदी भाषा में प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाते हैं जिससे प्रतिवर्ष हजारों लोग लाभान्वित होते हैं। हमारा पुस्तकालय वैज्ञानिक साहित्य की दृष्टि से बहुत समृद्ध है, साथ ही यहॉ प्रचुर संख्या में हिंदी की पुस्तक/पुस्तिकाएं एवं पौराणिक ग्रंथ उपलब्ध हैं।

हिंदी चेतना मास के दौरान हिंदी टिप्पण, प्रारूप लेखन, निबंध, अंताक्षरी, पर्याय, व्याख्यान एवं हिंदी सुलेख प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के साथ–साथ संस्थान के हिंदी प्रकाशनों की एक प्रर्दशनी लगाई गई। सभा संचालन डॉ अंजेश कुमार, त.अ. एवं वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी श्री सुजीत कुमार सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। हिंदी चेतना मास के दौरान संस्थान के 89 वें स्थापना दिवस के अवसर पर 20 सितम्बर को एक हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें बनारस से आए कवि सर्वश्री फजिहत गहमरी, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ के अनवर बिलासपुरी, गया, बिहार के डा. प्रवीण परिमल, गाजिपुर, उ.प्र. के जयप्रकाश जिद्‌दी, रॉची के कामेश्वर श्रीवास्तव 'निरंकुश' तथा कुमार ब्रिजेन्द्र ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

हिंदी दिवस समारोह का आयोजन

हिंदी संगोष्ठी

भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान में 22 मार्च, 2013 को ''जलवायु परिवर्तन एवं इसके परिणाम'' पर एक दिवसीय नगर–स्तरीय हिंदी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संस्थान के निदेशक, डॉ. रंगनातन रमणि ने अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान के कार्यकलापों के साथ–साथ जलवायु परिवर्तन एवं प्राकृतिक राल एवं गोंद के उत्पादन पर इसका प्रभाव पर विस्तृत चर्चा की। संगोष्ठी के संयोजक एवं विभागाध्यक्ष डॉ. केवल कृष्ण शर्मा ने अपने संबोधन में विचारणीय विषयों पर विस्तृत प्रकाश डाला। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि डॉ. आनन्द भूषण, अध्यक्ष, झारखण्ड अधिविद्या परिषद्, रांची ने अपने संबोधन में कहा कि इसका संरक्षण हम सब की जिम्मेवारी है तथा विश्वब्यापी बढ़ती गर्मी में विकसित देशों का योगदान सर्वाधिक है। संगोष्ठी में केन्द्र सरकार के रॉची स्थिति 18 कार्यालयों के 32 अधिकारियों तथा संस्थान के वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों समेत 92 लोगों ने भाग लिया।

संगोष्ठी के दो तकनीकी सत्रों में से प्रथम सत्र में 4 आलेख पढ़े गए। प्रथम सत्र के अध्यक्ष एवं मुख्य वक्ता के रुप में बोलते हुए डॉ. एस. हक, निदेशक–प्रध्यापक, केन्द्रीय मनःचिकित्सा संस्थान, कांके, रॉची ने ''जलवायु परिवर्तन का मानसिक स्वास्थ्य पर असर'' विषय पर प्रकाश डाला। डॉ. मो. मोनोब्रुल्लाह वरि. वैज्ञानिक ने ''जलवायु परिवर्तन एवं भारतीय कृषि'', श्री सुब्रतो कुमार नाग, सी.आर.पी.एफ. ने ''पृथ्वी का तापमान एवं जलवायु परिवर्तन'' तथा श्री राजेश कुमार, सी.आर.पी.एफ. ने ''भारतीय कृषि एवं प्रौद्योगिकी पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव'' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. शिवेन्द्र कुमार, प्रमुख भा.कृ. अनु.प. अनुसंधान परिसर, प्लांडु, नामकुम की अध्यक्षता संगोष्ठी के द्वितीय तकनीकी सत्र में 3 आलेख पढ़े गए। इंजि. मुरारि प्रसाद, प्रधान वैज्ञानिक, ने ''जलवायु परिवर्तन एवं उसका दुष्प्रभाव'' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। टसर अनुसंधान संस्थान, नगड़ी, रॉची के डॉ. प्रशान्त कुमार कर तथा डॉ. ए.के. श्रीवास्तव ने भी अपने आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र में प्रतिभागियों के विचार आमंत्रित किए गए तथा संस्थान के निदेशक डॉ. रंगनातन रमणि ने संगोष्ठी को संबोधित किया। धन्यवाद ज्ञापन एवं संगोष्ठी का संचालन आयोजन समिति के सचिव डॉ. अंजेश कुमार ने किया।

जलवायु परिवर्तन एवं इसके परिणाम पर हिंदी संगोष्ठी

मुख्य उपलब्धियां

लाख कीटों में परजीवी प्रकोप की आण्विक पहचान
जीन बैंक में जीन श्रृंखला का समावेशन
लाख से जुड़े जन्तुओं का परिपालक से संबंधित भिन्नता
लाख परिपालक पौधों के जैवरासायनिक स्वरूप पर जलवायु का प्रभाव
लाख कीट कोशिकाओं का परखनली में संवर्द्धन
बेर (*जीजीफस मौरीसीयाना*) का जैव रासायनिक विश्लेषण
स्टार्कुलिया यूरेन्स से गोंद का निष्कर्षण
टैमेरिंड करनेल पावडर (टीकेपी) के शुद्धिकरण की विधि में सुधार (टीकेपी)
लाख मोम–मूल्यवान *ऑक्टैकोसैनौल* का आशाजनक स्त्रोत
मोरींगा ओलीफेरा से गोंद के निष्कर्षण की वैज्ञानिक तकनीक

भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बंगलुरु

हिंदी सप्ताह

संस्थान में दिनांक 14 से 24 सितंबर के दौरान हिंदी सप्ताह आयोजित किया गया। हिंदी सप्ताह का उद्घाटन समारोह दिनांक 14 सितंबर को आयोजित किया गया, जिसमें प्रोफेसर बी.वाय. ललिताम्बा, पूर्व विभाग प्रमुख, तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति विश्वविद्यालय, इन्दौर, मध्य प्रदेश मुख्य अतिथि थीं। 15 सितंबर को *हिंदी शब्दावली एवं टिप्पण* तथा *सुलेख* प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। 17 सितंबर को संस्थान के कर्मचारियों के लिए *आशु भाषण* प्रतियोगिता और संस्थान के कर्मचारियों के बच्चों के लिए *हिंदी कविता पाठ* और *हिंदी पढ़ना* प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। 18 सितंबर को *हिंदी संवाद* प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसका संचालन संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. आर.बी. तिवारी ने किया। 21 सितंबर को *हिंदी गीत* प्रतियोगिता आयोजित की गई। उपर्युक्त प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त एक *पूर्व लिखित हिंदी निबंध* प्रतियोगिता भी आयोजित की गई, जिसका विषय था ''भारत में बागवानी''। हिंदी सप्ताह का *समापन समारोह* 24 सितंबर को डॉ. अमरीक सिंह सिद्धू, निदेशक, भा.बा.अ.सं., की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। समापन समारोह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार व प्रमाण–पत्र वितरित किए गए।

मुख्य अतिथि प्रो0 बी. वाई ललिताम्बा द्वारा दीप प्रज्वलन

हिंदी कार्यशाला

संस्थान में वर्ष 2012–13 के दौरान निम्नलिखित हिंदी कार्यशालाएँ आयोजित की गईं:

- प्रशासनिक वर्ग के कर्मचारियों के लिए 28.09.2012 को ''मूल रूप से हिंदी में कार्य कैसे करें?'' विषय पर एक कार्यशाला आयोजित की गई।
- ''कम्प्यूटर पर आसानी से हिंदी में कार्य'' विषय पर रोकड़ व बिल अनुभाग के कर्मचारियों के लिए दिनांक 01.10.2012 को, स्थापना अनुभाग के कर्मचारियों के लिए 21.01.2013 एवं 04.03.2013 को तथा क्रय अनुभाग के कर्मचारियों के लिए 08.02.2013 को टेबल कार्यशालाएँ आयोजित की गईं।

हिंदी संगोष्ठी

संस्थान में 22–23 नवंबर 2012 को बैंगलूर स्थित केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों के लिए ''कृषि, विज्ञान और प्रौद्योगिकी'' विषय पर हिंदी में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का उद्‌घाटन 22 नवंबर को आयोजित किया गया, जिसमें श्री एस.सी. जोशी, भा.व.से., निदेशक, काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बैंगलूर मुख्य अतिथि थे। उन्होंने ''काष्ठ विज्ञान और प्रौद्योगिकी की नई चुनौतियाँ : काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान के परिप्रेक्ष्य में'' विषय पर व्याख्यान भी दिया। दो दिवसीय संगोष्ठी के दौरान 06 सत्रों में कुल 26 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। इस संगोष्ठी में संस्थान के वैज्ञानिकों/अधिकारियों/कर्मचारियों के अतिरिक्त श्री के.वी. लक्ष्मणमूर्ति, क्षेत्रीय निदेशक, भारतीय वन सर्वेक्षण, बैंगलूर, डॉ. के.वी. कृष्णमूर्ति, निदेशक, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, बैंगलूर, डॉ. जी.एस. सीताराम एवं श्री के. चन्द्रशेखर, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, बैंगलूर, लेफ्ट. कर्नल जी.वी.बी. साई शंकर, डॉ. रमाकांत सिंह, हिन्दुस्तान एयरोनोटिकल्स लिमिटेड, बैंगलूर, श्री पी.एम. जगदीश, आकाशवाणी, बैंगलूर और श्री ललित कुमार, अलिस्डा, बैंगलूर ने भी भाग लिया।

संगोष्ठी के दौरान 06 सर्वश्रेष्ठ शोध–पत्र पुरस्कार भी प्रदान किए गए। ये पुरस्कार डॉ. के.वी. कृष्णमूर्ति, निदेशक, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, बैंगलूर, डॉ. वी. रविन्द्रा, प्रधान वैज्ञानिक, भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बैंगलूर, डॉ. एमक. प्रभाकर, प्रधान वैज्ञानिक, भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बैंगलूर, डॉ. करोलिन रत्तिनाकुमारी, वैज्ञानिक, भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बैंगलूर, डॉ. देबी शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक, भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बैंगलूर तथा डॉ. साजु जॉर्ज, भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बैंगलूर को प्राप्त हुए। संगोष्ठी का समापन 23 नवंबर 2012 को संस्थान के निदेशक डॉ. अमरीक सिंह सिधू की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाण–पत्र प्रदान किए गए।

डॉ. अमरीक सिंह सिद्धू द्वारा संगोष्ठी को संबोधित करते हुए

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बैंगलूर ने संस्थान की राजभाषा पत्रिका *''बागवानी''* को वर्ष 2011–12 की सर्वश्रेष्ठ गृह पत्रिका का पुरस्कार प्रदान किया। यह पुरस्कार दिनांक 06.12.2012 को राष्ट्रीय वांतरिक्ष प्रयोगशालाएँ, बैंगलूर में आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान प्रदान किया गया।

- संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप–समिति द्वारा दिनांक 03 अक्तूबर 2012 को संस्थान की राजभाषा– कार्यान्वयन संबंधी प्रगति का निरीक्षण किया गया।

राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र, अजमेर

हिंदी पखवाड़ा

राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र तबीजी, अजमेर में दिनांक 14 सितम्बर, 2012 को हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 14 से 30 सितम्बर, 2012 तक हिंदी पखवाडा मनाया गया। इस उपक्रम में दिनांक 14.9. 2012 को हिंदी दिवस मनाकर कार्यक्रम को प्रारम्भ किया गया। जिसमें संस्था के निदेशक डॉ. बलराज सिंह द्वारा हिंदी भाषा के महत्व को ध्यान में रखकर कार्यालय के सभी आवश्यक कार्य एवं पत्र–पत्रावलियों का हिंदी में प्रकाशन करने पर ध्यान आकृष्ट किया। इसी क्रम में दिनांक 21 सितम्बर को संस्थान के सभी वैज्ञानिकों एवं सहायक कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताऐं आयोजित की गयी। जिनमें वाद–विवाद, तत्काल भाषण, कार्यालय टिप्पणी लेखन एवं अन्य प्रतियोगिताऐं आयोजित की गयी। सभी ने भाग लेकर प्रतियोगिताओं का आनन्द लिया।

कार्यक्रम की अगली कड़ी में दिनांक 22 सितम्बर, 2012 को बालक एवं बालिकाओं के लिये विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिनमें कविता पाठ, लेखन एवं अन्य सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता शामिल

है जिसमें बच्चों ने पूर्ण उल्लास के साथ इसमें भाग लेकर कर सभी का मनमोह लिया। आयु वर्ग 5 वर्ष तक के बच्चों की प्रतिस्पर्धा में प्रथम स्थान पर शुभम मीणा एवं केशव मिश्रा, तीसरे स्थान पर शौर्य सिंह एवं दिलकुश मीणा ने बाजी मारी। वही दूसरी ओर आयुवर्ग 6 से 8 तक में प्रथम स्थान पर शुभांग सक्सेना एवं तनिशा तथा तीसरे स्थान पर पलक बेनिवाल एवं प्रिटल अव्वल रहें। प्रतियोगिता के इसी क्रम में आयु वर्ग 9 से 12 में प्रथम स्थान पर निखिल राठौड एवं ऐश्वर्या शर्मा तथा तीसरे स्थान पर निपेन्द्र मिश्रा एवं आयुश मीणा रहे। कार्यक्रम के अन्त में डॉ. जी. लाल, प्रधान वैज्ञानिक ने सभी प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान कर उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की एवं उन्हें इसी तरह प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

निदेशक डॉ. बलराज सिंह ने हिंदी भाषा की महत्ता पर जोर देकर भविष्य में हिंदी में कार्य करने के लिये सभी को प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम के समापन पर पुरस्कार भी प्रदान किये गये। हिंदी पखवाड़ा के अन्तर्गत कार्यक्रमों का आयोजन डॉ. बृजेश कुमार मिश्र एवं डॉ. शारदा चौधरी ने संस्थान निदेशक एवं सभी अधिकारियों/कर्मचारियों की सहभागिता में किया।

- केन्द्र द्वारा तैयार मेथी की एक उन्नत प्रजाति ए.फ.जी. 3 को समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना द्वारा उच्च उत्पादन एवं औषधियों गुणों के लिए नामित किया गया है।
- संस्थान द्वारा मसालों का उत्पादन, उत्पादकता एवं गुणवत्ता विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 2–3 फरवरी, 2013 को पंचायती राज भवन, जयपुर में किया गया जिसमें लगभग 300 वैज्ञानिकों एवं शोध छात्रों ने भाग लिया।
- राष्ट्रीय किसान मेला 2013 का सफल आयोजन 15 फरवरी, 2013 को किया गया जिसमें एक हजार किसानों ने नवीनतम कृषि तकनीकों का ज्ञान प्राप्त किया।

केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर

हिंदी पखवाड़ा

केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, कोलकाता में 14 से 28 सितम्बर, 2012 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। समारोह का उद्घाटन 14 सितम्बर को डा. बी0 एस0 महापात्र, निदेशक, ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष एवं संस्थान के निदेशक, डा. बी.एस. महापात्र जी ने अपने संबोधन में कहा कि संविधान सभा द्वारा राज–काज चलाने के लिए तथा केन्द्र व राज्यों के बीच सम्पर्क भाषा की भूमिका निभाने का उत्तरदायित्व हिंदी को ही सौंपा है, क्योंकि यह देश के अधिकांश भाग में बोली व समझी जाती है। उन्होंने कहा कि हमें केवल हिंदी पखवाड़ा मनाने मात्र तक सीमित न रहके यह संकल्प भी लेना है कि हम अपना अधिकाधिक कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने का प्रयत्न करें। डा. सुब्रत सत्पथी, प्रभागाध्यक्ष, फसल सुरक्षा ने संस्थान में समय–समय पर आयोजित होने वाली राजभाषा हिंदी से संबंधित आयोजनों पर संतोष व्यक्त किया तथा डॉ. डी.के. कुंडू प्रभागाध्यक्ष, फसल उत्पादन ने सभी से अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने का आह्वान किया तथा सुझाव दिया कि संस्थान के वेबसाइट में हिंदी–अंग्रजी वाक्यांशों को अपलोड़ किया जाए ताकि नोटिंग करते वक्त प्रशासनिक पदबंधों का प्रयोग किया जा सके।

समारोह में डा. विनोद कुमार, सहायक प्राध्यापक (हिंदी), पश्चिम बंग विश्वविद्यालय, बारासात, कोलकाता मुख्य वक्ता थे। उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा कि संस्कृत और हिंदी देश के दो भाषा रूपी स्तंभ हैं जो देश

की संस्कृति, परंपरा और सभ्यता को विश्व के मंच पर बखूबी प्रस्तुत करते हैं। आज विश्व भर से विद्यार्थी हमारी भाषा और संस्कृति को जानने के लिए हमारे देश का रूख कर रहे हैं। हिंदी सरल, सहज और आसान भाषा है जिसका हमें सर्वाधिक प्रयोग करना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन करते हुए डा. सुरेन्द्र कुमार पाण्ड़ेय, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभारी, हिंदी कक्ष ने इस अवसर पर उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत करते हुए उन्हें हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के बारे में जानकारी दी। पखवाड़ा के अन्तर्गत कई कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें तात्कालिक भाषण, हिंदी टिप्पण एवं मसौदा लेखन, वाद–विवाद प्रतियोगिता, शब्द पर्याय, वाक्यांश लेखन तथा अनुवाद प्रतियोगिता, हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता, हिंदी श्रुतलेखन एवं पठन प्रतियोगिता, हिंदी अनुलेखन एवं पठन प्रतियोगिता, हिंदी टंकण प्रतियोगिता तथा हिंदी में लेख, पुस्तिका प्रकाशन हेतु वैज्ञानिकों के साथ विचार–विमर्श आदि का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों में संस्थान के सभी वर्ग के अधिकारियों व कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

28 सितम्बर को हिंदी पखवाड़ा का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। संस्थान के निदेशक ने अपने संबोधन में हिंदी पखवाड़ा तथा इस दौरान आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के सफल आयोजन पर अपनी खुशी जाहिर की तथा उन्होंने आशा व्यक्त की कि इससे संस्थान में हिंदी के प्रयोग में उत्तरोत्तर प्रगति होगी। श्री मनोज कुमार पचौरी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने अपने संबोधन में कहा कि 14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा ने एक मत से यह निर्णय लिया कि हिंदी ही भारत की राजभाषा होगी। इसी महत्वपूर्ण निर्णय के महत्व को प्रतिपादित करने तथा हिंदी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिए राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर सन् 1953 से संपूर्ण भारत में 14 सितम्बर को प्रतिवर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। अतः हम सभी का कर्तव्य बनता है कि राजभाषा हिंदी का प्रयोग कार्यालयीन कार्य में अधिकाधिक करें। श्री के.पी. नाथ, वित्त एवं लेखा अधिकारी ने प्रशासनिक कार्य को हिंदी में करने पर बल दिया।

विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को इस अवसर पर निदेशक व अन्य वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए। अपने समापन संबोधन में संस्थान के निदेशक ने वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों से अनुरोध किया कि हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए जो कुछ भी किया जा रहा है वह निःसन्देह सराहनीय है, क्योंकि वैज्ञानिक उपलब्धियों को आम किसानों तक पहुंचाने का यह एक उचित माध्यम है और इसका निरन्तर प्रयोग हम सबका दायित्व बनता है। धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ ।

संस्थान के निदेशक डा. बी.एस. महापात्र का संबोधन

हिंदी कार्यशाला

केंद्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, कोलकाता की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में दिनांक 16 मार्च, 2012 को संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी में कार्य करने की झिझक दूर करने के उद्‌देश्य से एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक, डा. बी.एस. महापात्र जी ने की। इस कार्यशाला में व्याख्यान हेतु श्रीमती मंजुश्री, सहायक निदेशक (राजभाषा), हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार निजाम पैलेस, कोलकाता को आमंत्रित किया गया था। इसमें संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। मुख्य वक्ता श्रीमती मंजुश्री ने राजभाषा नीति, नियम, अधिनियम तथा टिप्पण एवं मसौदा लेखन इत्यादि विषयों पर विस्तृत व्याख्यान दिया तथा कर्मचारियों के शंका का समाधान किया। संस्थान के निदेशक, डा. बी.एस. महापात्र जी ने कहा कि हमारे देश में विभिन्न जाति, धर्म व सम्प्रदाय के लोग रहते हैं इस अनेकता के बावजूद भी हम यह मानते हैं कि हमारे देश की सांस्कृतिक एकता है और इसे बनाए रखने में राजभाषा हिंदी का विशेष योगदान है जिसको समृद्ध बनाना हम सभी का पुनीत कर्तव्य है।

डा. पी.जी. कर्मकार, प्रभागाध्यक्ष, फसल सुधार ने अपने संबोधन में संस्थान के कर्मचारियों/अधिकारियों से कार्यालयीन कार्य यथासंभव हिंदी में करने का आग्रह किया। प्रभागाध्यक्ष, फसल सुरक्षा, डा. एस. सत्पथी ने कहा कि सरकार की नीति हिंदी को थोपने की नहीं बल्कि इसकी सरलता एवं अभिव्यक्ति की सहजता के कारण हमें हिंदी में कार्य करने की कोशिश करनी चाहिए। डा. डी.के. कुण्डु, प्रभागाध्यक्ष, फसल उत्पादन ने हिंदी कार्यशाला के प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए अनुरोध किया कि कार्यालय का अधिक से अधिक कार्य हिंदी में किया जाए। संस्थान के वित्त एवं लेखा अधिकारी ने राजभाषा कार्यान्वयन व हिंदी में काम–काज हेतु उदारता एवं सहिष्णुता की नीति अपनाने का सुझाव दिया। डा. एस. के. पाण्डेय, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभारी हिंदी कक्ष ने कहा कि कार्यालय में हिंदी में कार्य करने में कोई कठिनाई महसूस हो तो उसे हिंदी कक्ष के माध्यम से दूर किया जा सकता है। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने का आग्रह किया।

संस्थान में यूनिकोड पर व्याख्यान

प्रशिक्षण सह कार्यशाला

सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए वर्ष के दौरान चार हिंदी प्रशिक्षण-सह-कार्यशाला क्रमशः 19मई, 21जुलाई, 17 नवंबर तथा 22 फरवरी, 2013 को आयोजित की गईं । कार्यशालाओं में स्टाफ के सदस्यों को टिप्पण और प्रारूपण के लिए हिंदी में प्रशिक्षित किया गया। श्री आर.डी. शर्मा , सहायक निदेशक (राजभाषा) ने क्रमशः 10-11 सितंबर, 2012 तथा 4-5, अक्टूबर, 2012 को निरजैफ्ट, कोलकाता और सीआईएफए, भुवनेश्वर में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा आयोजित एक विशेष कार्यशाला में यूनिकोड एन्कोडिंग पर व्याख्यान दिया।

केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर

हिंदी सप्ताह

केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में 14 से 21 सितम्बर तक हिंदी सप्ताह मनाया गया। हिंदी सप्ताह के दौरान अनेक हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्थान के हिंदीतर भाषी, हिंदी भाषी, शोध छात्रों तथा बच्चों के लिए अलग–अलग हिंदी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता, टिप्पणी लेखन प्रतियोगिता, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, कविता पाठ तथा श्रुत लेखन प्रतियोगिता आदि आयोजित की गईं।

21 सितम्बर को समापन समारोह संस्थान के निदेशक महोदय प्रोफेसर अनिल प्रकाश शर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। समापन समारोह का आरंभ परिषद् के कुलगीत से किया गया। संस्थान के वैज्ञानिक डा. बी. सी. झा, प्रभागाध्यक्ष ने कहा कि हिंदी के प्रचार–प्रसार में हम हर संभव प्रयास कर रहे हैं। सभी को अपना सरकारी कामकाज हिंदी में ही करना चाहिए। तत्पश्चात मो0 कासिम, प्रभारी, हिंदी कक्ष ने संस्थान में हुई हिंदी की गतिविधियों, उपलब्धियों एवं हिंदी सप्ताह के दौरान सम्पन्न कार्यक्रमों की जानकारी दी । हिंदी कक्ष के सर्वकार्यभारी डा. श्रीकान्त सामन्त ने भी अपने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर डा. उत्पल भौमिक, डा. एन. पी. श्रीवास्तव ने अपने विचार व्यक्त किए। श्री नवीन कुमार झा, प्रशासनिक अधिकारी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भारत सरकार की राजभाषा संबंधी नीतियों का गंभीरता से अनुपालन करने की आवश्यकता है। उन्होंने राजभाषा अधिनियम एवं राजभाषा नियमों की जानकारी दी।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, कोलकाता के कार्यकारी संयुक्त निदेशक डा. राम बिनोद सिंह को आमंत्रित किया गया। डा सिंह ने कहा कि सर्वप्रथम कलकत्ता विश्वविद्यालय में एम. ए. हिंदी का पठन–पाठन आरंभ हुआ। हिंदी टाइपराइटर श्रीरामपुर (पश्चिम बंगाल) के रमन कर्मकार ने बनाया जो पूरे विश्व में फैल गया। तत्पश्चात् अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत करते हुए संस्थान के निदेशक प्रोफेसर अनिल प्रकाश शर्मा ने कहा कि यह एक केन्द्रीय संस्थान है। यह आवश्यक है कि हमारी भाषा पूरे भारत में जानी जाये। उन्होंने कहा कि अग्रेजी, फ्रेंच, स्पैनिस की तरह हिंदी को भी विश्व की भाषा होना चाहिए। उन्होंने कहा कि हिंदी शब्दों का सरलीकरण करें जिससे लोग स्वतः इससे जुड़ते रहें। हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में अच्छा प्रदर्शन करने वाले अधिकारियों व कर्मचारियों को नकद पुरस्कार वितरित किये गये।

संस्थान के वैज्ञानिक श्री एस. के. साहू ने मुख्य अतिथि तथा सभा में उपस्थित समस्त अधिकारियों, कर्मचारियों तथा कर्मचारियों के परिवारों का आभार व्यक्त किया।

कार्यशाला

कार्यालय का कामकाज हिंदी में करने में झिझक को दूर करने हेतु संस्थान के मुख्यालय में प्रशासनिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए 27 अप्रैल तथा 11 जनवरी, .2013 को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में 'टिप्पणी लेखन/मसौदा, हिंदी व्याकरण/लिंग भेद' आदि विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। इसके अतिरिक्त वर्ष 2012 के दौरान केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 5 दिवसीय गहन हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने हेतु संस्थान के 7 कर्मचारियों को भेजा गया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली तथा राष्ट्रीय पटसन एवं समवर्गी रेशा प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान कोलकाता द्वारा आयोजित दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला में भाग लेने हेतु संस्थान के अधिकारियों को भेजा गया। वर्ष 2012 के दौरान 50 कर्मचारियों को कार्यशाला के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

- संस्थान द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका नीलांजलि को वर्ष 2011 के लिये भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा प्रथम पुरस्कार 'गणेश शंकर विद्यार्थी हिंदी कृषि पत्रिका पुरस्कार' से पुरस्कृत किया गया।
- संस्थान का वार्षिक प्रतिवेदन 2011–2012 पहली बार पूर्ण रूप से हिंदी में प्रकाशित किया गया ।
- संस्थान नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का सदस्य है। संस्थान के वरिष्ठ अधिकारियों ने दिनांक 06 मार्च 2013 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में भाग लिया।
- संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा राजभाषा हिंदी कार्य का जायजा लेने हेतु निरीक्षण किया गया।

- संस्थान के कर्मचारियों को दिनांक 29.11.2012 को कंप्यूटर पर हिंदी टंकण का प्रशिक्षण दिया गया।
- इस संस्थान के 08 अधिकारी व कर्मचारी केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली द्वारा संचालित प्राज्ञ पाठ्यक्रम (पत्राचार पाठ्यक्रम) में प्रशिक्षण हेतु पंजीकृत हुए हैं।
- हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम में भाग लेने हेतु संस्थान के 8 प्राज्ञ प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण के लिए भेजा गया।
- मात्स्यिकी विकास पर बिहार राज्य के मत्स्य कृषकों को दिये गये प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षण सामग्री को हिंदी में तैयार किया गया।
- संस्थान द्वारा प्रथम दूरभाष निर्देशिका, 2013 को द्विभाषी रूप में प्रकाशित किया गया।

शीतजल मात्स्यिकी अनुसंधान निदेशालय, भीमताल

हिंदी सप्ताह

शीतजल मात्स्यिकी अनुसंधान निदेशालय, भीमताल में हिंदी दिवस तथा इसके चम्पावत स्थित मत्स्य प्रक्षेत्र में हिंदी चेतना मास का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं– निबन्ध, नोटिंग–ड्राफ्टिंग, शब्दज्ञान एवं कम्प्यूटर पर हिंदी टंकण आदि को आयोजित किया गया तथा उक्त प्रतियोगिताओं में सफल हुए प्रतिभागियों को पुरस्कृत भी किया। चेतना मास के दौरान केन्द्र के वैज्ञानिकों ने स्थानीय मत्स्य पालकों को मत्स्य पालन संबंधी जानकारी हिंदी में दिया तथा हिंदी में ही प्रशिक्षण कार्यक्रमों को आयोजित किया। भीमताल स्थित मुख्यालय में हिंदी संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्थान के वैज्ञानिकों, तकनीशियनों, प्रशासनिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने हिंदी को सशक्त बनाने के संबध में अपने अपने विचार प्रस्तुत किऐ।

हिंदी सप्ताह समारोह के अतिरिक्त संस्थान में 5 जून को पर्यावरण दिवस के अवसर पर एक संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्थानीय स्कूल, कालेजों, विश्वविद्यालयों के छात्र–छात्राओं, शोधकर्ताओं एवं व्याख्याताओं, जन प्रतिनिधियों आदि ने भाग लिया तथा अपने–अपने व्याख्यानों एवं अनुसंधान पत्रों को हिंदी में प्रस्तुत किया। निदेशालय सहित इसके चम्पावत केन्द्र में मत्स्य कृषक दिवस , मत्स्य बीज वितरण एवं आदर्श प्रशिक्षण कार्यक्रम आदि आयोजित किये गये। इन कार्यक्रमों के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली की उपमहानिदेशक डा. बी. मीनाकुमारी भी उपस्थित थीं।

निदेशालय में हिन्दी चेतना मास का आयोजन

- निदेशालय में प्रत्येक एक–दो माह के अंतराल पर किसी एक वैज्ञानिक द्वारा किसी लोकप्रिय विषय पर व्याख्यान
- निदेशालय की हिंदी पत्रिका–'हिमज्योति' का प्रकाशन
- उत्तर–पूर्वी राज्यों के मत्स्य पालकों के लिए हिंदी में 'सुनहरी महाशीर का प्रजनन एवं हैचरी प्रबन्धन' शोध पत्रिका का प्रकाशन
- मत्स्य पालकों को मत्स्य पालन से सम्बन्धित प्रशिक्षण कार्यक्रमों को हिंदी में सम्पन्न किया गया
- विभिन्न बैठकों में संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा हिंदी में वार्तालाप
- संस्थान द्वारा जारी होने वाले विज्ञापन द्विभाषिक रूप में जारी
- मुख्यालय के चम्पावत स्थित केन्द्र में एक लघु पुस्तकालय का गठन
- मुख्यालय के चम्पावत स्थित केन्द्र में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की एक उपसमिति का गठन
- मुख्यालय स्थित पुस्तकालय हेतु हिंदी पुस्तकों की खरीद
- लब्ध प्रतिष्ठित विद्वानों की सूक्तियों का संकलन और उनको उचित स्थानों पर लगाया गया

केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला

संस्थान के शिमला स्थित मुख्यालय में 'हिंदी दिवस' के अवसर पर हिमाचल प्रदेश के विख्यात साहित्यकार एवं हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला के दूरवर्ती शिक्षा केन्द्र से सेवानिवृत प्रो. ओम प्रकाश सारस्वत का विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। एक माह तक चलने वाले 'हिंदी चेतना मास' के अवसर पर हिंदी निबंध, हिंदी टाइपिंग, प्रश्न मंच, चित्र कहानी, हिंदी शब्द ज्ञान, स्मरण

शक्ति, हिंदी नोटिंग एवं ड्राफ्टिंग जैसी कई प्रतियोगिताओं के साथ-साथ हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसके अन्तर्गत कर्मचारियों को भारत सरकार की राजभाषा नीति, नियम, अधिनियमों की जानकारी भी दी गई। राजभाषा एवं पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर संस्थान के निदेशक डा. बीर पाल सिंह ने कर्मचारियों/अधिकारियों को राजभाषा में कार्य करने का आह्वान करने के साथ-साथ पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

इसी प्रकार हिंदी दिवस/हिंदी सप्ताह/हिंदी पखवाड़ा के दौरान संस्थान के मोदीपुरम, जालन्धर, ग्वालियर, पटना एवं ऊटी स्थित केन्द्रों में भी विभिन्न कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन कर कर्मचारियों को राजभाषा के प्रति जागरूक किया गया।

संसदीय राजभषा की दूसरी उपसमिति ने 6 अक्तूबर, 2012 को संस्थान के ऊंटी स्थित केन्द्र का निरीक्षण किया गया। केन्द्र के तत्कालिक अध्यक्ष डा. टी.ए.जोसफ ने माननीय सदस्यों का अभिनन्दन करते हुए उन्हें केन्द्र की कार्यप्रणाली एवं उपलब्धियों की जानकारी दी।

क्षेत्रीय केंद्र, मोदीपुरम

केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान परिसर मोदीपुरम में दिनांक 14-28 सितम्बर तक हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न वर्गो के लिए स्मरण शक्ति परीक्षण प्रतियोगिता, चित्र लेखन प्रतियोगिता, सभी वर्गो के लिये मौखिक सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी , सामान्य कृषि एवं आलू पर लिखित सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, कम्प्यूटर पर हिंदी टंकण , हिंदी में टिप्पण एवं प्रारूप लेखन तथा चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के लिए हिंदी में मौखिक सामान्य ज्ञान प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

परिसर में हिंदी पखवाड़े का आयोजन

दिनांक 28.9.2012 को हिंदी पखवाड़ा के समापन अवसर पर डा. सुरेन्द्र कुमार कौशिक, संयुक्त निदेशक महोदय द्वारा सभी विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरित कर सम्मनित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री रामइकबाल चौबे, आयकर विभाग मेरठ से सेवानिवृत्त सहायक निदेशक (राजभाषा) को

आमन्त्रित किया गया। उन्होंने भारत सरकार द्वारा निर्धारित राजभाषा नियम एवं उपनियमों की जानकारी से सभी को अवगत कराया। समारोह के समापन अवसर पर संयुक्त निदेशक महोदय ने अपने सम्भाषण में सभी को अपना समस्त मूल पत्राचार हिंदी में करने के लिये निर्देशित किया।

क्षेत्रीय केन्द्र, पटना

केन्द्राध्यक्ष डा0 मनोज कुमार की अध्यक्षता में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन दिनांक 01 सितम्बर से 15 सितम्बर तक किया गया । समारोह का शुभारम्भ संस्थान के निदेशक डा0 बीर पाल सिंह के कर कमलों द्वारा हुआ । अपने संबोधन में उन्होने संस्थान एवं केन्द्र की प्रगति पर संतोष जाहिर करते हुए इसमें और अधिक गतिशीलता लाने पर जोर दिया । 15 सितम्बर को समापन समारोह आयोजित हुआ । इस अवसर पर श्री वीरेन्द्र कुमार यादव, सदस्य, हिंदी राजभाषा सलाहकार समिति, मुख्य अतिथि के रूप में तथा श्री जितेन्द्र कुमार सिंह उपनिदेशक, खादय संरक्षण एवं गुणवत्ता नियंत्रण विभाग, (बिहार सरकार) उपस्थित थे। डा0 शम्भु कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक सह हिंदी पदाधिकारी ने समारोह का संचालन किया । पटना परिसर में दिनांक 31 मई को "हिंदी चेतना दिवस" कार्यक्रम का आयोजन किया गया । इस दिवस पर श्री हरेकृष्ण सेन, अध्यक्ष के निजी सचिव सह हिंदी कार्यान्वयन समिति के सदस्य, श्री रवीन्द्र शर्मा, तकनीकी पदाधिकारी सह हिंदी कार्यान्वयन समिति के सदस्य के अलावा कार्यालय के सभी कर्मचारियों ने भाग लिया ।

क्षेत्रीय केन्द, पटना में हिंदी पखवाड़ा समारोह

क्षेत्रीय केन्द्र, मोदीपुरम

हिंदी कार्यशाला

भारत सरकार की राजभाषा नीति एवं इसका कार्यान्वयन तथा राजभाषा हिंदी के प्रयोग में आने वाली समस्याएँ एवं उनका समाधान विषय पर परिसर के तकनीकी एवं प्रशासनिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए 5 सितम्बर, 2012 को एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में परिसर एवं अन्य संस्थानों के कुल 37 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। जिसमें मुख्यालय केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला से पधारे श्री प्रवीन कुमार चाँदला, हिंदी राजभाषा अधिकारी इस कार्यशाला के मुख्य प्रवक्ता रहे।

कुक्कुट परियोजना निदेशालय, हैदराबाद

हिंदी पखवाडा

निदेशालय में दिनांक 1–15 सितंबर तक हिंदी पखवाडा समारोह मनाया गया। इस दौरान कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी तथ 14 सितंबर को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में डॉ. एस.एल. गोस्वामी, निदेशक, नार्म को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। मुख्य अतिथि महोदय एवं डॉ. आर.एन. चटर्जी, कार्यकारी परियोजना निदेशक ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। डॉ. अरूण कुमार पण्डा, प्रभारी, हिंदी अनुभाग ने इस अवसर पर मुख्य अतिथि एवं उपस्थित समस्त कर्मचारियों का स्वागत किया तत्पश्चात श्री जे. श्रीनिवास राव, तकनीकी अधिकारी, टी–6 ने हिंदी अनुभाग की गतिविधियों की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

डॉ. एस.एल. गोस्वामी जी ने अपने संबोधन में कहा कि, हिंदी भाषा विश्व भाषा बन रही है, अब अमेरिका, चीन एवं कई यूरोपीय देशों के विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ायी जा रही है। आज कई विदेशी टेलिविजन चैनल अपने प्रसारण हिंदी भाषा में दे रहे है। विज्ञान के क्षेत्र में भी हिंदी एक अहम भूमिका निभा रही है। हम अपने अनुसंधान परिणामों को सरलतम भाषा में किसानों तक पहुंचा सकते हैं। इस अवसर पर डॉ. एस.एल. गोस्वामी जी

ने निदेशालय के वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों द्वारा हिंदी में लिखित उत्तम स्वास्थ्य के लिए सर्वोत्तम आहार अंडा नामक पुस्तिका का विमोचन भी किया।

उत्तम स्वास्थ्य के लिए सर्वोत्तम आहार अंडा पत्रिका विमोचन

डॉ. आर.एन. चटर्जी, परियोजना निदेशक ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि हिंदी किसी एक प्रांत विशेष की भाषा नहीं है यह तो समस्त भारतीयों की भाषा है। हमारे संस्थान में हिंदी की प्रगति के फलस्वरूप अब तक तीन बार राजभाषा पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। मैं आशा करता हूं कि संस्थान के कर्मचारी दैनंदिन कार्यों में हिंदी का और अधिक प्रयोग करेंगें। निदेशालय में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कारों एवं प्रमाण पत्रों से सम्मानित किया गया। निदेशालय में वर्ष 2012–13 के दौरान चार तिमाही बैठकें तथा चार कार्यशालाएं आयोजित की गयीं जिसमें कर्मचारियों को कार्यालयीन हिंदी, आलेखन–टिप्पणी, राजभाषा नीति एवं यूनिकोड के माध्यम से कंप्यूटरों पर हिंदी टंकण प्रशिक्षण जैसे विषयों पर प्रशिक्षित व अभ्यास करवाया गया जो कर्मचारियों को काफी लाभप्रद रहा।

सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर

हिंदी कार्यशाला

सरसों अनुसंधान निदेशालय में 25 मई, 2012 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए श्री वासुदेव गुप्ता, पूर्व निदेशक, राजस्थान राज्य शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर ने कहा कि भाषा अभिव्यक्ति का एक मजबूत माध्यम है और हिंदी किसी एक क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है। उन्होनें हिंदी की संवैधानिक स्थिति, नियम और उप–नियम के बारे में विस्तार से वर्णन किया। उन्होंने यह भी कहा कि विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के काम में हिंदी भाषा के प्रयोग की वृद्धि की जानी चाहिए। इस अवसर पर एमएसजे कॉलेज, भरतपुर के व्याख्याता, डॉ. बनय सिंह, ने कहा कि कुछ प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद देश भर में हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है। वैश्वीकरण और विज्ञापन के युग में हिंदी एक महत्वपूर्ण भाषा बन गई है। सरसों अनुसंधान निदेशालय के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. वाई. पी. सिंह ने सरकारी कामकाज में हिंदी का उपयोग बढ़ाने हेतु लोगों को प्रेरित करने के लिए इस कार्यशाला के आयोजन की सराहना की।

28 सितंबर 2012 को आयोजित कार्यशाला में श्री हरीश चंद्र जोशी, निदेशक, राजभाषा, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली और श्री आर. के. शर्मा, पूर्व प्रधानाचार्य, एमएसजे कॉलेज, भरतपुर ने अपने विचार प्रस्तुत किये। श्री हरीश चंद्र जोशी, ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली में राजभाषा हिंदी और राष्ट्र निर्माण में हिंदी की भूमिका की स्थिति पर व्याख्यान दिया। श्री जोशी ने अनुसंधान कार्य को किसानों तक प्रभावी ढंग से पहुँचाने के लिए हिंदी में प्रकाशन की जरूरत पर बल दिया।

निदेशालय में 22 दिसम्बर को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए निदेशालय के निदेशक डॉ. जितेन्द्र सिंह चौहान ने हिंदी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी हमारे देश की सम्पर्क भाषा हैं जो पूरे देशवासियों को एक सूत्र में बांधती हैं। हमें आपनी भाषा का सम्मान करते हुए अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करना चाहिये। इस अवसर पर अतिथि वक्ता डॉ. उषा अग्रवाल, हिंदी विभागाध्यक्ष, आर.डी. गर्ल्स कालेज, भरतपुर ने कर्मचारियों, वैज्ञानिको एवं अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि भारत सरकार के राजभाषा अनुभाग, केन्द्रीय अनुवाद विभाग आदि ने हिंदी को राजभाषा के रूप में बढ़ावा देने के लिये सराहनीय कार्य किया है। अन्य अतिथि वक्ताओं श्री आलोक अहलूवालिया राजभाषा प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब नेशनल बैंक ने सरकार की राजभाषा नीतियों का उल्लेख करते हुए संविधान में हिंदी की स्थिति पर प्रकाश डाला। उन्होने कहा कि सरकारी कर्मचारियों को पत्राचार हिंदी में ही करना चाहियें। इससे पूर्व निदेशालय के राजभाषा प्रभारी डॉ. विनोद कुमार ने अतिथियों एवं कर्मचारियों, वैज्ञानिको तथा अधिकारियों का स्वागत करते हुए कार्यशाला के महत्व के बारे में जानकारी दी एवं सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन किया।

सरसों अनुसंधान निदेशालय में 27 फरवरी 2013 को सम्पन्न कार्यशाला में हिंदी को बढावा देने की चर्चा की गई। कार्यशाला में आर डी गर्ल्स कॉलेज के प्रवक्ता डॉ चतुरसिंह व डॉ विरेन्द्रसिंह ने सरकारी काम काज में हिंदी की परिभाषिक शब्दावली व हिंदी राष्ट्रभाषा व राजभाषा के संदर्भ में जानकारी दी। पीएनबी के वरिष्ठ राजभाषा के प्रबंन्धक आलोक अहलूवालिया ने सरकारी काम काज में हिंदी की आवश्यकता जरूरी बताई। आर बी एस कॉलेज विभाग अध्यक्ष डॉ जितेन्द्र सिंह चौहान ने हिंदी में वैज्ञानिक लेखन पर अपने अनुभव बताए।

कार्यशाला में अतिथि वक्ता, डॉ0 उषा अग्रवाल, हिन्दी विभागाध्यक्ष

हिंदी पखवाड़ा

निदेशालय में 14–28 सितम्बर तक हिंदी चेतना पखवाड़े का आयोजन किया। श्री दिनेश सक्सेना, अध्यक्ष, नगर राजभाषा क्रियान्वयन समिति, भरतपुर ने उद्घाटन के दौरान कहा कि हिंदी आम आदमी की भाषा है। हिंदी के अधिकतम उपयोग को बढ़ावा देने के लिए वाद–विवाद, कविता, क्रास शब्द, निबंध लेखन आदि जैसे कार्यक्रमों को आयोजित किया गया। 28 सितम्बर को समापन अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के राजभाषा निदेशक श्री हरीश चंद्र जोशी और श्री सतीश खुराना, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक क्रमशः मुख्य और विशिष्ट अतिथि थे। दोनों ने पखवाडे के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार और प्रमाण–पत्र प्रदान किए। निदेशालय के श्री मुकेश कुमार, सहायक और श्री पंकज पाठक, कनिष्ठ लिपिक को सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिकतम उपयोग करने के लिए इस वर्ष पुरस्कृत किया गया। निदेशक डॉ. जे. एस. चौहान ने सभी विजेताओं को बधाई दी।

हिंदी पखवाड़े का आयोजन

- निदेशालय, जनवरी 31, 2013 से आईएसओ 9001:2008 प्रमाणित संस्थान है।
- निदेशालय द्वारा विकसित चार अद्वितीय जर्मप्लाज्मों का पंजीकरण कराया गया।
- बौद्धिक संम्पदा रक्षा के तहत निदेशालय ने राई सरसों की 40 किस्मों को बचाने के लिए पीपीवी एव एफआर में पंजीकरण हेतु प्रस्ताव प्रस्तुत किये।
- निदेशालय ने अपनी प्रौद्योगिकी (किस्म और संकर) के बीज–उत्पादन और विपणन के लिए तीन निजी कंपनियों के साथ लाइसेंस प्राप्त किया।
- निदेशालय ने 120 कड़ी के रेडियो कार्यक्रम जयपुर, कोटा, अलवर राजस्थान तथा आगरा, मथुरा के आकाशवाणी केंद्रों से सरसों के अनुसंधान एवं उन्नत शील कार्य प्रणालियों का प्रसाारण किया।
- आत्मा द्वारा प्रयोजित चार फील्ड स्कूल का भरतपुर के चार गांवों में आयोजन किया।

- टीएसपी परियोजना के तहत झारखंड एवं मणीपुर के किसानों के लिए तीन दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया
- निदेशालय ने 25 शोध पत्र एवं 8 तकनीकी बुलेटिनों का प्रकाशन किया।
- स्थाई फसल उत्पादन के लिए संरक्षण के आधुनिक दृष्टिकोण पर मॉडल प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का आयोजन किया।

काजू अनुसंधान निदेशालय, पुत्तूर

हिंदी कार्यशाला

काजू अनुसंधान निदेशालय, पुत्तूर में 29.01.2013 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में निदेशालय के वैज्ञानिक, प्रशासनिक एवं तकनीकी कर्मचारी ने भाग लिया। कार्यशाला में पुत्तूर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों के कर्मचारियों ने भी भाग लिया। सुबह 10.30 बजे, डॉ0 पी.एल. सरोज, निदेशक एवं अध्यक्ष, पुत्तूर न.रा.का.स., ने कार्यशाला का उद्घाटन किया। डॉ0 पी.एल. सरोज, निदेशक ने राजभाषा हिंदी को सीखने की आवश्यकता और उसके कार्यालयीन प्रयोग के बारे में अवगत कराते हुए आशा व्यक्त की कि यह कार्यशाला सभी कर्मचारियों के लिए लाभदायक होगी। इस अवसर पर प्रो0 विष्णु भट्, प्राध्यापक हिंदी, संत फिलोमिना कॉलेज, विशेष अतिथि थे।

प्रो0 विष्णु भट्, प्राध्यापक हिंदी, संत फिलोमिना कालेज हिन्दी कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए

कार्यशाला में तीन सत्र थे। प्रथम सत्र में प्रो0 विष्णु भट्ट जी ने हिंदी व्याकरण और वाक्य रचना के बारे में मार्गदर्शन किया। द्वितीय सत्र राजभाषा नीति एवं नियमों के बारे में था। श्री प्रकाश भट् तकनीकी अधिकारी एवं सदस्य सचिव, पुत्तूर न.रा.का.स., ने इस सत्र में हिंदी भाषा की संविधानात्मक स्थिति, संघ की राजभाषा नीति और धारा 3(3) के बारे में विस्तृत रूप से बताया। अपने वक्तव्य के दूसरे भाग में उन्होंने कम्प्यूटर पर हिंदी में काम

करने के संबंध में विवरण दिया। राजभाषा विभाग की वेबसाइट rajbhasha.nic.in के सदुपयोग से हिंदी टंकण में सहायता का विवरण प्रस्तुत किया।

अंतिम तृतीय सत्र में तकनीकी शब्दावली, मसौदा लेखन और पत्राचार के बारे में था। श्री शिवदासन, अध्यापक हिंदी, जवाहर नवोदय विद्यालय, मुडिपु, ने दैनिक कामकाज में प्रयोग आने वाले प्रशासनिक एवं तकनीकी शब्दों, वाक्य प्रयोगों और पत्र लेखन के बारे में मार्गदर्शन किया। कार्यशाला में कुल 40 कर्मचारी ने सहभागिता की।

केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर

राजभाषा संगोष्ठी

संस्थान में 19 जुलाई को 'हमारी बेटी हमारी शान' नामक राजभाषा संगोष्ठी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में अन्य संस्थान आफरी, डीएमआरसी, जोधपुर विश्वविद्यालय, इसरो आदि के साथ–साथ संस्थान के सभी श्रेणी के कर्मचारियों व अधिकारियों ने भाग लिया।

संगोष्ठी का उद्‌घाटन मुख्य अतिथि राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जोधपुर के कुलपति डॉ0 राधेश्याम शर्मा ने किया तथा समारोह की अध्यक्षता काजरी के निदेशक डॉ0 एम0एम0 रॉय ने की। इस अवसर पर डॉ0 रॉय ने शिक्षा पर बल देते हुए 'लड़की को पढ़ाओ देश को बढ़ाओ' पर विचार व्यक्त किये। माननीय कुलपति ने दहेज प्रथा को कन्याओं की प्रगति में मुख्य बाधक तत्व बताया।

कमला नेहरू महाविद्यालय की निदेशक डॉ0 सुधि राजीव ने शिक्षा का अधिकार एवं संवैधानिक प्रावधानों के बारे में विस्तार से चर्चा की। स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ0 रजनी लाखोटिया ने कन्या भ्रूण हत्या के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया। मरूस्थलीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र (डीएमआरसी), जोधपुर की विभागाध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ0 मधुबाला सिंह ने बालिकाओं में कुपोषण के आंकड़ों का विवरण दिया।

संस्थान में आयोजित राजभाषा संगोष्ठी का दृश्य

डॉ0 कैलाश कौशल प्रोफेसर हिंदी विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर ने महिलाओं की दशा एवं भविष्य की दशा पर सारगर्भित व्याख्यान दिया। सभी व्याख्यान हिंदी में आयोजित किये गये। मुख्य अतिथि महोदय ने राजभाषा हिंदी में इतनी अच्छी संगोष्ठी आयोजित करने व मुख्य ज्वलन्त सामाजिक मुद्दों पर कर्मचारियों में जागरूकता लाने के लिए बधाई दी।

केंद्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक

हिंदी कार्यशाला

सीआरआरआई, कटक में 9 मई को "सामान्य भविष्य निधि का आवेदन एवं निकासी टिप्पणी एवं मसौदा लेखन" विषय पर एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। श्री विमल कुमार मिश्र, हिंदी प्रध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना, गृह मंत्रालय, भारत सरकार इस कार्यशाला के मुख्य प्रवक्ता थे और उन्होंने हिंदी में टिप्पणी एवं मसौदा लेखन के बारे में व्याख्यान दिया। इस कार्यशाला में संस्थान के 16 कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया। श्री विभु कल्याण महांती, तकनीकी अधिकारी (राजभाषा) ने संस्थान में टिप्पणी एवं मसौदा लेखन के लिए हिंदी के प्रयोग से संबंधित प्रयासों का उल्लेख किया।

केन्द्रीय मृदा एवं जल संरक्षण अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान क्षेत्रीय केन्द्र, उधगमंडलम

केन्द्रीय मृदा एवं जल संरक्षण अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, अनुसंधान केन्द्र, उधगमंडलम में 14 सितम्बर से 13 अक्टूबर तक हिंदी चेतना मास मनाया गया। केन्द्राध्यक्ष, डा. ओ.पी.एस. खोला द्वारा हिंदी दिवस से कार्यक्रम का शुभारंभ से किया गया। कार्यक्रम में केन्द्र के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया तथा हिंदी की उत्तरोत्तर प्रगति के बारे में अपने विचार रखे । हिंदी चेतना मास के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे वाद–विवाद प्रतियोगिता, पूर्वनिर्धारित विषय पर संक्षिप्त वक्तव्य, तत्कालिक विषय पर संक्षिप्त वक्तब्य तथा समूह संवाद प्रस्तुति का आयोजन किया गया।

ऊंटी केन्द्र में हिंदी चेतना मास का आयोजन

हिंदी चेतना मास का समापन 12 अक्टूबर को किया गया। समारोह की अध्यक्षता डा. श्रीमती पी. सुन्दरंबाल, प्रभारी केन्द्राध्यक्ष द्वारा की गई। समारोह का संचालन श्री एन.पी. शर्मा, निजी सचिव व प्रभारी राजभाषा द्वारा किया गया। डा. श्रीमती पी़. सुन्दरंबाल ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार वितरित किये । डा सुन्दरंबाल ने अपने अध्यक्षीय भाषण में हिंदी में किये जा रहे कार्य पर संतोष व्यक्त किया तथा और अधिक कार्य हिंदी में करने के लिए आग्रह किया ।

हिंदी कार्यशाला

केंद्रीय मृदा एवं जल संरक्षण अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान के अनुसंधान केंद्र, उधगमंडलम में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन 19 मार्च, 2013 को केंद्र के सभागार में सम्पन्न हुआ। कार्यशाला का शीर्षक "राजभाषा संबंधी संवैधानिक एवं विधिक उपबन्ध" था । कार्यशाला में केंद्र के 25 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया । कार्यशाला की अध्यक्षता केन्द्राध्यक्ष डा. ओ.पी.एस. खोला द्वारा की गई। कार्यशाला का संचालन श्री एन.पी.शर्मा, प्रभारी हिंदी अधिकारी द्वारा किया गया। केंद्राध्यक्ष ने कार्यशाला में वक्तव्य देने पधारे श्री लुईस एम. खाखा, सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ऊटी एवं कुन्नूर तथा डा. ई. राधाकृष्णन, प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना, कॉर्डाइट फैक्टी, अरूवनकाडू का पुष्पगुच्छ प्रदान कर स्वागत किया ।

राजभाषा संबंधी संवैधानिक एवं विधिक उपबंधों पर कार्यशाला

राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, नागपुर के क्षेत्रीय केन्द्र

क्षेत्रीय केन्द्र, बंगलुरू

क्षेत्रीय केन्द्र बेंगलुरू में हर साल की तरह इस वर्ष 14 से 20 सितम्बर, 2012 तक हिंदी दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया गया। क्षेत्रीय केन्द्र प्रमुख डॉ0 एल0 जी0 के नायडू ने समारोह की अध्यक्षता की। हिंदी सप्ताह के उपलब्ध में कर्मचारियों एवम् अधिकारियों के लिये पांच प्रतियोगिताएं शब्दानुवाद, पत्र लेखन, निबंध, सुलेख लेखन, भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कार्यालय के सभी कर्मचारियों एवम् अधिकारियों ने बढ़–चढ़ कर प्रतियोगिता में भाग लिया।

मुख्य अतिथि डॉ आर0एस0 सिंह प्रधान वैज्ञानिक (उदयपुर) ने अपने संबोधन में भारतीय भाषाओं के परस्पर संबंधों को अनेक उदाहरणों के साथ स्पष्ट किया। क्षेत्रीय भाषाओं के लोक प्रिय शब्दों को हिंदी में अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया। मुख्य अतिथि महोदय ने विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं, विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं के अन्तर्गत हिंदी में काम करने वाले कर्मचारियों, हिंदी में परियोजना तथा तकनीकी लेख लिखने वाले वैज्ञानिकों एवम् कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किये।

हिंदी कार्यशाला

रा0मृ0सर्वे0 एवं भू0उ0नि0 ब्यूरो, क्षेत्रीय केन्द्र, बेंगलुरू में प्रशासनिक संवर्ग के कार्मिकों हेतु एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन 29 जून को किया गया। जिसमें डॉ0 महादेव जी, सहायक निदेशक (हिंदी) केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, बेंगलुरू तथा डॉ0 विजया मल्लिक, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, केन्द्रीय विद्युत अनुसंधान संस्थान, बेंगलुरू को व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया गया।

क्षेत्रीय केन्द, दिल्ली

राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवम् भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, क्षेत्रीय केन्द्र दिल्ली में एक दिवसीय (18.02.2013) हिंदी कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। श्रीमती अर्चना राघव, सहायक निदेशक (राजभाषा), राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, नई दिल्ली ने ''पत्र–लेखन एवं टिप्पण'' विषय पर व्याख्यान दिया। व्याख्यान के अंत में डॉ0 राम गोपाल, तकनीकी अधिकारी (टी–9) एवं सदस्य सचिव, हिंदी राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने श्रीमती अर्चना राघव, सहायक निदेशक (राजभाषा) को व्याख्यान के लिए धन्यवाद दिया ।

क्षेत्रीय केन्द्र, कोटा

हिंदी दिवस

14 सितम्बर को केन्द्र के व्याख्यान कक्ष में हिंदी दिवस मनाया गया। इसमें केन्द्र के वैज्ञानिकों, तकनीकीगणों व कार्यालय के अधिकारियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। केन्द्राध्यक्ष डॉ0 आर.के. सिंह ने अपने वक्तव्य में कहा कि हिंदी भाषी प्रदेशों में न्यायालयों में हिंदी धीरे–धीरे बढ़ रही है। डॉ0 ए.के. परन्दियाल ने अपने वक्तव्य में कहा कि भारत को शक्तिशाली राष्ट्र बनाने के लिये, भारत की आत्मा को पहचानने के लिए हमें हिंदी को अपनाना चाहियें। डॉ0 अशोक कुमार ने कहा कि सच यह है कि हिंदी ज्यादा भारतीय लोगों तक पहुंचती है और समझी जाती है। यह हिंदी का ही प्रभाव है कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियां अपने विज्ञापन हिंदी में प्रसारित करती है। डॉ0 शाकिर अली ने कहा कि आज बॉलीवुड का ज्यादा व्यापार इसलिये है कि वहां हिंदी में फिल्में बनती है और यह अनेकों देशों में पसन्द की जाती है। कमलेश कुमार ने अपने शोधपूर्ण वक्तव्य में कहा कि आज के लगभग 500 वर्ष पूर्व अंग्रेजी का कोई खास वजूद नहीं था। भारत ने अंग्रेजी के बिना भी अपार प्रगति की है। भारत बिना अंग्रेजी के ज्ञान–विज्ञान, योग और दर्शन कला और संगीत आदि हर क्षेत्र में संसार का सिरमौर रहा है। डॉ0 बी.के. सेठी, ने बताया कि हिंदीतर प्रदेशों की जनता भले ही हिंदी न बोले परन्तु समझती अवश्य है। इस अवसर पर उपस्थित समुदाय में से तकरीबन सबने अपनी–अपनी बात अपने ढंग से रखी। सभी का सुझाव था कि अन्य भाषाओं का ज्ञान रखते हुए हमें हिंदी को अनवरत पढ़ना–पढ़ाना चाहिये। इस दौरान निबन्ध प्रतियोगिता, काव्य गोष्ठी का भी आयोजन किया गया ।

उत्तर पूर्वी पर्वतीय क्षेत्रों के लिए भा.कृ.अनु.प. का मणिपुर केन्द्र, इम्फाल

हिंदी दिवस

मणिपुर केन्द्र, इम्फाल में 20 सितम्बर को हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता संयुक्त निदेशक डॉ नरेन्द्र प्रकाश ने की। केन्द्रीय विद्यालय के छात्रों ने सरस्वती वन्दना प्रस्तुत करके हिंदी दिवस का शुभारम्भ किया। डॉ प्रकाश ने हिंदी को जनसम्पर्क की भाषा बताया तथा कहा कि हिंदी ऐसी भाषा है जो सहजता के साथ समझ में आ जाती हैं तथा आसानी से प्रयोग में लायी जा सकती हैं। समारोह में केन्द्र एवं उसके सहयोगी कृषि विज्ञान केन्द्र के मुख्य वैज्ञानिक, वरिष्ठ वैज्ञानिक, वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक एवं सहायक वर्ग के कर्मचारी उपस्थित थे। सभी प्रतिभागियों ने हिंदी दिवस समारोह में भाग लिया। इस अवसर पर चार प्रतियोगितायें आयोजित की गयी। जिसमें हिंदी निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन 22 सितम्बर को किया गया तथा शेष सभी कार्यक्रम जैसे अन्ताक्षरी, तात्कालिक वाक प्रतियोगिता तथा हिंदी गीत उसी दिन आयोजित किये गये।

मणिपुर केन्द्र में हिंदी दिवस समारोह में व्याख्यान देते हुए डॉ0 नरेन्द्र प्रकाश

हिंदी दिवस कार्यक्रम के आयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ0 सुरेश चन्द्र, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, मणिपुर विश्व विद्यालय ने हिंदी के प्रयोग पर विशेष बल दिया तथा उन्होंने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में चल रहे हिंदी कार्यक्रमों की सराहना की और कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रमों से राजभाषा हिंदी को विशेष बल मिलता है।

राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, क्षेत्रीय केन्द्र, नैनीताल

केन्द्र पर 17 से 22 सितम्बर तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया जिसमें केन्द्र के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस दौरान वाक पटुता, काव्य पाठ, श्रुति लेखन तथा हिंदी से अंग्रेजी अनुवाद आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

डा0 एस0के0 वर्मा, प्रभारी अधिकारी की अध्यक्षता में डा0 ए0के0 त्रिवेदी, वरिष्ठ वैज्ञानिक व श्री एन.एस. पटवाल, सहायक प्रशासनिक अधिकारी द्वारा संचालन किया गया। डा0 एस.के. वर्मा, प्रभारी अधिकारी द्वारा हिंदी के प्रचार व प्रसार के लिए केंद्र द्वारा किए गए प्रयत्नों पर प्रकाश डाला। जिसमें उन्होंने अवगत कराया कि कार्यालय में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने तथा हिंदी पत्रों के उत्तर हिंदी में ही देने, नामपट्ट आदि द्विभाषी, हिंदी व अंग्रेजी में लिखने तथा वैज्ञानिक शोध पत्रों को हिंदी में अधिक से अधिक लिखकर हिंदी को बढ़ावा देने पर जोर दिया। हिंदी के साथ–साथ क्षेत्रीय भाषाओं को जोड़ने पर बल दिया जिससे वैज्ञानिक/शोधकार्यों को करने में सरलता होती है। उन्होंने कुमांऊ क्षेत्र से जुडे प्रख्यात कवि व लेखक डा0 सुमित्रानन्दन पंत, डा0 महादेवी वर्मा व क्षेत्रीय कवियों को याद किया। इसके उपरान्त विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता रहे प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि महोदय द्वारा पुरसकार वितरित किये गये । अन्त में कार्यक्रम का संचालन कर रहे डा0 ए. के. त्रिवेदी, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने मुख्य अतिथि के साथ सभी अधिकारियों व कर्मचारियों के उत्साहपूर्वक भाग लेने व हिंदी के प्रचार व प्रसार के लिए आभार प्रकट किया।

राजभाषा आलेख
एवं
विविध उपयोगी
सामग्री

कृषि अनुसंधान संस्थानों में राजभाषा कार्यान्वयन - एक चुनौतिपूर्ण कार्य

डॉ.संतराम यादव, सहायक निदेशक(राजभाषा)
केंद्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान, संतोषनगर, हैदराबाद

विश्व के मानस पटल पर भारत ने सदैव अपनी अमिट छाप छोड़ी है । हमारे ऋषि मुनियों की 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की परिकल्पना का लोहा सभी ने माना है । इतिहास साक्षी है कि न्याय का पलड़ा सदैव अन्याय पक्ष पर भारी पड़ा है । युग बदला, नई-नई प्रौद्योगिकी विकसित हुई और प्राचीन संकल्पना को वैज्ञानिक आधार मिला । भारत अर्वाचीन काल से कृषि प्रधान देश रहा है। आर्यों के आगमन से ही कृषक समुदाय ने संपूर्ण भारत में फैले भू-भाग की जलवायु की परिस्थितियों के अनुसार अपनी फसलों की पैदावार लेने हेतु स्वयं को सक्षम कर लिया था । विभिन्न परिस्थितियों में ली जाने वाली फसलों का चयन वहाँ की भूमि और जलवायु पर निर्भर करता है । दिन-प्रतिदिन बढ़ते शहरी सीमा क्षेत्र और जन आबादी के कारण सिकुड़ता कृष्य क्षेत्र तथा ग्रामीण आबादी के निम्नस्तर जीवन शैली में सुधार हेतु दिन-प्रतिदिन शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन करना भी आज की परिस्थितियों में विकराल रूप धारण करता जा रहा है । बाजार में खाद्यान्न की बढ़ती माँग और दिन-प्रतिदिन संकुचित होते जा रहे कृषि क्षेत्र के कारण घटती उपज ने हमारे कृषि क्षेत्र के नीति-निर्धारकों को वर्तमान और निकट भविष्य में आने वाली समस्याओं से निबटने के लिए सोचने पर मजबूर कर दिया है । देश के विभिन्न भागों में जलवायु परिवर्तन और बढ़ते सूखे की स्थिति का सामना करने के लिए भारत सरकार ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के माध्यम से राष्ट्रीय जलवायु समुत्थान कृषि पहल (निक्रा) को लागू करने की घोषणा की । इस परियोजना ने देश में वर्तमान उपलब्ध कृषि क्षेत्र में से ही अधिक फसल उपज को ध्यान में रखकर अनुसंधान कार्य आरंभ किया। आशा है इस परियोजना में हिंदी कार्य को भी समुचित सम्मान प्रदान किया जाएगा।

भारत सरकार/परिषद के निर्देशानुसार कृषि अनुसंधान संस्थानों में भी राजभाषा हिंदी का कार्यानवयन कार्य होना चाहिए परंतु परिषद के विभिन्न संस्थानों में हिंदी के प्रति स्थिति भिन्न-भिन्न नजर आएगी । कहां कितना काम हिंदी में हो रहा है इसके विषय में एक दम सही राय बना पाना कठिन है । कुछ में हिंदी का प्रयोग यथेष्ठ दिखाई पड़ता है तो कहीं बहुत कम । कभी उसकी गति बढ़ती तो कभी मंद दिखलाई पड़ती है । कहीं हिंदी स्टॉफ की समस्या है तो कहीं हिंदी स्टॉफ को हिंदी अनुभाग से अन्यत्र तैनात किया गया है। इस प्रकार हिंदी की सरिता बढ़ती रुकती चलती रही है । कृषि अनुसंधान की जानकारियों को किसानों तक सरल हिंदी भाषा में पहुंचाना ही परिषद

और उसके संस्थानों के लिए प्राथमिकतापूर्ण कार्य है । हालांकि राजभाषा का क्षेत्र प्रशासनिक स्तर पर सरकारी कार्मिकों व प्रशासकों तक सीमित है जबकि राष्ट्रभाषा अखिल देशीय संपर्क भाषा के रूप में जानी जाती है और इसका संबंध जनसाधारण से होता है । महाकवि महादेवी वर्मा जी की यह उक्ति **'आशा से आकाश थमा है'** सदैव राजभाषा कार्यान्वयन कार्य हेतु प्रेरणास्त्रोत बनी रहती है। परिषद के संस्थानों में राजभाषा कार्यान्वयन कार्य चुनौतिपूर्ण कार्य अवश्य है परंतु असंभव नहीं है।

परिषद संस्थानों में दैनिक पत्राचार राजभाषा हिंदी में भी एक स्तर तक होना चाहिए । परंतु अधिकांशतया यह पाया गया है कि संबंधित अनुभागों में कार्यरत पदाधिकारी अंग्रेजी भाषा के अभ्यस्त हो गए हैं। हिंदी में कार्य करते हुए उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। प्रशासन में यह प्रथा है कि फाईल में पिछली टिप्पणियों को देखकर फिर आगे लिखा जाता है। अधिकांशतया पिछली टिप्पणियाँ अंग्रेजी भाषा में लिखी गई होती हैं। जब भी कोई क्लर्क हिंदी में कार्य करना आरंभ करता है तो वह स्वयं को शब्दों के मकडजाल में फंसा पाता है और कुछ समय उपरांत पूर्व की भाँति वह अंग्रेजी में टिप्पणियाँ करना आरंभ कर देता है । इस संबंध में सुझाव है कि कभी तो हमें लीक से हटकर कार्य करना ही होगा। किसी को तो यह चुनौतिपूर्ण कार्य का बीडा उठाना ही होगा। हिंदी कार्यशालाओं में भाग लेकर और उच्चाधिकारियों को भी राजभाषा पत्राचार के लक्ष्यों से अवगत कराते हुए हमें राजभाषा कार्यान्वयन कार्य परिस्थितिनुसार शीघ्र आरंभ कर देना चाहिए । उच्चाधिकारियों की ओर से हिंदी कार्य के प्रति समर्पित स्टॉफ को प्रोत्साहित करना चाहिए न कि हतोत्साहित करें ।

प्राय: वैज्ञानिक कृषि अनुसंधान संबंधी लेख अंग्रेजी भाषा में तुरंत तैयार कर देते हैं परंतु हिंदी में यदि एक भी लेख लिखना हो तो हिंदी और हिंदीत्तर भाषी को इस कार्य में काफी मशक्कत करनी पड़ती है । अधिकांशतया अनुवादक को लेख थमा दिया जाता है । यहाँ समस्या यह आती है कि संबंधित अनुवादक प्रशासनिक हिंदी से तो शीघ्र परिचित हो जाता है परंतु तकनीकी या पारिभाषिक हिंदी में वह भी कभी-कभी लाचारी महसूस करता है । नित नवीन शब्दों के आगमन से वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग और आई.सी.ए.आर. की तकनीकी शब्दावलियाँ भी अधिक प्रभावी नहीं हो पा रही हैं । अत: सुझाव है कि वैज्ञानिक को अनुवादक के साथ बैठकर कार्य पूरा करना चाहिए ।

हमारा देश सांस्कृतिक विविधता के साथ ही भौगोलिक विविधता लिए हुए है । इस भौगोलिक विविधता को ध्यान में रखते हुए ही हमारे वैज्ञानिक उस भूमि व वहां पर उपलब्ध संसाधनों के अनुरूप खेती करने का सुझाव देते हैं । अन्य क्षेत्रों में हम मातृभाषा के महत्व को भले ही न समझे किंतु कृषि के क्षेत्र में हम मातृभाषा के प्रति उदासीन नहीं रह सकते । वस्तुत: देश की मिट्टी, देश का पानी, देश की जलवायु व देश में उपलब्ध संसाधनों के आधार पर ही कृषि कार्य किया जाता है और देश में हुए अनुसंधान से विकसित तकनीकों का उपयोग हमारे देश के किसानों के लिए है तो फिर उन्हें इस अनुसंधानों का लाभ पहुंचाने का सेतु क्या है? निश्चित रूप से वह

माध्यम किसानों की मातृभाषा ही है । स्पष्ट है कि कृषि का मातृभूमि व मातृभाषा में निकटतम संबंध है ।

यह प्रश्न सदैव उभरकर आता है कि नियमों का प्रावधान होते हुए भी हम प्रशासन और विज्ञान में राजभाषा का चहुंमुखी विकास क्यों नहीं कर पा रहे हैं? इस संबंध में हिंदी की यह कहावत सही प्रतीत होती है कि - **"हम घोड़े को नदी के किनारे तो ले जा सकते हैं, लेकिन उसे पानी नहीं पिला सकते।"** आज हिंदी कार्यान्वयन से संबंधित आंकड़ों, योजनाओं एवं वाक्यों का आवरण हटा कर देखें तो पाते हैं कि यहाँ हिंदी को राजभाषा के रूप में पाने के लिए वास्तविक स्थिति किसी व्यस्त मार्ग पर पड़े उस बच्चे की तरह है जो स्वस्थ और सुंदर होने के बावजूद भी अनाथ है। उच्चाधिकारियों को चाहिए कि वे हिंदी स्टॉफ को हतोत्साहित करने की अपक्षा प्रोत्साहित करें ।

किसी भी संस्था के प्रशासन के कामकाज में जिन सरल शब्दों का प्रयोग किया जाता है उसे प्रशासनिक शब्दावली के रूप में जाना जाता है । Director के लिए 'निर्देशक' और 'संचालक' की बजाय 'निदेशक' शब्द उपयुक्त है । Workshop के लिए कार्यशाला, Charge हेतु कार्यभार(adm), Post के लिए प्रशासन में पद(adm), शब्द चयन करना चाहिए । By Order के लिए 'आज्ञानुसार' या 'आदेशानुसार' शब्द ठीक है । Indian National Army का शाब्दिक अर्थ 'भारतीय राष्ट्रीय सेना' बनता है जबकि सुभाषचंद्र बोस ने इसके लिए 'आजाद हिंद फौज' नाम दिया था । चूंकि प्रस्तुत संस्थान कृषि मंत्रालय/आईसीएआर के अंतर्गत आता है इसलिए यहाँ भी अनेकानेक शब्दों के कई अर्थ प्रयोग में आते हैं, जैसे - Agriculture के लिए कृषि शब्द सर्वमान्य है परंतु कुछ लोग खेती-बाड़ी भी प्रयोग में लाते हैं। Fisheries के लिए मत्स्य/मात्स्यिकी का प्रयोग है तो Dryland हेतु हमने बारानी अपनाया परंतु सूखी खेती व शुष्क भूमि या शूष्क खेती भी प्रयोग में आते हैं । कुछ मिलते-जुलते अर्थ वाले शब्द हैं - Risk Management जोखिम प्रबंधन, Stress Management दबाव प्रबंधन, Strategy Management रणनीति प्रबंधन । National Innovative Agricultural Project(NIAP) राष्ट्रीय उन्नयन(नवोन्मेषी) कृषि परियोजना, Arid Zone निर्जल क्षेत्र (CSTT), परंतु प्रयोग में शुष्क क्षेत्र या मरु भूमि (ICAR में) आ रहा है । Dryland- बारानी/ शुष्क भूमि/ सूखी खेती, Plant Protection वनस्पति संरक्षण, जड़ी-बूटी रखरखाव, Vegetable Oil - वनस्पति तेल आदि । Innovative को परिषद में नवोन्मेषी तो डी.आर.डी.ओ. में उन्नयन के रूप में प्रयोग किया जाता है । Arid Zone हेतु शुष्क क्षेत्र/मरु भूमि शब्द परिषद व संस्थानों में प्रयोगरत है जबकि मरु भूमि तो एरिड के लिए अधिक उपयुक्त है क्योंकि शुष्क या बारानी को Dryland हेतु स्वीकृत है । इसलिए सुझाव है कि परिषद व संस्थानों को अपनी शब्दावलियों को निरंतर अद्यतन करते रहना चाहिए।

अंततः हमें हिंदी माध्यम से कृषि विषयों में उच्च शिक्षा प्रदान करनी होगी। हिंदी कार्य से वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारियों व प्रशासकों की प्रतिष्ठा बढ़ेगी, उन्हें यह विश्वास दिलाना होगा । हिंदी में शोध कार्य हेतु पर्याप्त छात्रवृत्ति होनी चाहिए । हिंदी में नास (NAAS) से अनुमोदन प्राप्त

उच्च स्तरीय अनुसंधान पत्रिका निकालनी चाहिए । परिषद के सभी संस्थानों में हिंदी अनुभागों को स्थापित करना चाहिए तथा उन्हें आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराते हुए सशक्त एवं प्रभावी बनाया जाना चाहिए । अंत में परिषद में राजभाषा कार्यान्वयन कार्य इस आशा और विश्वास को समर्पित है कि "**एक शमा अंधेरे में जलाए रखिए। सवेरा होने को है, उम्मीद बनाए रखिए.....।"** और वह दिन दूर नहीं जब सब लोग यह कहते दिखलाई पडेंगे कि **"आज नहीं तो कल बैठेगी, सिंहासन पर जन की भाषा । पूरी होगी आज नहीं तो, कल स्वतंत्रता की परिभाषा ।। जय होगी,निश्चय जय होगी, भारत की धरती पर इसकी। जनभाषा की ही जय होगी,जनभाषा की ही जय होगी ।।"**

****

बड़े काम की हिंदी, संवार दे कैरियर

के.एल. अहिरवार, तकनीकी अधिकारी (राजभाषा)
राष्ट्रीय पटसन एवं समवर्गी रेशा प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, कोलकाता

भारतीय संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिलने के बाद हिंदी का महत्व बहुत अधिक बढ़ गया है| वर्षों से यह भाषा राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय दोनों स्तरों पर अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण माध्यम बन गई है| भाषा हिंदी का महत्व और अधिक है, क्योंकि ऐसे कई मामलें हैं जिनमें कोई व्यक्ति अपने विषय का अच्छा ज्ञाता तो होता है, किन्तु उसे समुचित रूप मैं अभिव्यक्त करने मैं असफल हो जाता है । इसलिए भाष्य हिंदी का अभ्यास करना बहुत आवश्यक है ।

किसी ऐसे देश में जहां हिंदी मातृभाषा नहीं है, हिंदी पढ़ने से किसी व्यक्ति के लिए अनेक अवसर खुल जाते हैं| आज के कारपोरेट विश्व में प्रभावी अभिव्यक्ति की आवश्यकता को तकनीकी ज्ञान की तुलना में अधिक मान्यता दी गई हैं और स्वीकार किया गया है । केंद्रीय सरकार के कार्यालयों की भाषा अंग्रेज़ी के साथ-साथ हिंदी भी है| यदि कोई व्यक्ति धाराप्रवाह हिंदी बोल सकता, बेहिचक लिख सकता है तो वह प्रबंधन की सीढ़ियों को लांघ सकता है| यदि आपकी अंग्रेज़ी अच्छी नहीं है और हिंदी अच्छी है तो आप व्यवसाय की शानदार योजना रखकर स्वयं को प्रबंधन के सबसे अगले पायदान पर खड़ा पाएंगें क्योकि अब भारत सरकार ने सभी परीक्षाओं में हिंदी में उत्तर देने का विकल्प दे दिया है । इसलिए जो अच्छी अंग्रेजी बोल सकता है, हो सकता है आप उसकी योजना छीन लें और आप योजना को कार्यात्मक रूप देने में आपके द्वारा किए गए कड़े परिश्रम का श्रेय आप स्वयं ले ले । इसलिए सामूहिक विचार-विमर्श, साक्षात्कार, मौखिक प्रस्तुति, रिपोर्ट लेखन, पत्र लेखन, आदि जैसे विभिन्न उद्देश्यों के लिए अभिव्यक्तिशील हिंदी में व्यक्तियों को प्रशिक्षित करने के लिए हिंदी भाषा प्रशिक्षक के लिए असीम अवसर हैं ।

हिंदी भाषा प्रशिक्षक सामान्यतः किसी व्यक्ति की, व्याकरण की दृष्टि से वाक्य बनाने की क्षमता को सुधारते हैं या उसके शब्दावली अभाव को मिटाते हैं, व्यक्तियों के सामने हिंदी बोलने के उसके डर को उसके मन से निकालते हैं और प्रस्तुति कौशल में उसकी अक्षमता को दूर करते हैं । नीचे कुछ ऐसे कौशल दिए गए हैं जिन्हें एक हिंदी भाषा प्रशिक्षक सिखाता है ।

प्रभावी अभिव्यक्ति कौशल

प्रभावी अभिव्यक्ति कौशल में सार्वजनिक भाषण, प्रस्तुति, बातचीत, विरोध-समाधान, ज्ञान सह भाजन की मौखिक कुशलता, रिपोर्ट तैयार करने, प्रस्ताव, अनुदेश मैनुअल तैयार करने, ज्ञापन, सूचना, कार्यालय पत्र – व्यवहार लेखन आदि जैसी लेखन कुशलता सामिल है । इसमें उपयुक्त तथा विशिष्ट उच्चारण, उचित

विराम तथा वाणी अनुरूपता का मौखिक तथा लेखन मिश्रण भी सामिल है | यदि अभिव्यक्ति का माध्यम हिंदी है तो इसमें कुछ दक्षता होने की भी आवश्यकता है |

यदि हिंदी हमारी मातृभाषा नहीं है, तो इसके लिए घर पर तथा भाषा – संस्थाओं में निरंतर अभ्यास करने की नितांत आवश्यकता होती है| जो संस्थान अपने छात्रों की केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों, अधीनस्थ संस्थानों, स्वायत्तशासी संगठनों, निगमों इत्यादि में तैनाती चाहते हैं तो उन्हें अपने छात्रों को यह जरूरी राय देनी चाहिए |यह उल्लेखनीय है कि एक हिंदी भाषा प्रशिक्षक को इसमें भूमिका निभानी होती है | अच्छे रोजगार संबंधित विषय के ज्ञान पर उतने ही निर्भर होते हैं जितने कि अच्छे कौशल पर |

सामूहिक विचार-विमर्श कौशल

किसी रोजगार के लिए साक्षात्कार से पहले किसी के अभिव्यक्ति कौशल की जांच करने के लिए सामान्यतः सामूहिक विचार-विमर्श एक माध्यम है | हिंदी भाषा प्रशिक्षक उम्मीदवार को सामूहिक-विचार-विमर्श के लिए तैयार करता है | सामूहिक विचार-विमर्श के लिए उम्मीदवारों को प्रशिक्षण देते समय प्रशिक्षक को निम्नलिखित तथ्यों का उनके महत्व के क्रम में ध्यान रखना चाहिए :-

- विषय के बारे में व्यापक ज्ञान
- भाषा सक्षमता या अभिव्यक्ति कौशल
- विश्वास
- पहल शक्ति
- नेतृत्व गुण
- समूह आचरण या टीम भावना

साक्षात्कार कौशल

किसी भी व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तितव के परीक्षण का माध्यम साक्षात्कार होता है, जो हिमशैल की तरह अंदर छिपा रहता है | किसी उम्मीदवार को प्रशिक्षण देते समय प्रशिक्षक का उद्देश्य उम्मीदवार के सम्पूर्ण व्यक्तितव का विकास करना होता है, जिसमे विश्वास, अभिवृति, अभिरुचि, आचरण-पद्यति, टीम भावना, विचारों एवं अभिव्यक्ति स्पष्टता, शीघ्र एवं सही निर्णय लेना, विचारों तथा सोच की मौलिकता, नव प्रवर्तित मस्तिष्क तथा हंसमुख मनोवृति शामिल है | उम्मीदवार में आत्मविश्वास पैदा करने तथा उनमें पाई गई कमी को दूर करने के लिए उनका मूल्यांकन हेतु प्रशिक्षक सामान्यतः कई साक्षात्कार नमूना आयोजित करते हैं |

मौखिक प्रस्तुतिकरण कौशल

व्यक्तियों के सामने बोलने का भय एक सबसे बड़ा भय होता है | ऐसी स्थिति में प्रशिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है, जो उम्मीदवार को आत्म-विश्वास, मन-शान्ति तथा अपने संदेश पर ध्यान केंद्रित करने का वास्तविक प्रशिक्षण देते हैं | प्रशिक्षक अपना कार्य एक नीति के साथ प्रारंभ करता है, जिसमे आपके उद्देश्य तथा भूमिका को समझना, आपके संदेश को श्रोताओं के अनुरूप ढालना, आपके ध्येय को स्पष्ट करना, आपकी योजना के लिए तार्किक रूप से एक आकर्षक केस का विकास करना और आम लक्ष्य तक पहुंचना शामिल है | इसके बाद वह, उम्मीदवार को सिखाता है कि कथ्य को सार्थक संदेश में कैसे बदला जाए | अंत में प्रस्तुतिकरण की शैली तैयार कराई जाती है, जिसमें आपकी मनःस्थिति, अभिवृत्ति, वाक् शैली, उत्साह प्रबलता और आपकी सोच पर बल दिया जाता है |

तकनीकी लेखन

चूंकि किसी संगठन में किसी व्यक्ति की सफलता की दर उसकी अभिव्यक्ति क्षमता के अनुरूप होती है, इसलिए लेखन का मुख्य तथा प्रथम स्थान होता है | शैली, जो आपके लेखन को अधिक प्रभावी बनाएगी, वह स्पष्टता, सामंजस्य और सुबोधता से सम्पन्न होनी चाहिए, चूंकि व्यक्तियों की पृष्ठभूमि तथा अनुभव अलग-अलग होते हैं, इसलिए वे अपना अनुभव/विचार अलग-अलग रूप से प्रस्तुत कर सकते हैं, किन्तु सभी को अपने लेखन में वास्तविकता, तटस्थता एवं सहजता बनाए रखने के हमेशा प्रयास करने चाहिए | प्रशिक्षक द्वारा निम्नलिखित महत्वपूर्ण तथ्यों पर ध्यान दिया जाता है :–

- जो आप कहना चाहते हैं उसे स्पष्ट करना |
- सूचना का संघटन तथा विश्लेषण |
- पहला मसौदा लिखते समय सुगमता बनाए रखना |
- मसौदे को ध्यानपूर्वक पढ़ना |
- अनावश्यक शब्द, वाक्यांश, वाक्य या अनुच्छेद को निकाल देना |
- वास्तविकता बनाए रखना |
- किसी मामले पर अनावश्यक तर्क नहीं देना |

करियर के अवसर

हिंदी भाषा प्रशिक्षक

किसी भी संगठन में किसी कर्मचारी की प्रगति तथा विकास सीधे अभिव्यक्ति कौशल से जुड़ा रहता है| अनुसंधान बताता है कि कोई भी व्यक्ति अपनी कक्षा में जो कुछ सीखता है उस तकनीकी ज्ञान का केवल उससे पन्द्रह प्रतिशत भाग ही संगठन के वास्तविक संदर्भ में उपयोग आता है और शेष भाग उसके अभिव्यक्ति कौशल में| जैसे-जैसे कोई उन्नति करता जाता है, उसके लिए अभिव्यक्ति का महत्व बढ़ता जाता है | एक भर्ती करता के रूप में कंपनियों को प्रायः हिंदी भाषा के उम्मीदवारों के ज्ञान का मूल्यांकन

करने में कठिनाई का सामना करना पड़ता हैं | हालांकि, मौजूदा कार्य बल में अभिव्यक्ति कौशल का अभाव होता है | अधिकाँश संगठनों को इस तथ्य का पता होता है और वे अपने संगठन की उत्पादकता को बढ़ाने और राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तरों पर संगठन के बेहतर प्रतिनिधित्व के लिए पहले से ही सुप्रशिक्षित कर्मचारी लेते हैं | कोई हिंदी भाषा में डिग्री प्राप्त करने के बाद किसी भी संगठन, केन्द्रीय कार्यालयों, अधीनस्थ कार्यालयों, स्वायत्तशासी संगठनों एवं निगमों में रोजगार प्राप्त कर सकता है|

शिक्षक

किसी हिंदी भाषा प्रशिक्षक के लिए अध्यापन एक अच्छा विकल्प है, क्योंकि भारत सरकार के राजभाषा विभाग ने केन्द्रीय कार्यालयों तथा अधीनस्थ कार्यालयों के कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने के लिए हिंदी प्राध्यापकों कों तैनात किया है, ताकि वहाँ पर राजभाषा नीति का सुचारू कार्यान्वयन किया जा सके | इसके अलावा हिंदी भाषा प्रशिक्षक विद्यालयों, विश्वविद्यालयों में भी रोजगार प्राप्त कर सकते हैं और निजी कोचिंग चला कर भी अच्छी खासी आमदनी कर सकते हैं, क्योंकि आजकल राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का डंका बज रहा है |

संपादक

हिंदी भाषा स्नातकों के लिए संपादन एक अच्छा विकल्प हो सकता है | संपादन कार्य में विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए नए स्नातकों को लिखित भाषा, शब्द प्रयोग तथा वाक्य विन्यास में विशिष्ट प्रशिक्षण लेने की जरूरत होती है |

कोई भी हिंदी भाषा प्रशिक्षक उन्हें इन संबंधित क्षेत्रों में प्रशिक्षित कर सकता है | विशिष्ट प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद कोई भी उम्मीदवार किसी भी संपादन संस्था में कोई रोजगार प्राप्त कर सकता है | कार्यालय प्रलेखों के संपादन के लिए व्यवसाय जगत को भी ऐसे विशेषज्ञ संपादकों की अत्यधिक आवश्यकता होती है |

शिक्षा

यद्यपि अनेक ऐसे विश्वविद्यालय तथा कॉलेज हैं जो हिंदी भाषा में डिग्री प्रदान करते हैं | हिंदी भाषा में डिग्री प्रदान करने वाले कुछ प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय निम्नलिखित हैं :-

- ✓ महत्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
- ✓ बनारस हिंदी विश्वविद्यालय, वाराणसी
- ✓ जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली
- ✓ दिल्ली विश्वविद्यालय,
- ✓ आगरा विश्वविद्यालय,

तैनाती

हिंदी भाषा में मास्टर डिग्री प्राप्त करने के बाद कोई भी व्यक्ति किसी सरकारी एवं निजी संगठन, शैक्षिक संस्थान में रोजगार प्राप्त कर सकता है या अपना निजी प्रशिक्षण केन्द्र चला सकता है | प्रारंभ में प्रशिक्षक रु. 10000 से रु. 20000 प्रति माह कमा सकता है और बाद के वर्षों में यह राशि बढ़ती चली जाती है |

***

भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान, रांची के विशिष्ट शोध

लाख अनुसंधान के कुछ पहलू

लाख कीटों में परजीवी प्रकोप की आण्विक पहचान

अप्रैल के प्रथम सप्ताह में *कुसमी* पीली गरमा फसलें में सम्पूर्ण मरणशीलता देखी गई। सूक्ष्मदर्शी से नमूनों की जॉच से पता चलता है कि 57.5 प्रतिशत लाख कोशिकाएं परजीवियों (ज्यादातार *एग्प्रोस्टोसेंटस परप्यूरियस*) से प्रभावित है तथा 41.5 प्रतिशत कोशिकाएं या तो खाली है या उसमें मृत/आधा खाया हुआ लाख कीट है। मृत कुसमी पीला लाख कीट से जीनोम डी एन ए का पृथ्थकरण किया गया। लाख कीट परजीवियों से ग्रस्त है या नहीं इसकी जॉच के लिए *ए परप्यूरियस* विशिष्ट प्रारंभक परजीवी के साथ पी सी आर किया गया। अभिक्रिया मिश्रण में बिना डी एन ए के नकारात्मक नियंत्रण भी किया गया। लाख कीट के जीनोमिक डी एन ए के समय पी ए आर से 500 बी पी उत्पाद की उपज हुई जो *ए परप्यूरियस* के लिए विशेष है। हालांकि नकारात्मक नियंत्रण में उत्पाद नहीं देखा गया। इससे पता चलता है कि मृत *कुसमी* लाख कीट *ए परप्यूरियस* से ग्रसित थे।

जीन बैंक में जीन श्रृंखला का समावेशन

जीन बैंक में दा श्रृंखला (लाख कीट परजीवियों *परप्यूरियस* एवं *टेकार्डफेगस टेकार्डी* का आंशिक 185 आर आर एन ए) का समावेश किया गया। *ए परप्यूरियस* एवं *टी टेकार्डी* 185 आर एन ए श्रृंखला की क्रम संख्या जे क्यू 359003 एवं जे क्यू 359004 है।

लाख से जुड़े जन्तुओं का परिपालक से संबंधित भिन्नता

ग्रीष्मकालीन (जेठवी 2012) फसल के दौरान संस्थान अनुसंधान प्रक्षेत्र से *बेर, सेमियालता* एवं *कुसुम* के एक मीटर लम्बी लाख लगी टहनी का नमूना एकत्र किया गया एवं लाख से जुड़े शत्रुकीटों की आबादी को रिकार्ड करने के लिए जाली में रखा गया। यह देखा गया कि लाख परिपालक पौधों के बीच परजीवी एवं परभक्षियों में भिन्नता थी। अगस्त महीने में *बेर* एवं *कुसुम* में *ए परप्यूरियस* (61) तथा *टी.टेकार्डी* (53), क्रमशः अधिक थे एवं *यूब्लीमा एमाबिलीस* (24) *सेमियालता* में अधिक थे।

लाख परिपालक पौधों के जैवरासायनिक स्वरूप पर जलवायु का प्रभाव

पश्चिम बंगाल एवं झारखंड में परिपालकों में बेर के मामले में लाख कीटों के रस चूसने की सक्रियता वाले चरण में पत्तियों के विश्लेषण से पता चलता है कि लाख संचारण के कारण पत्तियों में प्रोटीन अंश में उल्लेखनीय कमी आती है। *पलास* में असंचारित एवं संचारित पौधों के बीच प्रोटीन अंश के संबंध में कोई उल्लेखनीय भिन्नता नहीं देखी गई। दोनों राज्यों में *बेर* एवं *पलास* दोनों में मार्च के दौरान प्रोटीन अंश का स्तर अधिकतम रहा। *बेर* के मामले में जाड़े की अवधि (दिसम्बर–जनवरी) में ऑक्सीकारक दबाव ज्यादा देखा गया। पलास के मामले में एम डी अंश में कमी और वृद्धि का इसी तरह का रूझान देखा गया। *बेर* एवं *पलास* दोनों के मामले में संचारित पौधों में प्रोलाइन अंश उल्लेखनीय रूप से ऊच्चतर था। झारखंड में *बेर* में जनवरी माह से ही भिन्नता दिख रही थी। जबकि प. बंगाल के बेर के मामले में फरवरी माह से समान भिन्नता देखी गई। *पलास* में लाख संचारण के कारण प्रोलाइन में वृद्धि फरवरी से देखी गई तथा मई तक जारी रही।

लाख कीट कोशिकाओं का परखनली में संवर्द्धन

परखनली में संवर्द्धन के लिए ऊत्तकों को परिपक्व मादा कीटों के अंडाशयों से लिया गया। उन्हें विभिन्न माध्यमों जैसे एम एम माध्यम, ग्रेस माध्यम, टी एन एम–एफ एच माध्यम, स्नीडर माध्यम में संवर्द्धन किया गया। अबाद में होने वाले संक्रमण से बचाव के लिए मीडिया में प्रतिजैविक एवं प्रतिमाइकोटिक घोल प्रतिपूरक का उपयोग किया गया। बीज निकलने के बाद 3–4 दिनों में कोशिकाओं का आसंजन समाप्त हो गया जो अधिकतम एक सप्ताह तक रहता है। स्नीडर माध्यम में दो महीने रखने के बाद कोशिकाओं का आसंजन एवं बहुजनन का प्रेक्षण किया गया। बहुजनित कोशिकाओं के उप संवर्द्धन का प्रयास (I) कोशिकाओं को धूलकर (II) ट्रिप्सीन उपचार एवं (III) सेल स्कैपर्स से कोशिकाओं को खरोंचकर किया गया। कोशिकाओं को सेल स्कैपर्स के द्वारा ही अलग करना संभव हो सका तथा अलग की गई कोशिकाओं को ताजा माध्यम के साथ नये संवर्द्ध बेसल में बीज के रूप में दिया गया। कोशिकाएं द्वितीय पैसेज में है।

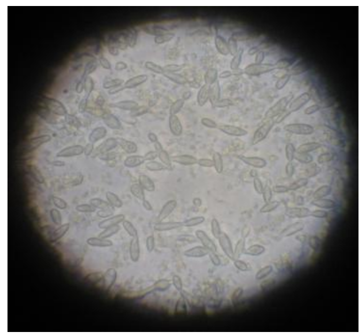

कोशिकाओं का संवर्द्धन

बेर (*जीजीफस मौरीसीयाना*) का जैव रासायनिक विश्लेषण

संस्थान अनुसंधान प्रक्षेत्र से बेर के बीस उन्नत वृक्षों पर *कुसमी* (अगहनी फसल) के लिए मूल्यांकन किया गया। पत्तियों का जैव रासायनिक विश्लेषण किया गया तथा प्रत्येक किस्म में संचारित बनाम नियंत्रण का विश्लेषण किया गया। इन किस्मों में पत्तियों में कुल शर्करा एवं कम होता शर्करा में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। *बेर* की किस्मों में संचालित पत्तियों में औसत कुल शर्करा में अंतर 27.3 से 80.3 रहा एवं नियंत्रण में वजन 37.4 से 86.5 मि.ग्रा./ग्रा. था, जबकि संचारित में औसत घटता हुआ शर्करा 6.1 से 17.3 एवं नियंत्रण में 3.6 से 16.4 मि.ग्रा./ग्रा. वजन पाया गया। सामान्य तथा जेड जी 3 एवं एल इ बी किस्मों के अपवाद को छोड़कर संचारित पौधों की तुलना में नियंत्रण में कुल शर्करा ज्यादा था। संचारित पौधों में शर्करा में कमी से लाख कीटों की वृद्धि एवं विकास में शर्करा (कार्बोहाइट्रेड) की भूमिका का पता चलता है।

स्टार्कुलिया यूरेन्स से गोंद का निष्कर्षण

रॉची से लगभग 25 कि.मी. की दूरी पर स्थित तैमारा घाटी में *स्टार्कुलिया यूरेन्स* (स्थानीय नाम–*कराया* वृक्ष) पर अर्द्धवृताकरी कटाई (व्यास–150 मि.मी.) एवं गोंद आकृत करने की प्रौद्योगिकी (वृक्ष के धड़ में जमीन से एक मीटर उपर 15 मि.मी. व्यास के 100 मि.मी. गहरे छेद में 4 मि.मी. इथेफोन का प्रयोग) कर गोंद के वैज्ञानिक निष्कर्षण का प्रायोगिक परीक्षण किया गया। *एस.यूरेन्स* का कटाई की तुलना में उत्प्रेरण बेहतर रहा क्योंकि उत्प्रेरण से वहिस्त्राव लगभग 03 गुणा ज्यादा था। कराया गोंद के कुल संग्रह में तीन वृक्षों से 1.72 कि.ग्रा. कटाई से तथा चार वृक्षों से उत्प्रेरण द्वारा 5.20 कि.ग्रा. का संग्रह किया गया। उत्प्रेरण से संग्रह किया गया गोंद हल्के रंग का था तथा यह तकनीक वृक्षों के लिए कम हानिकारक थी।

अर्ध वृत्ताकार ब्लेजिंग

गम इंडयूसर प्रौद्योगिकी

टैमेरिंड करनेल पावडर (टीकेपी) के शुद्धिकरण की विधि में सुधार (टीकेपी)

टी के पी के शुद्धिकरण के लिए वैकल्पित विधि विकसित की गई। विकसित विधि में एसिटोन निष्कर्षण द्वारा घुलनशील कार्बनिक अशुद्धियों को हटा दिया गया है। छनी शुष्क सामग्री आसवित जल में घुल गई तथा उसे हिलाया गया। आस्थगित अघुलनशील अवयवों को हटाने के लिए प्राप्त साफ घोल का अपकेन्द्रण किया गया। टी के पी (*जाइकलोग्लूकैन*) से सफेद रंग का मृदु जल में घुलनशील *पॉलीसेकेराइडस* प्राप्त करने के लिए अधिप्लवी घोल को निथार कर अलग किया गया एवं फ्रिज में शुष्क किया गया। इस विधि से पुरानी चली आ रही विधि 20 प्रतिशत की तुलना में 70–75 प्रतिशत उत्पादन हुआ तथा समय आधा से भी कम लगा। इस विधि में कच्चे टी के पी के सांपेक्षित रूप से सांद्रित घोल का उपयोग किया जाता है अतः कई प्रतिक्रियाएं कम की जा सकती है।

लाख मोम–मूल्यवान *ऑक्टैकोसैनौल* का आशाजनक स्त्रोत

लाख मोम *ऑक्टैकोसैनौल ट्राइएकोन्टानौल* एवं *डॉट्रीएकॉन्टानौल* जैसे *पॉलीकोलैनौल* का अच्छा स्त्रोत है। फैटी अल्कोहल की एक लम्बी श्रृंखला *ऑक्टैकोसैनौल* (अणुभार 410.74) लाख मोम का एक महत्वपूर्ण सक्रिय घटक है, जबकि *ट्राइअकॉन्टानौल* उत्कृष्ठ पौध वृद्धि प्रोत्साहन गतिविधि प्रदर्शित करता है। *ऑक्टैकोसैनौल* अपने उल्लेखनीय *फाइटोस्यूटिकल* गुणों के लिए जाना जाता है। लाख मोम के *पॉलीकोसैनौल* (अल्कोहलिक फ्रैक्शन) के

महत्वपूर्ण अवयवों का जी सी–एम एस विश्लेषण किया गया। उपरोक्त विश्लेषण से पता चलता है कि *पॉलीकोसैनौल, ऑक्टैकोसैनौल, ट्राइअकॉन्टानौल* एवं *डॉट्रीएकॉन्टानौल* का अनुपात क्रमशः 62.6,23.99 एवं 11.74 है।

मोरींगा ओलीफेरा से गोंद के निष्कर्षण की वैज्ञानिक तकनीक

इन्डयूसर प्रौद्योगिकी अपनाकर *मोरींगा ओलीफेरा* से गोंद के निष्कर्षण की वैज्ञानिक तरीके का परीक्षण किया गया, जिसके अन्तर्गत वृक्ष के तना में जमीन से एक मीटर उपर 100 मि.मी. गहराई एवं 15 मि.मी. व्यास वाले छेद में इथेफोन प्रवेश कराया गया। परीक्षण अक्तूबर 2012 में शुरू किया गया तथा चार महीने के अन्दर जनवरी 2013 में 01 कि. ग्रा. मोरींगा गोंद एकत्र किया गया। एकत्र किये गए गोंद की गुणवत्ता अच्छी थी अन्य गोंद जैसे कराया गोंद, अरबी गोंद इत्यादि के निष्कर्षण के लिए अपनायी जाने वाली ब्लेज विधि की तुलना में यह तकनीक वृक्ष को कम हानि पहुंचाती है।

गोंद का निष्कर्षण

—————————

भारत सरकार

GOVERNMENT OF INDIA

2014-15

संघ का राजकीय कार्य हिंदी में करने के लिए

वार्षिक कार्यक्रम

ANNUAL PROGRAMME

FOR TRANSACTING THE OFFICIAL WORK OF THE UNION IN HINDI

गृह मंत्रालय

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

राजभाषा विभाग

DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE

www.rajbhasha.gov.in

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	प्राक्कथन	1-3
2.	राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेश	4-7
3.	हिन्दी के प्रयोग के लिए वर्ष 2014-15 का वार्षिक कार्यक्रम	8-10

प्राक्कथन

दिनांक 18 जनवरी, 1968 को संसद के दोनों सदनों द्वारा पारित राजभाषा संकल्प में यह व्यक्त किया गया है कि :

"यह सभा संकल्प करती है कि हिंदी के प्रसार एवं विकास की गति बढ़ाने हेतु तथा संघ के विभिन्न राजकीय प्रयोजनों के लिए उत्तरोत्तर इसके प्रयोग हेतु भारत सरकार द्वारा एक अधिक गहन एवं व्यापक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा और उसे कार्यान्वित किया जाएगा और किए जाने वाले उपायों एवं की जाने वाली प्रगति की विस्तृत वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट संसद के दोनों सदनों के पटल पर रखी जाएगी.........."

उक्त संकल्प के उपबंधों के अनुसार केंद्र सरकार के कार्यालयों और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों/उपक्रमों द्वारा कार्यान्वयन के लिए राजभाषा हिंदी के प्रसार और प्रगामी प्रयोग के लिए वार्षिक कार्यक्रम तैयार किया जाता है। इसके लिए हिंदी बोले जाने और लिखे जाने की प्रधानता के आधार पर जिन तीन क्षेत्रों के रूप में देश के राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को चिह्नित किया गया है, की भौगोलिक स्थिति को ध्यान में रखा जाता है। वर्ष 2014-15 का वार्षिक कार्यक्रम इसी क्रम में जारी किया जा रहा है । इन तीनों क्षेत्रों, यथा - 'क','ख' और 'ग' का विवरण इस प्रकार है:-

क्षेत्र	क्षेत्र में शामिल राज्य/संघ राज्य क्षेत्र
क	बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड राज्य और अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली, संघ राज्य क्षेत्र
ख	गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमन और दीव तथा दादरा व नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र
ग	'क' और 'ख' क्षेत्र में शामिल नहीं किए गए अन्य सभी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र

सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रगामी प्रयोग के क्षेत्र में प्रगति हुई है, किंतु अब भी लक्ष्य प्राप्त नहीं किए जा सके । सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग बढ़ा है किंतु अभी भी बहुत-सा काम अंग्रेजी में हो रहा है। लक्ष्य यह है कि सरकारी कामकाज में मूलत: हिंदी का प्रयोग हो । यही संविधान की मूल भावना के अनुरूप होगा। कहने की आवश्यकता नहीं कि जनता की भाषा में सरकारी कामकाज करने से विकास की गति तेज होगी और प्रशासन में पारदर्शिता आएगी।

वर्तमान युग में कोई भी भाषा वैज्ञानिक, सूचना प्रौद्योगिकी तथा तकनीकी विषयों से जुड़े बिना नहीं पनप सकती । इसलिए सभी मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/उपक्रमों में वैज्ञानिक, सूचना प्रौद्योगिकी तथा तकनीकी विषयों में हिंदी के प्रयोग को अधिक से अधिक बढ़ाने की आवश्यकता है । राजभाषा हिंदी का शब्दकोश बहुत व्यापक है तथा यह वैज्ञानिक, सूचना प्रौद्योगिकी तथा तकनीकी विषयों को समाहित करने में समर्थ है । व्यावहारिक रूप से अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करने के लिए भाषा को सरल एवं सहज रूप में लिखा जाए ताकि आम जनता को वैज्ञानिक तथा तकनीकी विषयों के बारे में पर्याप्त रूप से जानकारी प्राप्त हो सके । जैसा कि यह सुस्पष्ट है कि वर्तमान समय में लगभग सभी मंत्रालयों/विभागों/ केंद्रीय कार्यालयों/उपक्रमों में कम्प्यूटर, ई-मेल, वेबसाइट सहित सूचना प्रौद्योगिकी सुविधाएं उपलब्ध होने से वैज्ञानिक तथा तकनीकी विषयों में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करना और भी आसान हो गया है ।

वार्षिक कार्यक्रम के संबंध में निम्नलिखित बिंदु विशेष रूप से विचारणीय हैं:-

- यह जरूरी है कि संसदीय राजभाषा समिति की रिपोर्ट के आठ खंडों पर जारी किए गए राष्ट्रपति के आदेशों का मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों द्वारा अनुपालन किया जाए ।
- कम्प्यूटर ई-मेल, वेबसाइट, सहित उपलब्ध सूचना प्रौद्योगिकी सुविधाओं का अधिक से अधिक उपयोग करते हुए हिंदी में काम को बढ़ाया जाए ।
- संबंधित विभाग वैज्ञानिक व तकनीकी साहित्य हिंदी में छपवाकर उसे जनसाधारण के उपयोग हेतु उपलब्ध करवाने के लिए आवश्यक उपाय करें।
- हिन्दी शिक्षण योजना कैलेंडर वर्ष 2015 में समाप्त किया जाना प्रस्तावित है, इसलिए हिंदी, हिंदी टंकण/आशुलिपि संबंधी प्रशिक्षण कार्य में तीव्रता लाएं और सभी संबंधितों को प्रशिक्षण दिलवाने का कार्य समय-सीमा में पूर्ण करें ताकि तत्संबंधी लक्ष्यों को निर्धारित समय-सीमा में प्राप्त किया जा सके ।
- राजभाषा कार्य से संबंधित अधिकारियों को विभाग के समस्त कार्यकलापों से परिचित कराया जाना आवश्यक है, जिससे कि वे अपने दायित्व अच्छी तरह निभा पाएं ।
- मंत्रालय/विभाग/कार्यालय अपने विषयों से संबंधित संगोष्ठियां हिंदी माध्यम में आयोजित करें ।
- प्रशिक्षण हेतु अधिक से अधिक अधिकारी/कर्मचारी नामित किए जाएं तथा संबंधित अधिकारियों द्वारा व राजभाषा विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों (उ.स/नि./सं.स.) द्वारा केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया जाए ।
- मंत्रालय/विभाग अपने यहां हिंदी सलाहकार समितियों का गठन/पुनर्गठन अविलंब करते हुए उनकी बैठक नियमित आधार पर सुनिश्चित करें । बैठक में लिए गए निर्णय का पूरी तरह अनुपालन किया जाए ।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों (नराकास) की बैठकों का नियमित आधार पर आयोजन किया जाए तथा इनमें राजभाषा विभाग के वरिष्ठ अधिकारी (उ.स/नि./सं.स.) भी समय-समय पर भाग लें।

- संघ की राजभाषा नीति का आधार प्रेरणा और प्रोत्साहन है, किंतु राजभाषा संबंधी अनुदेशों का अनुपालन दृढ़तापूर्वक किया जाना चाहिए । जानबूझकर राजभाषा संबंधी आदेशों की अवहेलना के लिए मंत्रालय/विभाग अनुशासनात्मक कार्रवाई करने पर विचार कर सकते हैं ।
- मंत्रालयों/विभागों दवारा सूचना प्रौदयोगिकी प्रणाली के विकास पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। शत प्रतिशत कम्प्यूटरों में हिन्दी में काम करने की सुविधा विकसित की जाए तथा अंतर मंत्रालयी/ अंतर विभागीय पत्राचारों के साथ साथ निजी पार्टियों के साथ किए जाने वाले पत्राचारों में ई-मेल/इलेक्ट्रॉनिक संदेशों आदि में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया जाए।
- तिमाही प्रगति रिपोर्ट और वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट प्राप्त करने हेतु राजभाषा विभाग ने एक वेब आधारित ऑनलाइन सिस्टम विकसित करवाया है । केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों से अपेक्षित है कि आगे से सभी रिपोर्ट राजभाषा विभाग को उपरोक्त ऑनलाइन सिस्टम के माध्यम से ही भेजें । यह सिस्टम विभाग की वेबसाइट **www.rajbhasha.nic.in** पर उपलब्ध है ।

राजभाषा विभाग सभी केंद्रीय मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों एवं केंद्रीय उपक्रमों से समस्त कार्यपालिका को राजभाषा प्रयोग संबंधी सौंपे गए संवैधानिक और सांविधिक दायित्वों के निष्पादन में और वर्ष 2014-15 के वार्षिक कार्यक्रम में उल्लिखित लक्ष्यों की पूर्ति की दिशा में अभीष्ट व स्वैच्छिक समर्थन की आशा और अपेक्षा करता है ।

मार्च, 2014

गृह राज्य मंत्री(एस)
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेश

1. राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक व अन्य रिपोर्टें प्रेस विज्ञप्तियां, संसद के किसी सदन या दोनों सदनों के समक्ष रखी जाने वाले प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्टें सरकारी कागजात, संविदा, करार, अनुज्ञप्तियां, अनुज्ञापत्र, निविदा सूचनाएं और निविदा - प्ररूप द्विभाषिक रूप में, अंग्रेजी और हिंदी दोनों में जारी किए जाएं । किसी प्रकार के उल्लंघन के लिए हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी को जिम्मेदार ठहराया जाएगा ।

2. अधीनस्थ सेवाओं की भर्ती परीक्षाओं में अंग्रेजी के अनिवार्य प्रश्न पत्र को छोड़कर शेष विषयों के प्रश्न पत्रों के उत्तर हिंदी में भी देने की छूट दी जाए और ऐसे प्रश्न पत्र अंग्रेजी तथा हिंदी दोनों भाषाओं में उपलब्ध कराए जाएं । साक्षात्कार में भी वार्तालाप में हिंदी माध्यम की उपलब्धता अनिवार्य रूप से रहनी चाहिए ।

केंद्र सरकार के सभी मंत्रालयों, विभागों तथा उनसे संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों तथा केंद्र सरकार के स्वामित्व में या नियंत्रणाधीन निगमों, उपक्रमों, बैंकों आदि में सभी सेवाकालीन विभागीय तथा पदोन्नति परीक्षाओं में (अखिल भारतीय स्तर की परीक्षाओं सहित)अभ्यर्थियों को प्रश्न पत्रों के उत्तर हिंदी में भी देने की छूट दी जाए । प्रश्न पत्र अनिवार्यत: दोनों भाषाओं (हिंदी और अंग्रेजी) में तैयार कराए जाएं । जहां साक्षात्कार लिया जाना हो, वहां भी प्रश्नों के उत्तर हिंदी में देने की छूट दी जाए ।

3. सभी प्रकार की वैज्ञानिक/तकनीकी संगोष्ठियों तथा परिचर्चाओं आदि में वैज्ञानिकों आदि को राजभाषा हिंदी में शोध पत्र पढ़ने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया जाए । उक्त शोध पत्र संबद्ध मंत्रालय/विभाग/कार्यालय आदि के मुख्य विषय से संबंधित होने चाहिएं ।

4. 'क' तथा 'ख' क्षेत्रों में सभी प्रकार का प्रशिक्षण, चाहे वह अल्पावधि का हो अथवा दीर्घावधि का, सामान्यत: हिंदी माध्यम से होना चाहिए । 'ग' क्षेत्र में प्रशिक्षण देने के लिए प्रशिक्षण सामग्री हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कराई जाए और प्रशिक्षणार्थी की मांग के अनुसार हिंदी या अंग्रेजी में उपलब्ध कराई जाए ।

5. केंद्र सरकार के कार्यालयों में जब तक हिंदी टंकक व हिंदी आशुलिपिक संबंधी निर्धारित लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लिए जाते, तब तक उनमें केवल हिंदी व हिंदी आशुलिपिक ही भर्ती किए जाएं ।

6. अंतर्राष्ट्रीय संधियों और करारों को अनिवार्य रूप से हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कराया जाए । विदेशों में निष्पादित संधियों और करारों के प्रामाणिक अनुवाद तैयार कराके रिकॉर्ड के लिए फाइल में रखे जाएं ।

7. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 10 (4) के अंतर्गत अधिसूचित बैंकों की शाखाओं में निम्नलिखित कार्य हिंदी में किए जाएं-

ग्राहकों द्वारा हिंदी में भरे गए आवेदनों और ग्राहकों की सहमति से अंग्रेजी में भरे गए आवेदनों पर जारी किए जाने वाले मांग ड्राफ्ट, भुगतान आदेश, क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, सभी प्रकार की सूचियां, विवरणियां,सावधि जमा रसीदें, चैक बुक संबंधी पत्र आदि, दैनिक बही, मस्टर, प्रेषण बही, पास बुक, लॉग बुक में प्रविष्टियां, प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र, सुरक्षा ग्राहक सेवा संबंधी कार्य, नये खाते खोलना, लिफाफों पर पते लिखना, कर्मचारियों के यात्रा भत्ते, अवकाश, भविष्य निधि, आवास निर्माण अग्रिम, चिकित्सा संबंधी कार्य, बैठकों की कार्यसूची कार्यवृत्त आदि ।

8. विदेश स्थित भारतीय कार्यालयों सहित सभी मंत्रालयों/विभागों आदि की लेखन सामग्री, नाम पट्ट, सूचना पट्ट, फार्म प्रक्रिया संबंधी साहित्य, रबड़ की मोहरें, निमंत्रण पत्र आदि अनिवार्य रूप से हिंदी-अंग्रेजी में बनवाए जाएं ।

9. भारत सरकार के मंत्रालयों, कार्यालयों, विभागों, बैंको, उपक्रमों आदि द्वारा असांविधिक प्रक्रिया साहित्य जैसे नियम, कोड, मैनुअल, मानक फार्म आदि को अनुवाद कराने के लिए केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो को भेजा जाए ।

10. अनुवाद कार्य तथा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो में अनिवार्य अनुवाद प्रशिक्षण हेतु नामित किया जाए । ऐसे अधिकारियों/कर्मचारियों को भी अनुवाद के प्रशिक्षण पर नामित किया जा सकता है, जिन्हें स्नातक स्तर पर हिंदी-अंग्रेजी दोनों भाषाओं का ज्ञान हो तथा जिनकी सेवाओं का उपयोग कार्यालय द्वारा इस कार्य के लिए किया जा सकता है ।

11. भारतीय प्रशासनिक सेवा और अन्य अखिल भारतीय सेवा के अधिकारियों के लिए लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी में प्रशिक्षण के दौरान हिंदी भाषा का प्रशिक्षण अनिवार्य रूय से दिया जाता है, ताकि सरकारी कामकाज में वे इसका प्रयोग कर सकें । तथापि, अधिकांश अधिकारी सेवा में आने के पश्चात सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग नहीं करते । इससे अनेक अधीन कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों में सही संदेश नहीं जाता । परिणामस्वरूप, सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग नहीं करते । इससे उनके अधीन कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों में सही संदेश नहीं जाता । परिणामस्वरूप, सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग अपेक्षित मात्रा में नहीं हो पाता । मंत्रालयों/विभागों/ कार्यालयों/उपक्रमों आदि के वरिष्ठ अधिकारियों का यह संवैधानिक दायित्व है कि वह अपने सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करें । इससे उनके अधीन कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रेरणा मिलेगी तथा राजभाषा नीति के अनुपालन में गति मिलेगी ।

12. सभी मंत्रालय/विभाग आदि हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए चलाई गई विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं का अपने संबद्ध एवं अधीनस्थ कार्यालयों में भी व्यापक प्रचार-प्रसार करें ताकि अधिक से अधिक अधिकारी/कर्मचारी इन योजनाओं का लाभ उठा सकें और सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में हो ।

13. तिमाही प्रगति रिपोर्ट ऑनलाइन सिस्टम द्वारा प्रत्येक तिमाही की समाप्ति के अगले माह की 15 तारीख तक राजभाषा विभाग को उपलब्ध करा दी जाए ।

14. सरकार की राजभाषा नीति के प्रति अधिकारियों/कर्मचारियों को सुग्राही बनाने की दृष्टि से यह आवश्यक है कि सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में हुई प्रगति की समीक्षा को मात्र राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों तक ही सीमित न रखा जाए । इस संबंध में मॉनीटरिंग को और अधिक प्रभावी और कारगर बनाने के लिए यह जरूरी है कि मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों के प्रशासनिक प्रधानों द्वारा ली जाने वाली प्रत्येक बैठक में इस पर नियमित रूप से विस्तृत चर्चा की जाए और इसे कार्यसूची की एक स्थायी मद के रूप में शामिल किया जाए ।

15. प्रशिक्षण और कार्यशालाओं सहित राजभाषा हिंदी संबंधी कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों को कार्यालय में बैठने के लिए अच्छा व समुचित स्थान भी उपलब्ध कराया जाए ताकि वे अपने दायित्वों का निर्वाह ठीक तरह से कर सकें ।

16. राजभाषा विभाग द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मंत्रालय/विभाग/कार्यालय आदि नियमित रूप से अपने कर्मचारियों को नामित करें और नामित कर्मचारियों को निदेश दें कि वे नियमित रूप से कक्षाओं में उपस्थित रहें, पूरी तत्परता से प्रशिक्षण प्राप्त करें तथा परीक्षाओं में बैठें/प्रशिक्षण को बीच में छोड़ने या परीक्षाओं में न बैठने वाले मामलों को कड़ाई से निपटा जाए ।

17. अनुवादकों को सहायक साहित्य,मानक शब्दकोश (अंग्रेजी-हिंदी व हिंदी-अंग्रेजी) तथा अन्य तकनीकी शब्दावलियां उपलब्ध कराई जाएं ताकि वे अनुवाद कार्य में इनका उपयोग करें ।

18. सभी मंत्रालय/विभाग/कार्यालय आदि हिंदी में प्रशिक्षण के लिए नामित अधिकारियों/कर्मचारियों के लाभ के लिए 'लीला हिंदी प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ' आदि सॉफ्टवेयर के उपयोग के लिए कम्प्यूटर की सुविधा उपलब्ध करवाएं ।

19. सभी मंत्रालय/विभाग/कार्यालय आदि अपने-अपने दायित्वों से संबंधित विषयों पर हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन को प्रोत्साहित करने तथा अपने विषयों से संबंधित शब्द भंडार को समृद्ध करने के लिए आवश्यक कदम उठाएं ।

20. सभी मंत्रालय/विभाग/कार्यालय आदि अपने केंद्रीय सेवाओं के प्रशिक्षण संस्थानों में राजभाषा हिंदी में प्रशिक्षण की व्यवस्था उसी स्तर पर करें जिस स्तर पर लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी में कराई जाती है और अपने विषयों से संबंधित साहित्य का सृजन करवाएं जिससे प्रशिक्षण के बाद अधिकारी अपने कामकाज सुविधापूर्वक राजभाषा हिंदी में कर सकें ।

21. सभी मंत्रालय/विभाग/कार्यालय/संस्थान आदि अपने कार्यालय में हिंदी में कार्य का माहौल तैयार करने के लिए हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन कर रहे हैं । इन पत्रिकाओं में विशेषकर उक्त कार्यालय के सामान्य कार्यों तथा राजभाषा हिंदी से संबंधित आलेख प्रकाशित किए जाएं ।

22. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की छमाही बैठकों में सदस्य कार्यालय के प्रशासनिक प्रमुख अनिवार्य रूप से भाग लें ।

23. सभी मंत्रालय विभाग अपने संबद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों के बारे में वर्ष 2013-14 के वार्षिक कार्यक्रम से संबंधित समेकित अनुपालन रिपोर्ट राजभाषा विभाग को 31 मई, 2014 तक भिजवाना सुनिश्चित करें।

24. सभी मंत्रालय/विभाग/कार्यालय आदि 'लीला' अर्थात लर्निंग इंडियन लैंग्वेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के उपयोग के लिए कम्प्यूटर सुविधा उपलबध कराएं ।

25. कम्प्यूटर पर हिंदी प्रयोग के लिए केवल यूनिकोड एनकोडिंग का प्रयोग किया जाए ।

<u>अनुबंध-क</u>

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2014-15 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं. कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.हिंदी में मूल पत्राचार (तार, बेतार, टेलेक्स, फैक्स, आरेख, ई-मेल आदि सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 65% 4.क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 100% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4.ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 100% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4.ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के 85% राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
2. हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3. हिंदी में टिप्पण*	75%	50%	30%
4. हिंदी टंकक,आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
5. हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
6. हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
7. द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
8 जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोडकर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजीटल वस्तुओं अर्थात हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पेन ड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय	50%	50%	50%
9. कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद	100%	100%	100%
10. वेबसाइट	100%(द्विभाषी)	100%(द्विभाषी)	100%(द्विभाषी)
11. नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन	100%(द्विभाषी)	100%(द्विभाषी)	100%(द्विभाषी)

12.(I)	मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
(II)	मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
(III)	विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		

13. राजभाषा संबंधी बैठकें

(क) हिंदी सलाहकार समिति	वर्ष में 02 बैठकें (न्यूनतम)
(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 02 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)
(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 04 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)

14.	कोड,मैनुअल,फार्म,प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%

		"क " क्षेत्र	"ख " क्षेत्र	"ग " क्षेत्र
15.	मंत्रालय/विभाग/कार्यालय/बैंक/उपक्रमों के के ऐसे अनुभाग जहां सारा कार्य हिंदी में हो	40%	30%	20%

(न्यूनतम अनुभाग)

सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/ निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं हो, में "क " क्षेत्र में कुल कार्यक्षेत्र का **40%** "ख " क्षेत्र में **25%** और "ग " क्षेत्र में **15%** कार्य हिन्दी में किया जाए ।

विदेशों में स्थित भारतीय कार्यालयों के लिए कार्यक्रम

(क) हिंदी में पत्राचार	30%
(ख) वर्ष के दौरान नराकास की आयोजित की जाने वाली बैठकों की संख्या (नराकास का गठन किसी नगर में 10 कार्यालयों की उपस्थिति की दशा में किया जाए)	वर्ष में न्यूनतम 02 बैठकें
(ग) यूनीकोड समर्थित द्विभाषी कंप्यूटरों की उपलब्धता	100%
(घ) हिंदी टंकक/आशुलिपिक	प्रत्येक कार्यालय में कम से कम एक
(ड़) दुभाषियों की व्यवस्था	प्रत्येक मिशन/दूतावास में स्थानीय भाषा से हिंदी में और हिंदी से स्थानीय भाषा में अनुवाद के लिए दुभाषिए की व्यवस्था की जाए ।